# भाग 1

*(छठी कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक)*


**संपादक**

अनिरुद्ध राय


**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्**

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

**प्रथम संस्करण**
फरवरी 2002 माघ 1923

**पुनर्मुद्रण**
नवम्बर 2002 कार्तिक 1924

**PD 250T MB**



**प्रकाशन सहयोग**

*संपादन* : नरेश यादव
*उत्पादन* : डी. साई प्रसाद
सुबोध श्रीवास्तव
*सज्जा* : डी. के. शेन्डे
*चित्र* : पी. के. सेनगुप्ता
*आवरण* : अमित श्रीवास्तव

**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय**

| | | | |
|---|---|---|---|
| एन सी ई आर टी कैम्पस | 108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे | नवजीवन ट्रस्ट भवन | सी.डब्लू.सी. कैम्पस |
| श्री अरविंद मार्ग | हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज | डाकघर नवजीवन | 32, बी.टी. रोड, सुखचर |
| **नई दिल्ली 110 016** | **बैंगलूर 560 085** | **अहमदाबाद 380 014** | **24 परगना 743 179** |

**रु. 30.00**

एन. सी. ई. आर. टी. वाटर मार्क 70 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, के-5, मालवीय नगर, नई दिल्ली 110 017 द्वारा मुद्रित।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार परिषद् में नए पाठ्यक्रम एवं तदनुरूप नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया था। किंतु शिक्षा सतत विकासशील प्रक्रिया है। इस कारण बदलती हुई परिस्थितियों, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले अद्यतन विकास तथा नवीन शैक्षिक आवश्यकताओं के कारण नए पाठ्यक्रम तथा उसके अनुसार नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अपेक्षित हो जाता है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी समय-समय पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में आवश्यकतानुसार संशोधन एवं परिवर्तन पर बल दिया गया है। इस दृष्टि से परिषद् ने सन् 2000 में 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' का निर्माण किया। इसके आधार पर विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों में संशोधन एवं परिवर्तन किए गए। इस नवनिर्मित पाठ्यक्रम के अनुरूप परिषद् ने नवीन पाठ्यपुस्तकों के प्रणयन का कार्य हाथ में लिया है। इसी क्रम में कक्षा छह के लिए हिंदी की यह नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

(क) पाठ्यसामग्री का चुनाव विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता, रुचि तथा उनकी भाषिक दक्षता के विकास को दृष्टि में रखकर किया गया है। साथ ही पाठों के चयन में जीवन के विविध संदर्भों, नागरिक के मूल कर्तव्यों, केंद्रिक शिक्षाक्रम के घटकों तथा मूल्यपरक विषयों के समावेश पर बल दिया गया है।

(ख) विविधता और रोचकता की दृष्टि से पुस्तक में वर्णनात्मक तथा विचारात्मक निबंध, कहानी, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, एकांकी आदि गद्य की विभिन्न

विधाओं के पाठ सम्मिलित किए गए हैं। पाठों में विषयों की विविधता का विशेष ध्यान रखा गया है। साथ ही प्रकृति-सौंदर्य, देश-प्रेम, नीति तथा कर्तव्य-भावना से संबंधित कविताएँ भी दी गई हैं।

(ग) पाठ में आए हुए तथ्यों, भावों, विचारों, जीवनमूल्यों तथा भाषा एवं शैलीगत विशेषताओं को पूरी तरह उभारने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के अंत में विस्तृत 'प्रश्न-अभ्यास' दिए गए हैं। इनमें 'बोध और विचार' के अंतर्गत दिए गए प्रश्न विद्यार्थियों में पठित वस्तु को समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने में सहायक होंगे। 'भाषा-अध्ययन' के अंतर्गत दिए गए प्रश्न और अभ्यास से विद्यार्थियों को भाषिक तत्त्वों और संरचनाओं को समझने तथा भाषा का प्रभावी प्रयोग करने में सहायता मिलेगी साथ ही उनसे उच्चारण, वर्तनी तथा वाक्य विन्यास संबंधी अशुद्धियाँ भी दूर हो सकेंगी। कविता के पाठों से संबंधित प्रश्न और अभ्यास में बोध और सराहना तथा शिल्पगत विशेषताओं को भी उभारने का प्रयास किया गया है।

नए पाठ्यक्रम में मौखिक भाषा की दक्षता पर विशेष बल दिया गया है। अतः प्रश्न-अभ्यास में मौखिक प्रश्नों को जोड़ा गया है, जिससे विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण और शुद्ध भाषा प्रयोग की दक्षता विकसित हो सके। इससे मौखिक भावाभिव्यक्ति की योग्यता में भी वृद्धि होगी ।

'योग्यता-विस्तार' शीर्षक के अंतर्गत दिए गए क्रियात्मक अभ्यास से विद्यार्थियों की सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की योग्यताओं का विकास हो सकेगा। इसके साथ ही पाठ्य विषयों से संबंधित अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त साहित्य पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होगी और उनकी पठन रुचि का विस्तार होगा।

अंत में 'शब्दार्थ और टिप्पणी' के अंतर्गत पाठ में आए कठिन शब्दों के प्रसंगगत अर्थ बताए गए हैं और उन प्रसंगों, व्यक्तियों, अंतर्कथाओं आदि को स्पष्ट किया गया है जो पाठ के अर्थबोध की दृष्टि से अपेक्षित है।

(घ) पुस्तक के अंत में 'शब्द-कोश' और उसे देखने की विधि दी गई है, जिससे विद्यार्थियों में हिंदी का शब्द-कोश देखने की कुशलता विकसित हो सके। इस शब्द-कोश में 'शब्दार्थ' के अंतर्गत लिए गए कठिन और अपरिचित शब्दों को अकारादि क्रम में रखा गया है। अर्थ देते समय शब्द के प्रसंगगत अर्थ को महत्त्व दिया गया है। आवश्यक स्थानों पर अनेक समानार्थी शब्द भी दे दिए गए हैं। इससे विद्यार्थी मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्दों में अंतर करना और उनमें से उपयुक्त शब्द का चुनाव करना सीख सकेंगे। कोश में शब्द-रचना की प्रक्रिया को समझाने का प्रयत्न किया गया है, ताकि विद्यार्थी इसका उपयोग शुद्ध वर्तनी और रचना आदि का अभ्यास करने के लिए कर सकें।

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, अनुभवी अध्यापकों तथा भाषाशास्त्रियों का सहयोग मिला है, इसके लिए मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। जिन कवियों और लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति दी है, उनके प्रति हम विशेष आभार प्रकट करते हैं।

इस पुस्तक के विषय में अध्यापकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया तथा सुझाव प्राप्त कर हमें प्रसन्नता होगी।

*नई दिल्ली*
दिसंबर 2001

**जगमोहन सिंह राजपूत**
*निदेशक*
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

# गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

मो॰ क॰ गांधी

भारती का पहला भाग आपके हाथ में है। यह छठी कक्षा के लिए मातृभाषा हिंदी की पाठ्यपुस्तक है। इस पुस्तक में ऐसी कहानियाँ, कविताएँ, एकांकी, आत्मकथा, निबंध आदि रखे गए हैं जो आपको रुचिकर लगेंगे। पाठ्यपुस्तक में संकलित पाठों को पढ़ने में आप को आनंद आएगा और आपकी भाषा धीरे-धीरे विकसित होगी।

इस पुस्तक के पठन-पाठन में आपके अध्यापक तो आपकी सहायता करेंगे ही पर इसमें ऐसे अनेक अंश हैं जिन्हें आप अपने आप भी पढ़कर अच्छी तरह समझ सकते हैं। आपकी सहायता के लिए हम कुछ बातें नीचे दे रहे हैं। इन बातों पर ध्यान देकर आप इस पुस्तक से अधिक-से-अधिक लाभ उठा सकेंगे —

(क) भाषा का मूल रूप मौखिक है। जीवन के हर क्षेत्र में बोलने की आवश्यकता पड़ती है और हम अपने अधिकतर कार्य मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा ही पूर्ण करते हैं। बोलना एक कौशल है और उचित अभ्यास से ही इसका विकास होता है। अतः इस पुस्तक के पाठों को घर पर बोलकर पढ़ने का अभ्यास कीजिए। इससे न केवल आपके बोलने का ढंग सुधरेगा अपितु आपको पाठों के विचारों को समझने में भी सहायता मिलेगी और आपकी पठन योग्यता भी बढ़ेगी। बोलने के कौशल के विकास के लिए अपने उच्चारण पर ध्यान दीजिए। आपका उच्चारण न केवल शुद्ध होना चाहिए बल्कि स्पष्ट, सुश्रव्य, भावानुकूल भी होना चाहिए।

(ख) आप पाठों को अच्छे ढंग से बोलकर पढ़ने के साथ-साथ उनका मौन पठन भी कीजिए। मौन पाठ में न तो आपके मुँह से आवाज़ निकलनी चाहिए और न ही होंठ हिलने चाहिए। मौन पठन करने से आप अधिक गति से पढ़ सकेंगे और पाठ के विचारों को भी जल्दी और अधिक अच्छी तरह समझ सकेंगे।

(ग) भाषा शब्दों से बनती है। आप अब तक हिंदी के हज़ारों शब्द जान गए हैं। इस पुस्तक में कुछ नए शब्द आए हैं, जिनका अर्थ आप शायद नहीं जानते होंगे। आपकी सुविधा के लिए पुस्तक के प्रत्येक पाठ के अंत में 'शब्दार्थ और टिप्पणी' दी गई है। साथ ही पुस्तक के अंत में शब्द-कोश भी दिया गया है, जिसमें नए शब्दों के अर्थ दिए गए हैं। अध्यापक आपको इस शब्द-कोश का उपयोग करना सिखाएँगे। इस कोश से अधिक से अधिक लाभ उठाइए। छठी कक्षा पास करते-करते यदि आप इस शब्द-कोश के हर शब्द का अर्थ अच्छी तरह जान लेंगे, उन्हें सही-सही लिख सकेंगे और उन शब्दों का अपनी भाषा में प्रयोग कर सकेंगे तो आपकी भाषा की योग्यता सचमुच बढ़ जाएगी और आपको आगे की कक्षाओं में पढ़ने में बड़ी सुगमता होगी।

(घ) भाषा यद्‌यपि शब्दों से बनती है पर शब्दों पर ही समाप्त नहीं हो जाती है। शब्दों का अर्थ जान लेना ही भाषा-ज्ञान नहीं है। शब्दों के परस्पर संबंध से वाक्य बनते हैं और वाक्यों के परस्पर संबंध से अनुच्छेद। आपको मालूम होना चाहिए कि कोई शब्द या शब्दों का समूह वाक्य में काम कर रहा है। इसके लिए भाषा का विश्लेषण अर्थात् भाषा के विभिन्न पक्षों को अलग-अलग समझना ज़रूरी है। हमने इसके लिए गद्‌य पाठों के अंत में 'भाषा-अध्ययन' शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए हैं। उन अभ्यासों को भली-भाँति समझकर पूरा करने से आपकी भाषा सुधरेगी और आप अपनी बात को अधिक प्रभावशाली ढंग से कह सकेंगे और लिख सकेंगे।

(ङ) लेखक या कवि शब्दों के द्‌वारा कुछ कहना चाहता है। उसके विचारों और भावों को समझने की कोशिश कीजिए। इसके लिए शब्दों में निहित विचारों तक जाने की आवश्यकता है। पढ़ते हुए सोचने का काम जारी रखिए। बिना समझे रटने की कोशिश मत कीजिए। लेखक या कवि की बात को भली प्रकार समझकर उस पर अपने ढंग से विचार कीजिए।

(च) प्रत्येक पाठ के अंत में 'योग्यता-विस्तार' शीर्षक से कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इस प्रकार के अभ्यास पाठों से मिली जानकारी को और समृद्ध और विस्तृत करेंगे। साथ ही ये आपको अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के लिए भी प्रेरित करेंगे। इन अभ्यासों में कई जगह आपसे पाठ के विषय से संबंधित कोई पुस्तक या उसका कोई अंश विशेष पढ़ने के लिए कहा गया है। भाषा-योग्यता बढ़ाने का सबसे अच्छा मंत्र है पढ़ना, पढ़ना और पढ़ना। इसलिए आप पढ़ें, खूब पढ़ें। आपके विद्यालय में पुस्तकालय अवश्य होगा। यदि किसी विषय पर कोई पुस्तक विद्यालय के पुस्तकालय में नहीं है या किसी कारण से वह आपको मिल नहीं सकती तो उसके लिए अपने अध्यापक, पुस्तकालयाध्यक्ष या प्रधानाचार्य से प्रार्थना कीजिए। वे अवश्य ही आपकी माँग पूरी करने का यत्न करेंगे। कुछ अभ्यासों में लेखन-कार्य पर बल दिया गया है। इनके माध्यम से आप अपनी लिखित अभिव्यक्ति को विकसित कर सकेंगे।

(छ) भाषा किसी एक व्यक्ति की संपत्ति नहीं है, वह समाज की उपज है। भाषा पढ़ते समय हमारे अंदर अच्छे सामाजिक गुणों का भी विकास होना चाहिए। इन गुणों में सबसे प्रमुख है—सहयोग की भावना। इसलिए सबके साथ मिलजुल कर सीखिए। आप अकेले जितना सीखेंगे उससे कहीं अधिक औरों के साथ काम करके सीखेंगे। किसी पुस्तक में अच्छी बात पढ़ने पर उसके बारे में अपने साथियों को बताना न भूलें। इसी प्रकार अपनी कठिनाइयाँ बिना झिझक के औरों के सामने रखिए और दूसरों के अनुभवों से सीखिए।

भाषा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और आनंद की प्राप्ति है। हमें विश्वास है कि आप इस पुस्तक के सभी पाठों को लगन से पढ़ेंगे ताकि हिंदी के अध्ययन से आपको ज्ञान भी मिले और उल्लास भी।

1. श्री निरंजन कुमार सिंह, अवकाश प्राप्त रीडर
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग
   एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली
2. डॉ. आनंद प्रकाश व्यास
   अवकाश प्राप्त रीडर, शिक्षा विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
3. डॉ. माणिक गोविंद चतुर्वेदी
   अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
   सूर्यमुखी, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली
4. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रोफ़ेसर
   केंद्रीय हिंदी संस्थान,
   कैलाश कोलोनी, नई दिल्ली
5. डॉ. मान सिंह वर्मा, अध्यक्ष
   हिंदी विभाग, मेरठ कॉलेज
6. श्री रमेश दवे, अवकाश प्राप्त प्राध्यापक
   एस.सी.ई.आर.टी., मध्य प्रदेश, भोपाल
7. श्री लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'
   अवकाश प्राप्त उपनिदेशक
   सूचना एवं जन संपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश
8. श्री प्रभाकर द्विवेदी
   अवकाश प्राप्त मुख्य संपादक
   प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी
9. डॉ. (कुमारी) नीरा नारंग
   वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
10. श्री जमुना राय
    अवकाश प्राप्त सहायक आयुक्त
    केंद्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
11. श्री विश्वनाथ सिंह, अवकाश प्राप्त अध्यक्ष
    पाठ्यपुस्तक निर्माण विभाग
    साक्षरता निकेतन, लखनऊ
12. डा. सुरेश पंत, अवकाश प्राप्त प्रवक्ता
    राजकीय उच्चतर माध्यमिक बाल विद्यालय
    जनकपुरी, नई दिल्ली
13. कुमारी इंद्रा सक्सेना, वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका
    डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    (एन.सी.ई.आर.टी.), अजमेर
    राजस्थान
14. डॉ. (श्रीमती) सुधा सक्सेना
    अवकाशप्राप्त वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    डी.एम.स्कूल, (एन.सी.ई.आर.टी), भोपाल
15. कुमारी कुसुमलता अग्रवाल
    हिंदी अध्यापिका, सर्वोदय बाल विद्यालय
    रमेश नगर, नई दिल्ली
16. कुमारी विमला उप्रेती
    अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापिका
    राजकीय इंटर कॉलेज, राय बरेली, उत्तर प्रदेश
17. श्री अशोक शुक्ल, सर्वोदय विद्यालय
    एफ.यू.ब्लाक पीतम पुरा, नई दिल्ली
18. अनिरुद्ध राय, प्रोफ़ेसर, सामाजिक विज्ञान
    एवं नई दिल्ली मानविकी शिक्षा विभाग,
    एन.सी.ई.आर.टी.
19. कु. स्नेहलता प्रसाद, रीडर, सामाजिक विज्ञान
    एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी

# 1. अपना देश सँवारें हम

(प्रस्तुत कविता देश-प्रेम की कविता है। कवि नए युग की चुनौतियों और आवश्यकताओं के अनुसार अपने देश को और अधिक सुंदर, संपन्न और सशक्त बनाना चाहता है। इसके लिए वह किसानों-मज़दूरों को अधिक कर्मठ, कवियों-कलाकारों को अधिक कल्पनाशील और विचारकों, सैनिकों, सुरक्षाकर्मियों को अधिक जागरूक बनाने और युवाओं को विकास की नई दिशाओं की खोज करने एवं सच्चा मानव बनने की प्रेरणा देता है।)

अपना देश सँवारें हम
अपनी इस पावन धरती का, आओ रूप निखारें हम।
अपना देश सँवारें हम।

नए सृजन के संवाहक हम
प्रगति पंथ के राही हैं,
हम प्रतिबद्ध पहरुए युग के
हम सन्नद्ध सिपाही हैं।

जो भी मिले चुनौती, उत्तर दें, उसको स्वीकारें हम।
अपना देश सँवारें हम।

कर्म, हमारे बनें कुदाली
कर्म, हलों के फाल बनें
कर्म, बनें तलवार शत्रु को
कर्म, देश की ढाल बनें।

नए भगीरथ बन, वैचारिक गंगा नई उतारें हम।
अपना देश सँवारें हम।

हमें देश की रक्षा करनी है
प्रतिकूल हवाओं से
हमको हैं घर-द्वार सजाने
नई-नई आशाओं से।

अंधकार से जूझ, देश की गली-गली उजियारें हम।
अपना देश सँवारें हम।

हम प्रतिरूप नए युग के हैं  
सूरज नूतन क्षमता के  
नए क्षितिज के अन्वेषी हम  
पोषक हम जन समता के।  
अपना, सबका, मानवता का मिल-जुल पंथ बुहारें हम  
अपना देश सँवारें हम।

*—श्रीकृष्ण 'सरल'*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और सराहना

**(क) मौखिक**

1. देश को सँवारने से कवि का क्या आशय है?
2. देश को किन-किन क्षेत्रों में सँवारने की ज़रूरत है?
3. कविता की जिन पंक्तियों में नई चुनौतियों का सामना करने के लिए देश-वासियों की क्षमताओं का उल्लेख हुआ है, उन्हें कक्षा में पढ़कर सुनाइए ।
4. कर्म को कुदाली और हलों के फाल बनाने की बात क्यों कही गई है?
5. कविता की किन पंक्तियों में 'जय किसान जय जवान' नारे की गूँज विद्यमान है?
6. कर्म शत्रु के विरुद्ध तलवार किस प्रकार बन सकते हैं?
7. 'नूतन क्षमता के सूरज' कहने का क्या अभिप्राय है?

### (ख) लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव समझाइए –
   (क) हम प्रतिबद्ध पहरुए युग के
   (ख) हमें देश की रक्षा करनी है प्रतिकूल हवाओं से
   (ग) नए क्षितिज के अन्वेषी हम
2. 'नए भगीरथ' और 'वैचारिक गंगा' का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
3. देश को सँवारने के लिए नई वैचारिक क्रांति की आवश्यकता क्यों है?
4. आज देश के सामने कौन-कौन-सी प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं? कवि ने उनका क्या समाधान सुझाया है?
5. मानवता के रास्ते में आनेवालो बाधाओं को कैसे दूर किया जा सकता है?

## योग्यता-विस्तार

1. देश-प्रेम से संबंधित कुछ कविताओं का एक एलबम तैयार क़ीजिए और 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि अवसरों पर आयोजित किए जानेवाले समारोहों में उनका पाठ कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**सँवारना** - वर्तमान स्थिति से बेहतर बनाना, सजाना

**धरती का रूप निखारना** - धरती की संपदा और जीवन को सुंदर बनाना

**सृजन के संवाहक** - रचना और निर्माण को गति प्रदान करने वाले

**प्रगति पंथ के राही** - प्रगति के पथ पर चलने वाले

**युग के प्रतिबद्ध पहरुए** - युग की माँग और आवश्यकता की पूर्ति के प्रति जागरूक

**सन्नद्ध** - हर समय सेवा के लिए तत्पर

**कर्म हमारे.....ढाल बनें** - हमारे मज़दूर, किसान और सीमाओं के रक्षक जवान कर्मनिष्ठ बनें

**भगीरथ** - अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा, जो अपने घोर तप के बल पर गंगा को धरती पर लाए थे और कपिल मुनि के शाप से भस्म हुए अपने पुरखों का उद्धार किया था

**प्रतिकूल हवाएँ** - प्रतिकूल परिस्थितियाँ

**नए युग के प्रतिरूप** - नए युग के प्रतिनिधि

**नूतन क्षमता के सूरज** - नई शक्ति से अज्ञान के अँधेरे को दूर करने वाले

**नए क्षितिज के अन्वेषी** - जीवन और जगत के विकास के नए क्षेत्रों की खोज करने वाले

**मानवता का पंथ बुहारना** - मानवता के रास्ते में आने वाली कठिनाइयों और बाधाओं को हटाना

# 2. बैसाखी फिर आ गई

(पंजाब के किसानों के उल्लास का पर्व है – बैसाखी, प्रतिवर्ष आता है और लाता है अपने साथ अतीत की अनेक स्मृतियाँ। ये स्मृतियाँ एक ओर तो पंज प्यारों द्वारा गुरु गोबिंद सिंह को समर्पित सिरों की अद्भुत भेंट की घटना से जुड़ी हैं, तो दूसरी ओर अमृतसर के जलियाँवाला बाग में जनरल डायर द्वारा चलवाई गई गोलियों की धाँय-धाँय की अनुगूँज से। खून दोनों ही घटनाओं में बहा था। किंतु एक में बहा खून साहस, त्याग और बलिदान की याद दिलाता है और दूसरी में बहा खून अत्याचार और अमानवीयता की। साहस, त्याग, बलिदान और अत्याचार की इन यादों को सँजोए हुए पंजाब का किसान अपने खेतों में लहलहाती फ़सल को देख खुद को रोक नहीं पाता है और बरबस ही भँगड़े और गिद्दे की ताल पर थिरक उठता है और गा उठता है – जट्टा आई बसाखी, ओ, जट्टा आई बसाखी।)

बैसाखी आती है और पंजाब के किसान के अंदर का सारा उल्लास भँगड़े के ढोल की ताल पर थिरकने लगता है।

शुरू में यह ताल धीरे-धीरे बजती है। भँगड़े के नर्तक ताल पर पैर हिलाते हैं, शरीर को गति देते हैं और कंधे उचकाते हुए नाचते हैं। कभी घुटने आगे बढ़ाकर, शरीर झुकाकर ताल पर नाचते हैं तो कभी मुट्ठी बंदकर, तर्जनी अंगुली खड़ीकर, बाहें फैलाकर झटका देते हैं। मस्ती में झूमते नर्तकों के शरीर का अंग-अंग ढोल की ताल पर हिलोरें लेने लगता है। धीरे-धीरे

ढोलवादक अपनी ताल तेज़ करता है। उसके साथ ही नाचने वालों की हरकत भी तेज़ हो जाती है। कुछ देर बाद नर्तक खड़े हो जाते हैं। एक मनचला युवक नर्तकों के घेरे में आ जाता है। उसका एक हाथ कान पर है और दूसरा हाथ ऊँचा उठाकर वह एक 'बोली' बोलता है—

ए गभरू देश पंजाब दे
उडदे विच हवा,
ए गभरू देश पंजाब दे
ते देंदे धूड घुमा,
हो ढोल वालिया जवाना......

'बोली' को सहारा देने के लिए ढोलवादक तेज़ी से ढोल बजाने लगता है — ताल तेज़ होती जाती है और उसके साथ ही नर्तकों की गति भी। सारा वातावरण आनंद और मस्ती में डूब जाता है।

ढोल की दमक और नर्तकों की गमक में से उभर आती हैं बैसाखी के साथ जुड़ी हुई अनेक स्मृतियाँ, ऐसी स्मृतियाँ जिनमें आनंद और मस्ती है, तलवारों की खनखनाहट है, गोलियों की धाँय-धाँय है और जयघोषों, चीख-पुकारों का तीव्र स्वर है।

वह दिन भी तो बैसाखी का ही था। तीन सौ दो वर्ष पूर्व, हिमालय की पर्वतमाला के पश्चिमी छोर की छाया में नए बसे एक नगर के खुले मैदान में हज़ारों लोग जमा थे। उन सभी के ऊपर एक प्रश्न झूल रहा था — एक अजीब-सा प्रश्न। और उस प्रश्न की छाया में हर व्यक्ति जैसे भौचक्का-सा

हो गया था। भला यह भी कोई बात हुई? कहाँ बैसाखी की मौज-मस्ती, गिद्दे और भँगड़े, खेल-तमाशों से भरे मेले और कहाँ यह सवाल? सिर चाहिए...सिर चाहिए। सामने मंच पर खड़ा, किसी उन्माद में डूबा, आँखों से चिनगारियाँ बिखेरता, नंगी चमचमाती तलवार घुमाता हुआ तैंतीस वर्षीय युवा व्यक्ति कह रहा था – मुझे सिर चाहिए....मुझे सिर चाहिए। हर व्यक्ति एक दूसरे को देख रहा था। हर व्यक्ति एक दूसरे से आँखें चुरा रहा था। और प्रश्न था कि डंके पर पड़ने वाली चोट की तरह बराबर बजता चला जा रहा था।

फिर लोगों की नज़रें दूसरी ओर मुड़ गईं। यह उस विचित्र प्रश्न का विचित्रतर उत्तर था।

"मैं अपना सिर देने को तैयार हूँ ।"

कैसा था वह व्यक्ति? सीधा-सादा, अधेड़, दुकानदार-सा।

"मेरा नाम दयाराम है। मैं खत्री हूँ, लाहौर का रहने वाला।

आपको सिर चाहिए। मेरा सिर हाज़िर है।"

भीड़ की विस्फारित आँखें उसे भीड़ से निकलता हुआ देख रही हैं। वह झूमता हुआ उस लपलपाती तलवार की ओर बढ़ता चला जा रहा है। फिर वह और लपलपाती तलवार वाला व्यक्ति एक खेमे की ओट में चले जाते हैं।

"खटाक"...और खेमे से खून की धार बाहर बह निकलती है।

मंच पर फिर वही तलवार चमचमा रही है। परंतु इस बार वह अधिक भयावह होकर वातावरण पर फिर से झूल रही है।

"एक सिर और चाहिए...और चाहिए...।"

सन्नाटा गहरा हो गया है। फिर किसी कोने से एक मद्धिम आवाज़ उभरती है – "मैं अपना सिर देने को तैयार हूँ।"

यह कौन है?

"मैं धरम दास हूँ जी। जाट हूँ...हस्तिनापुर का रहने वाला।"

और भीड़ की लहरों पर से उतराता हुआ वह जाट उस तलवार को चूमने इस तरह चला जा रहा है जैसे भँगड़े वालों की टोली में कोई 'बोली' बोलने जा रहा हो।

'खटाक' ज़्यादा खतरनाक हुई। खेमे में से खून और गाढ़ा निकला। चमचमाने वाली तलवार खून में और सन गई। और सिर माँगने वाले युवक

की आँखों की चिनगारियों की चुभन ज़्यादा बींधने लग गई।

"एक सिर और चाहिए।"

"मैं अपना सिर देने को तैयार हूँ पर...।" उस प्रश्न पर एक और प्रश्न उभर आया – "क्या आप मेरा सिर भी स्वीकार करेंगे? मैं छोटी जाति का हूँ...छीपा...कपड़े छापने वाला...।"

मंच पर खड़े जिस व्यक्ति की आँखों से लोग आग बरसती देख रहे थे, एकाएक उनमें से जैसे जल चू पड़ा। सारा खिंचा हुआ चेहरा एकदम तरल होकर करुणा में डूब गया। तलवार के साथ ही उसकी बाँहें भी पसर गईं। और उस पसार में द्वारका का रहने वाला मोहकम चंद समा गया।

फिर चौथी माँग के साथ तलवार की धार पर खून की परत और गहरी हो गई।

"एक सिर और चाहिए...।"

सभा का सन्नाटा गहरा होकर फटने लगा। भीड़ छँटने लगी, परंतु वह अनोखा प्रश्न जैसे भागते हुए लोगों का पीछा कर रहा था।

"मेरा सिर चाहिए ! मैं नाई हूँ। अपने उस्तरे से लोगों के बाल काटता हूँ। मैं बाल काटता रहा और छोटा बनता रहा। लोगों ने मेरे सामने सिर झुकाया पर मेरे हाथ का छुआ पानी नहीं पिया। आप तो गुरु हैं। लाखों लोग आपके सामने सिर झुकाते हैं पर आपकी प्यास नहीं बुझाते। लीजिए मेरा सिर...शायद आपकी प्यास थोड़ी-सी बुझ जाए।"

और देखते-देखते बीदर का नाई साहब चंद उस रहस्यमय खेमे के

अंधकार में डूब गया। साथ ही लोगों के दिल भी डूब रहे थे। आवाज़ फिर गूँज रही थी –"सिर चाहिए...और सिर चाहिए...और सिर चाहिए...।"

तब लगा, बैसाखी के आनंदपूर्ण अवसर पर आनंदपुर से जुड़ी हज़ारों लोगों की भीड़ भगदड़ में बदल जाएगी। लोगों को लगा था, युवा गुरु, गुरु गोबिंद सिंह विक्षिप्त हो गया है। लोग सोच रहे थे – कैसा है यह गुरु? यह धन नहीं माँगता, वस्त्र नहीं माँगता, घोड़े-हाथी नहीं माँगता, श्रद्धा और भक्ति नहीं माँगता। यह माँग रहा है सिर...। कहता है अपना सिर मुझे दे दो। सिर दे दें तो पास रहेगा क्या?

और उसकी आवाज़ और तेज़ होती जा रही थी –"मुझे सिर चाहिए..."

लोग सिर बचाने लगते हैं। उठ-उठ कर भागने लगते हैं। गुरु की आवाज़ और तीखी होती जा रही है – "अरे, भागते कहाँ हो? क्या भाग कर तुम अपना सिर बचा सकोगे? क्या तुम यह भी नहीं जानते कि सिर बचाने से सिर चला जाता है...और सिर देने से सिर बच जाता है। अपना सिर बचाना चाहते हो तो यह सिर मुझे दे दो...अपना सिर मुझे दे दो...।"

और तब सिर लेकर हाज़िर था – जगन्नाथपुरी का धीवर हिम्मत राय।

पाँच ने अपने सिर भेंट कर दिए। वे गुरु के प्यारे बन गए। सबके प्यारे बन गए...पंज प्यारे। परीक्षा में उत्तीर्ण ये प्यारे नए वस्त्रों में सुसज्जित वहाँ उपस्थित जनसमूह के सम्मुख खड़े थे।

तीन सदियाँ गुज़र गईं। आज भी जब उनकी याद आती है तो उनमें से किसी का नाम याद नहीं आता। न ही कोई अकेला-अकेला याद आता है। पाँचों एक साथ याद आते हैं, पाँचों प्यारे याद आते हैं। इन सिर देने वालों की

यह याद बैसाखी को और अधिक प्यारा बना देती है।

सिर माँगना एक विचित्र माँग थी। पर सिर दे देना उससे भी अधिक विचित्र था। इसमें एक बात सबसे विचित्र थी। सिर माँगने वाला पंजाब में सिर माँग रहा था। परंतु सिर देने वाले? उनमें पंजाब का सिर्फ़ एक था। एक था हस्तिनापुर का। और शेष...? एक गुजराती, एक कन्नड़ और एक उड़िया। भावात्मक एकता और भारत की अखंडता के नाम पर बड़े-बड़े भाषणों, लेखों और नारों के बनावटी आयोजन के मध्य से यह नहीं उभरा था। फिर यह सब कैसे हुआ था? कैसे एक ही माँग पर उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम के सिर एक साथ आ जुटे थे।

बैसाखी आती है तो इस तरह के कितने ही सवाल हमारे सामने आ खड़े होते हैं।

भँगड़े के ढोल का स्वर और मुखर हो उठा है।

पर ढोल की इस मधुर आवाज़ के साथ यह और कौन-सा स्वर है? धाँय...धाँय...धाँय। इस आवाज़ के साथ एक और बैसाखी उजागर हो गई है, सन् 1919 की अमृतसर की बैसाखी। चारों ओर आवाज़ें गूँज रही थीं – 'रोलट कानून मुर्दाबाद, काला कानून वापस लो।' जलियाँवाला बाग में बीस हज़ार से अधिक नर-नारी जमा थे। शहर के मकानों की चारदीवारी से घिरे इस बाग में प्रवेश करने के सँकरे दरवाज़े पर अपने फ़ौजी जवान लिए खड़ा था जनरल डायर और उसका हुक्म था – फ़ौरन तितर-बितर हो जाओ। परंतु कौन, कहाँ से, किधर से तितर-बितर हो जाए? चारों ओर ऊँचे-ऊँचे मकान,

निकलने का सिर्फ़ एक रास्ता और उस रास्ते पर तनी हैं सिपाहियों की बंदूकें और सड़क पर उन्हें घेरे खड़ी हैं फ़ौजी आरमर्ड कारें।

"अच्छा तो तुम सरकारी हुक्म नहीं मानते...लो सज़ा भुगतो...फ़ायर...फ़ायर...फ़ायर।" बंदूकों से गोलियाँ छूट रही हैं। 'धाँय-धाँय' और 'हाय-हाय' की आवाज़ें एक दूसरे से मिल गई हैं। गोलियाँ दनादन छूटती चली जा रही हैं। लोग भाग-दौड़ करते, चीखते-चिल्लाते हुए घायल पक्षियों की तरह फड़फड़ा रहे हैं। जनरल डायर चीखता चला जा रहा है – फ़ायर...फ़ायर...फ़ायर।

अमृतसर का बैसाखी का मेला खूनी मेले में बदल गया है। गुरु गोबिंद सिंह ने भी एक बैसाखी खूनी बैसाखी बना दी थी। उसमें कुछ लोगों ने अपने सिरों को मानो हथेली पर रखकर सौंप दिया था। आज जनरल डायर ज़बरदस्ती सिर ले रहा है। बचने का कोई उपाय नहीं है।

हंटर कमीशन के सामने गवाही देते हुए जनरल डायर ने कहा था - "लोगों को तितर-बितर हो जाने के हुक्म के तीन मिनट बाद ही मैंने गोली चलाने का हुक्म दे दिया।"

मानो वह हुक्म नहीं, सूरज की तेज़ गरमी थी, जिसके प्रभाव से बीस हज़ार लोगों को तीन मिनट में भाप बन कर उड़ जाना था।

हंटर कमीशन के सामने जनरल डायर ने एक बात और कही थी – "मैंने और भी गोली चलवाई होती अगर मेरे पास कारतूस होते। मैंने सोलह सौ बार ही गोली चलवाई क्योंकि मेरे पास कारतूस खत्म हो गए थे।"

सोलह सौ गोलियों की वर्षा कराने वाला जनरल डायर कुछ साल बाद अपने ही घर में पश्चाताप की आग में झुलस कर मरा था। उसकी पीठ पर वरदहस्त रखनेवाला उस समय का पंजाब का लेफ़्टिनेंट गवर्नर ओ'ड्वायर बैसाखी और भँगड़े की भूमि के ही एक लाल – उधम सिंह की गोली का शिकार बना था।

बैसाखी फिर आ गई है। देश में हरी क्रांति लानेवाला किसान फिर से झूम उठा है। पंजाब की धरती गिद्‌दे और भँगड़े की ताल पर फिर से थिरक उठी है। गेहूँ कट रहा है, खेतों से निकल कर मंडियों में आ रहा है और झूमता हुआ किसान गाता चला जा रहा है –

ओ जट्‌टा आई बसाखी..... आई बसाखी
कणकाँ दी मुक गई राखी.....आई बसाखी

*– महीप सिंह*

## बोध और विचार

### (क) मौखिक

1. सभी व्यक्तियों के सामने कौन-सा एक अजीब प्रश्न था?
2. हर व्यक्ति एक दूसरे से आँखें क्यों चुरा रहा था?
3. लेखक ने दुकानदार दयाराम के उत्तर को विचित्रतर क्यों कहा?
4. पंज प्यारों के नाम क्या थे और वे कहाँ-कहाँ के निवासी थे?
5. मोहकम चंद के प्रश्न पर किसकी आँखों से एकाएक जल चू पड़ा और क्यों?
6. जलियाँवाला बाग में लोग क्यों इकट्‌ठे हुए थे?
7. अमृतसर का बैसाखी मेला खूनी मेला क्यों बन गया था?
8. पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर ओ' ड्‌वायर को किसने मारा?
9. बैसाखी का पर्व किसानों के लिए हर्षोल्लास का पर्व क्यों है?

### (ख) लिखित

1. ढोल की ताल पर नाचते किसानों की मस्ती का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
2. 'मैं बाल काटता रहा और छोटा बनता रहा।' इस कथन में किस सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है?
3. गुरु गोबिंद सिंह के सिर लेने में और जनरल डायर के सिर लेने में क्या अंतर है?
4. 'बैसाखी के पर्व के साथ एक ओर मौज़मस्ती जुड़ी है तो दूसरी ओर इतिहास की कटु स्मृतियाँ।' टिप्पणी कीजिए।
5. आप जनरल डायर के व्यक्तित्व के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग करेंगे और क्यों?
6. पाठ से उन पंक्तियों को छाँटिए जिनमें बैसाखी का उल्लास व्यक्त होता है।
7. आपकी दृष्टि में इस पाठ के लिए निम्नलिखित शीर्षकों में से कौन-सा शीर्षक अधिक उपयुक्त होगा और क्यों?
   - बैसाखी की स्मृतियाँ
   - बैसाखी और हम
   - बैसाखी का पर्व
   - खूनी बैसाखी
8. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) 'सिर बचाने से सिर चला जाता है – और सिर देने से सिर बच जाता है।'
   (ख) 'भावात्मक एकता और भारत की अखंडता के नाम पर बड़े-बड़े भाषणों, लेखों और नारों के बनावटी आयोजन के मध्य से यह नहीं उभरा था।'

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए उनके अंतर को समझिए –
   तल-ताल, सर-सार, खिंचा-खींचा, गोली-गोलियाँ, साथी-साथियों, मंडी-मंडियों, सिपाही-सिपाहियों।
   'अ' और 'इ' के उच्चारण में मुख से हवा निकलने की मात्रा कम होती है, किंतु 'आ' और 'ई' के उच्चारण में हवा के निकलने की मात्रा अधिक होती है। यह ध्यान देने की बात है कि एक वचन शब्द (जैसे गोली) के अंत में जो दीर्घ 'ई' है वह शब्द के बहुवचन रूप में ह्रस्व में परिवर्तित हो जाती है; जैसे – गोली-गोलियाँ।
2. निम्नलिखित वाक्यों को सही अनुतान में पढ़िए –
   (क) कैसा था वह व्यक्ति?
   (ख) मेरा सिर चाहिए !
   (ग) तलवार खून में और सन गई।
   (घ) बैसाखी में आनंद और मस्ती।
   (ङ) मैं खत्री हूँ लाहौर का रहने वाला ।
3. पाठ में पंजाबी भाषा के कई शब्द आए हैं जो पंजाब की भाषा और संस्कृति की ओर संकेत करते हैं; जैसे – गभरू, धूड़, धरम, उडदे
   इसी पाठ से पंजाबी के पाँच शब्द निकाल कर उनके अर्थ लिखिए।
4. पाठ में आए इस वाक्य को देखिए –
   (क) मस्ती में झूमते नर्तकों के शरीर का अंग-अंग ढोल की ताल पर हिलोरें लेने लगता है।
   उपर्युक्त वाक्य में 'लेने लगता है' में तीन क्रियाएँ हैं – 'लेना', 'लगना' और 'है'। 'लेना' मुख्य क्रिया है, 'लगना' रंजक क्रिया है और 'है' अस्तित्ववाची क्रिया है।

मुख्य क्रिया 'लेने' और रंजक क्रिया 'लगना' मिलकर संयुक्त क्रिया बन गई है। इसमें 'लेने' क्रिया रूप से आरंभ होने के भाव का बोध होता है। यदि इस वाक्य को मुख्य क्रिया में लिखा जाए तो वाक्य होगा –

– मस्ती में झूमते नर्तकों के शरीर का अंग-अंग ढोल की ताल पर हिलोरें लेता है। उपर्युक्त वाक्य में 'लेने' से आरंभ होने की सूचना नहीं मिलती।

यह ध्यान रहे कि 'लगना' रंजक क्रिया जोड़ने से मुख्य क्रिया की मूल धातु के साथ 'ने' जुड़ता है।

निम्नलिखित वाक्यों में 'लगना' रंजक क्रिया लगाकर संयुक्त क्रिया बनाइए और वाक्य पूरा कीजिए –

(क) किसान के अंदर का सारा उल्लास भँगड़े के ढोल की ताल पर थिरकता है।

(ख) सारा वातावरण आनंद और मस्ती में डूबता है।

(ग) ढोलवादक तेज़ी से ढोल बजाता है।

5. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(क) ताल तेज़ होती जाती है **और** उसके साथ ही नर्तकों की गति भी।

(ख) खेमे में से खून **और** गाढ़ा निकला।

उपर्युक्त वाक्य (क) के 'और' तथा वाक्य (ख) के 'और' के अर्थ में आपको अंतर मिलेगा। वाक्य (क) में दो वाक्यों के बीच 'और' 'समुच्चयबोधक' अव्यय है, जो इन दोनों वाक्यों के बीच 'योजक' का कार्य कर रहा है। इस प्रकार वाक्य (क) दो सरल वाक्यों का संयुक्त वाक्य बन जाता है।

वाक्य (ख) में योजक 'और' समुच्चयबोधक अव्यय की भूमिका नहीं निभा रहा बल्कि विशेषण की भूमिका निभा रहा है। 'इसमें और' अधिकता का अर्थ दे रहा है। इसलिए वाक्य (क) तथा वाक्य (ख) में प्रयुक्त 'और' के अर्थ में अंतर है।

पाठ में से समुच्चयबोधक अव्यय योजक 'और' तथा 'अधिकता' का अर्थ देने वाले 'और' के तीन-तीन वाक्य लिखिए।

6. वाक्य एक पूरा कथन होता है। वाक्य की समाप्ति को पूर्णविराम (।) से दिखाया जाता है; जैसे –

   (क) कुछ देर बाद नर्तक खड़े हो जाते हैं।

   (ख) लोगों की नज़रें दूसरी ओर मुड़ जाती हैं।

   निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान पूर्णविराम लगाइए –

   (क) शुरू में यह ताल धीरे-धीरे बजती है

   (ख) मेरा नाम दयाराम है मैं खत्री हूँ, लाहौर का रहने वाला

   (ग) आपको सिर चाहिए मेरा सिर हाज़िर है

   (घ) मैं धरम दास हूँ जी जाट हूँ....हस्तिनापुर का रहने वाला

## योग्यता-विस्तार

1. खालसा पंथ की स्थापना के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. भारत पर्वों एवं त्योहारों का देश है। देश के विभिन्न भागों में मनाए जाने वाले त्योहारों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में सुनाइए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**भँगड़ा** - बड़े ढोल के ताल पर होने वाला एक पंजाबी लोकनृत्य

**थिरकना** - चंचलता के साथ पैरों को उठाते, गिराते एवं हिलाते हुए नाचना

**तर्जनी** - अँगूठे के पास की अंगुली

**हरकत** - गति, चाल, चेष्टा

**गभरू** - गबरू, हृष्ट-पुष्ट नौजवान

**उडदे विच हवा** - हवा में उड़ते हुए, हवा में उछलते-कूदते हुए

**धूड** - धूल

**ढोल वालिया** - ढोल बजाने वाला

**भौचक्का** - हैरान, हक्का-बक्का

**गिद्दा** - पंजाबी लोकनृत्य, जिसमें केवल लड़कियाँ ही भाग लेती हैं

**उन्माद** - पागलपन, विक्षिप्तता

**विस्फारित आँखें** - आश्चर्य से भरी आँखें

**भयावह** - भयानक, डरावना

**खेमा** - डेरा, तंबू

**मद्धिम** - हलका, मंद

**हस्तिनापुर** - वर्तमान दिल्ली से कुछ दूरी पर एक नगर जो महाभारत काल में कौरवों की राजधानी था

**विक्षिप्त** - पागल, जिसका दिमाग ठीक न हो

**जगन्नाथपुरी** - उड़ीसा राज्य में समुद्र के किनारे पर बसा एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो चार धामों में से एक है

**पंज प्यारे** - गुरु गोबिंद सिंह के वे पाँच प्रिय भक्त जो खालसा पंथ की स्थापना के समय स्वेच्छा से बलिदान देने के लिए आगे आए

**धीवर** - मल्लाह, केवट

**जनरल डायर** - ब्रिटिश शासन का सेनाधिकारी जो जलियाँवाला कांड के लिए जिम्मेदार था

**आरमर्ड कार** - बख्तरबंद गाड़ी, वह कार जिस पर गोली का असर नहीं होता

**उधम सिंह** - पंजाब का क्रांतिकारी नवयुवक जिसने जलियाँवाला बाग में हुई नृशंस हत्या का बदला लेने की प्रतिज्ञा की थी। 13 मार्च, 1940 ई. को उसने इंगलैंड में गोली मारकर ओ'ड्वायर की हत्या कर दी

**जट्टा** - जाट

**कणकाँ** - गेहूँ

**मुक गई** - समाप्त हो गई

# 3. हार की जीत

('हार की जीत' हृदय-परिवर्तन की कहानी है। बाबा भारती के अद्‌भुत एवं तीव्र चाल तथा मनोहारी रूप वाले सुलतान नाम के घोड़े पर डाकू खड्‌गसिंह का मन आ जाता है और युक्तिपूर्वक वह घोड़े को ले भागता है। किंतु खड्‌गसिंह का डाकू मन बाबा भारती के एक संत वाक्य से विह्‌वल हो उठता है और उसका हृदय पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। वह बाबा भारती को घोड़ा वापस लौटा देता है। इस प्रकार बाबा भारती की हार, जीत में बदल जाती है और खड्‌गसिंह की जीत, हार में।)

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्‌भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान बिना नहीं रह सकूँगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्‌टू थे। कहते, "ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर

आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुंचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी

चीज़ों से क्या लाभ ! कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या !"

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई, "ओ बाबा, इस कँगले की सुनते जाना।"

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे

घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है ! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा

था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात्, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

*— सुदर्शन*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. घोड़े को देखने पर बाबा भारती को मिलने वाले आनंद की तुलना लेखक ने किन-किन से की है?
2. भगवद्भजन से बचे समय का उपयोग बाबा भारती किस प्रकार करते थे?
3. 'सुलतान की चाह खींच लाई' का अर्थ है —

   (क) खड्गसिंह को घोड़े अच्छे लगते थे ।

   (ख) वह सुलतान की कीर्ति सुनकर उसे देखने आया था।

   (ग) वह सुलतान की चाल देखना चाहता था।

   (घ) वह सुलतान से प्यार करता था।

4. सुलतान को देखकर खड्गसिंह क्या-क्या सोचने लगा था?
5. बाबा भारती की रातों की नींद क्यों उड़ गई थी?
6. खड्गसिंह बाबा भारती द्वारा की गई प्रार्थना का कारण क्यों नहीं समझ पाया था?
7. अपाहिज को घोड़े पर बैठा लेना बाबा भारती के चरित्र की किस विशेषता को उजागर करता है?

**(ख) लिखित**

1. बाबा भारती ने खड्गसिंह से सुलतान की प्रशंसा किन शब्दों में की?
2. खड्गसिंह ने सुलतान को पाने के लिए क्या युक्ति अपनाई?
3. बाबा भारती की चीख में भय, विस्मय और निराशा क्यों थी?
4. बाबा भारती ने खड्गसिंह से क्या प्रार्थना की और क्यों?
5. बाबा भारती द्वारा अपने अनुरोध का कारण समझाने के बाद खड्गसिंह के मन में क्या विचार उठे?
6. घोड़े को पुनः पाकर बाबा भारती ने अपनी प्रसन्नता किस-किस रूप में व्यक्त की?
7. टिप्पणी कीजिए कि सामान्य मनुष्यों जैसी कुछ बातें होते हुए भी बाबा भारती सामान्य मनुष्यों से भिन्न थे।
8. कल्पना कीजिए कि घोड़ा खोकर पाने से बाबा भारती के मन में और घोड़ा पाकर खोने से खड्गसिंह के मन में क्या-क्या भाव उठे होंगे?
9. इस कहानी में किसकी जीत हुई और किसकी हार? कारण देते हुए उत्तर दीजिए।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित अंशों का अनुमान सहित उच्चारण कीजिए –

   (क) बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

   खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

   (ख) "उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

   "कहते हैं देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

   "क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

   वाक्य के भाव के अनुसार सुर (ध्वनि) का उतार-चढ़ाव अनुतान कहलाता है। उपर्युक्त अंश (क) में पहला वाक्य प्रश्न है जिसमें सुर (ध्वनि) बीच में उठता है और वाक्य के अंत में भी उठा रहता है। उत्तर में 'आपकी दया है' सामान्य कथन है जिसमें सुर (ध्वनि) वाक्य के अंत में गिरता है।

   'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।' और 'क्या कहना !' दोनों वाक्य 'आश्चर्य' या 'विस्मय' का बोध कराते हैं। इसमें ध्वनि उठकर लंबी हो जाती है। इस प्रकार के तीन संवादात्मक वाक्य पाठ से चुनिए और उनका उच्चारण कीजिए।

2. संतोष => असंतोष ( अ + संतोष )

   आशा => निराशा ( निर् + आशा )

   ऊपर दिए 'संतोष' और 'आशा' शब्दों में क्रमशः 'अ' और 'निर्' उपसर्ग लगने से जो शब्द (असंतोष, निराशा) बने हैं, वे उनसे उलटे अर्थ का बोध कराते हैं, इसलिए 'असंतोष' और 'निराशा' शब्द क्रमशः 'संतोष' और 'आशा' के

विपरीतार्थक हैं। ऐसे शब्दों को 'विलोम' शब्द भी कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –

| **शब्द** | **विलोम** | **शब्द** | **विलोम** |
|---|---|---|---|
| अधीर | ———— | अधिकार | ———— |
| असावधान | ———— | सामान्य | ———— |
| प्रसन्न | ———— | भय | ———— |
| विश्वास | ———— | प्रयोजन | ———— |

3. क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं; जैसे –

   चाहना => चाह, पकड़ना => पकड़

   इसी प्रकार निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञा बनाकर वाक्य बनाइए –

   दौड़ना, पुकारना, चीखना, समझना

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

   आकाश में तारे **टिमटिमा** रहे थे।

   घोड़ा अपने स्वामी के पाँवों की चाप पहचान कर ज़ोर से **हिनहिनाया**।

   मोटे छपे शब्दों को 'अनुरणनात्मक' (ध्वनि से अर्थ को व्यंजित करने वाले) शब्द कहते हैं।

   निम्नलिखित वाक्यों को उपयुक्त अनुरणनात्मक शब्दों से पूरा कीजिए –

   (क) मेरे सामने भिखारी ———- लगा।

   (ख) कूड़े पर मक्खियाँ ———- रही हैं।

   (ग) मैं बादलों की ——— से डर गया।

   (घ) आधी रात को कोई दरवाज़ा ——— लगा।

   (ङ) गोली चलते ही पक्षी अपने पंख ——— लगे।

5. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

(क) जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

(ख) बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से।

उपर्युक्त वाक्य (क) मिश्र वाक्य है जिसमें मुख्य वाक्य 'उन्हें चैन न आता' में 'तब तक' योजक का लोप है, किंतु यह इसमें निहित अवश्य है।

इसी प्रकार वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य है जिसमें दोनों प्रधान उपवाक्यों के बीच 'और' योजक लुप्त है। ऐसे लोप कई बार वाक्य को संक्षिप्त और प्रभावशाली बनाते हैं। इस प्रकार के दो मिश्र वाक्य और दो संयुक्त वाक्य पाठ से ढूँढ़िए।

6. निम्नलिखित मुहावरों से वाक्य बनाइए –

लट्टू होना, हृदय पर साँप लोटना, दिल टूट जाना, मुँह मोड़ना, फूला न समाना

## योग्यता-विस्तार

1. इस कहानी को एकांकी में रूपांतरित करके कक्षा में उसका अभिनय कीजिए।
2. 'कभी-कभी एक ही कथन सारी जीवनधारा का रुख मोड़ देता है।' कुछ अन्य घटनाओं या प्रसंगों द्वारा इस बात की पुष्टि कीजिए।
3. संसार से विरक्त व्यक्तियों का सांसारिक वस्तुओं से मोह कहाँ तक उचित है? कक्षा में चर्चा कीजिए।
4. 'दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का भी हृदय-परिवर्तन संभव है।' कक्षा में इस विषय के पक्ष-विपक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**लहलहाना** - हराभरा होना

**अर्पण** - भेंट, समर्पण

**खरहरा** - लोहे की कंघी जिससे घोड़े के शरीर का मैल साफ़ किया जाता है

**असबाब** - सामान

**भ्रांति** - भ्रम

**लट्टू होना** - मुग्ध होना, बहुत अधिक प्रसन्न होना

**कीर्ति** - ख्याति, बड़ाई, यश

**अधीर** - व्याकुल, बेचैन

**सहस्त्रों** - हज़ारों

**हृदय पर साँप लोटना** - ईर्ष्या होना, बेचैन होना

**अस्तबल** - घुड़साल, घोड़े बाँधने का स्थान

**मन में फूले न समाना** - अधिक प्रसन्न होना

**कँगला** - कंगाल, निर्धन

**नाईं** - तरह, समान

**बाग** - घोड़े की लगाम

**प्रयोजन** - उद्‌देश्य

**पाँवों का मन-मन भर का होना** - मन दुखी होने के कारण चलने में कठिनाई अनुभव करना

**पाँवों की चाप** - पैरों की आहट, पैरों की आवाज़
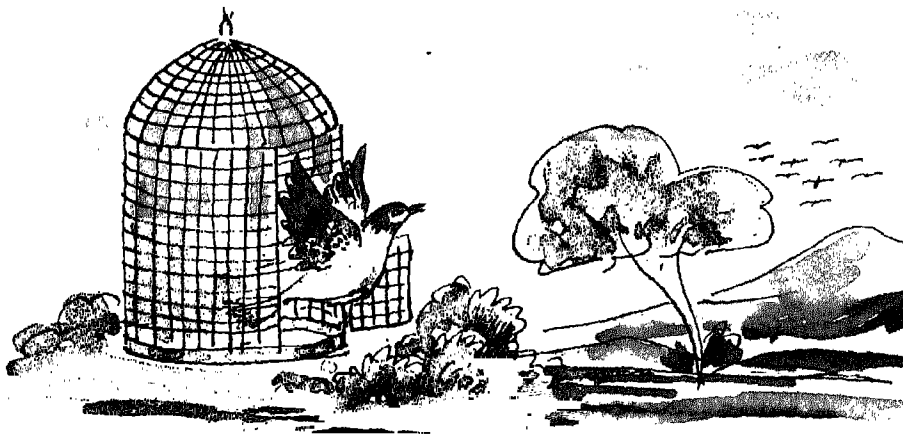
# 4. मुक्ति की आकांक्षा

(सभी भौतिक सुख-सुविधाओं से महत्त्वपूर्ण होती है आज़ादी की चाह। पिंजड़े में बंद चिड़िया को जीवन की सभी सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं किंतु मुक्ति के लिए वह तमाम सुख-सुविधाओं की उपेक्षा करके पिंजड़े से बाहर निकलने के लिए आतुर रहती है। पिंजड़े में बंद चिड़िया की इसी आतुरता और आकांक्षा को प्रस्तुत कविता में वाणी दी गई है।)

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बहुत बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उन्हें
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,

यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है,
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिए का डर है,
यहाँ निर्द्वंद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया
मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी,
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा, निकालेगी,
हरसूँ ज़ोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

*– सर्वेश्वर दयाल सक्सेना*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और सराहना

**(क) मौखिक**

1. पिंजड़े के बाहर की दुनिया को निर्मम क्यों बताया गया है?
2. 'अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी' कहने से कवि का क्या अभिप्राय है?
3. बाहर समुद्र, झरना और नदी के होते हुए भी चिड़िया का पानी के लिए भटकने की बात कवि क्यों कहता है?

4. बाहर सुख-सुविधाओं का अभाव और प्राणों तक का खतरा होने पर भी चिड़िया मुक्ति का गाना क्यों गाना चाहेगी –
   (क) उसे अपने प्राणों से कोई मोह नहीं है।
   (ख) वह सुख-सुविधाओं की आदी नहीं है।
   (ग) उसके लिए आज़ादी के सामने सारी सुख-सुविधाएँ तुच्छ हैं।
   (घ) उसे गाने में आनंद मिलता है।

**(ख) लिखित**

1. पिंजड़े में बंद चिड़िया को कवि बाहरी दुनिया की किन-किन वास्तविकताओं से परिचित कराना चाहता है और क्यों?
2. पिंजड़े के अंदर चिड़िया को क्या-क्या सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
3. पिंजड़े के भीतर चिड़िया के निर्द्वंद्व कंठ स्वर का आशय लिखिए।
4. कविता में चित्रित चिड़िया के स्वभाव के माध्यम से कवि क्या संदेश दे रहा है?

## योग्यता-विस्तार

शिवमंगल सिंह 'सुमन' की 'हम पंछी उन्मुक्त गगन के' कविता को पढ़िए और उसकी तुलना प्रस्तुत कविता से कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**मुक्ति** - आज़ादी, स्वतंत्रता
**निर्मम** - कठोर, ज़ालिम, क्रूर

**जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी** - बाहर की विशाल धरती पर चिड़िया अपनी पहचान खो देगी

**गटकना** - बिना प्रयास और बेमन से पीना

**टोटा** - कमी, अभाव

**चुग्गा** - खाना, दाना, पक्षियों का भोजन

**बहेलिया** - पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का काम करने वाला, व्याध

**मोटा** - पर्याप्त, आवश्यकता से अधिक

**निर्द्वंद्व कंठ स्वर** - बिना किसी दुविधा और रुकावट के गाना

**आशंका** - भय

**हरसूँ** - हर प्रकार से, पूरी शक्ति के साथ, भरसक

# 5. मेरी माँ

(माँ केवल जन्म ही नहीं देती, व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है। अपनी आत्मकथा के इन अंशों में प्रसिद्ध क्रांतिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' अपने जीवन-निर्माण में अपनी माँ के अवर्णनीय योगदान के प्रति नतमस्तक होते हैं और जन्म-जन्मांतर में उनके ऋण से उऋण होने की कोई संभावना नहीं दिखाई देती।)

लखनऊ कांग्रेस में जाने के लिए मेरी बड़ी इच्छा थी। दादीजी और पिताजी तो विरोध करते रहे, किंतु माताजी ने मुझे खर्च दे ही दिया। उसी समय शाहजहाँपुर में सेवा-समिति का आरंभ हुआ था। मैं बड़े उत्साह के साथ सेवा-समिति में सहयोग देता था। पिताजी और दादीजी को मेरे इस प्रकार के कार्य अच्छे न लगते थे, किंतु माताजी मेरा उत्साह भंग न होने देती थीं, जिसके कारण उन्हें अक्सर पिताजी की डाँट-फटकार तथा दंड सहन करना पड़ता था। वास्तव में, मेरी माताजी देवी हैं। मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है। दादीजी और पिताजी मेरे विवाह के लिए बहुत अनुरोध करते, किंतु माताजी यही कहतीं कि शिक्षा पा चुकने

के बाद ही विवाह करना उचित होगा। माताजी के प्रोत्साहन तथा सद्व्यवहार ने मेरे जीवन में वह दृढ़ता उत्पन्न की कि किसी आपत्ति तथा संकट के आने पर भी मैंने अपने संकल्प को न त्यागा।

एक समय मेरे पिताजी दीवानी मुकदमे में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह मुझसे करा लें। कुछ आवश्यकता पड़ने पर वकील साहब ने मुझे बुला भेजा और कहा कि मैं पिताजी के हस्ताक्षर वकालतनामे पर कर दूँ। मैंने तुरंत उत्तर दिया कि यह तो धर्म विरुद्‌ध होगा, इस प्रकार का पाप मैं कदापि नहीं कर सकता। वकील साहब ने बहुत समझाया कि मुकदमा खारिज हो जाएगा। किंतु मुझ पर कुछ भी प्रभाव न हुआ, न मैंने हस्ताक्षर किए। अपने जीवन में हमेशा सत्य का आचरण करता था, चाहे कुछ हो जाए, सत्य बात कह देता था।

ग्यारह वर्ष की उम्र में माताजी विवाह कर शाहजहाँपुर आई थीं। उस समय वह नितांत अशिक्षित एक ग्रामीण कन्या के समान थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद दादीजी ने अपनी छोटी बहन को बुला लिया। उन्होंने माताजी को गृहकार्य की शिक्षा दी। थोड़े दिनों में माताजी ने घर के सब काम-काज को समझ लिया और भोजनादि का ठीक-ठीक प्रबंध करने लगीं। मेरे जन्म होने के पाँच या सात वर्ष बाद उन्होंने हिंदी पढ़ना आरंभ किया। पढ़ने का शौक उन्हें खुद ही पैदा हुआ था। मुहल्ले की सखी-सहेली जो घर पर आया करती थीं, उन्हीं में जो शिक्षित थीं, माताजी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इस प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता, उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। परिश्रम के फल से थोड़े दिनों में ही वह देवनागरी
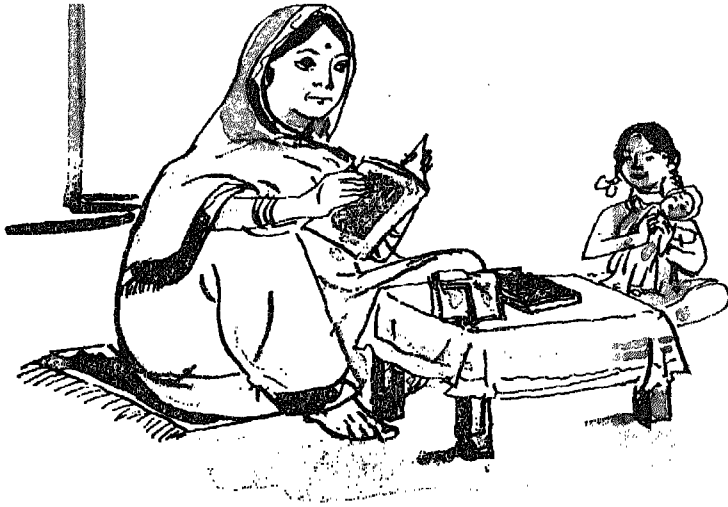
पुस्तकों का अध्ययन करने लगीं। मेरी बहनों को छोटी आयु में माताजी ही शिक्षा दिया करती थीं। जब से मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया, माताजी से खूब वार्तालाप होता। उस समय की अपेक्षा अब उनके विचार भी कुछ उदार हो गए हैं। यदि मुझे ऐसी माता न मिलतीं तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता। शिक्षादि के अतिरिक्त क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने मेरी वैसी ही सहायता की है, जैसी मेजिनी को उनकी माता ने की थी। माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना। उनके इस आदेश की पूर्ति करने के लिए मुझे मजबूरन दो-एक बार अपनी प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ी थी।

जन्मदात्री जननी! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने का प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला। इस जन्म में तो क्या यदि मैं अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो भी तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा

दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने जिस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है। तुम्हारी दया से ही मैं देश-सेवा में संलग्न हो सका। धार्मिक जीवन में भी तुम्हारे ही प्रोत्साहन ने सहायता दी। जो कुछ शिक्षा मैंने ग्रहण की उसका भी श्रेय तुम्हीं को है। जिस मनोहर रूप से तुम मुझे उपदेश करती थीं, उसका स्मरण कर तुम्हारी मंगलमयी मूर्ति का ध्यान आ जाता है और मस्तक झुक जाता है। तुम्हें यदि मुझे ताड़ना भी देनी हुई, तो बड़े स्नेह से हर बात को समझा दिया। यदि मैंने धृष्टतापूर्ण उत्तर दिया तब तुमने प्रेम भरे शब्दों में यही कहा कि तुम्हें जो अच्छा लगे, वह करो, किंतु ऐसा करना ठीक नहीं, इसका परिणाम अच्छा न होगा। जीवनदात्री ! तुमने इस शरीर को जन्म देकर केवल पालन-पोषण ही नहीं किया बल्कि आत्मिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मांतर परमात्मा ऐसी ही माता दें।

महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर नहीं होने दिया। सदैव अपनी प्रेम भरी वाणी को सुनाते हुए मुझे सांत्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन-भर में कोई कष्ट अनुभव न किया। इस संसार में मेरी किसी भी भोग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं। केवल एक इच्छा है, वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किंतु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती और तुम्हें मेरी मृत्यु की दुखभरी खबर सुनाई जाएगी। माँ ! मुझे विश्वास है कि तुम यह समझ कर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता –

भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलि-देवी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख कलंकित न की, अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। जब स्वाधीन भारत का इतिहास लिखा जाएगा, तो उसके किसी पृष्ठ पर उज्ज्वल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा। गुरु गोबिंद सिंह जी की धर्मपत्नी ने जब अपने पुत्रों की मृत्यु की खबर सुनी तो बहुत प्रसन्न हुई थीं और गुरु के नाम पर धर्म-रक्षार्थ अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई बाँटी थी। जन्मदात्री ! वर दो कि अंतिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर-त्याग करूँ।

***— रामप्रसाद 'बिस्मिल'***

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. बिस्मिल ने वकालतनामे पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किए?
2. बिस्मिल की माताजी का सबसे बड़ा आदेश क्या था?
3. बिस्मिल की माताजी के विचार पहले की अपेक्षा कब अधिक उदार हो गए थे?
4. बिस्मिल की एकमात्र इच्छा क्या थी? उन्हें वह इच्छा क्यों पूरी होती दिखाई नहीं दे रही थी?
5. गुरु गोबिंद सिंह की पत्नी ने अपने पुत्रों के बलिदान पर मिठाई क्यों बाँटी?
6. बिस्मिल अंतिम समय के लिए अपनी माँ से क्या वर माँगते हैं?

### (ख) लिखित

1. बिस्मिल की माँ ने अपनी शिक्षा प्राप्त करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए?
2. बिस्मिल की आत्मिक, धार्मिक और सामाजिक उन्नति में उनकी माता का क्या योगदान रहा?
3. बिस्मिल की चारित्रिक विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए ।
4. आपको बिस्मिल की माता के किन गुणों ने सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों?
5. इस पाठ का शीर्षक 'मेरी माँ' सर्वथा उपयुक्त है। टिप्पणी कीजिए ।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए –

   शिक्षा क्षमा अक्षर अपेक्षा इच्छा छत मच्छर तुच्छ

   प्रायः देखा गया है कि कुछ लोग 'क्ष' का उच्चारण 'छ' या 'च्छ' के रूप में करते हैं जो अशुद्ध है । वास्तव में 'छ' के उच्चारण में जीभ का अग्र भाग तालु से सटाना पड़ता है, जबकि 'क्ष' वर्ण 'क् + ष्' के योग से बना संयुक्त व्यंजन है। इसके लिए जीभ को मूर्धा के पास ले जाकर बोलना पड़ता है जिससे हवा रगड़ खाती हुई बाहर निकलती है। वास्तव में 'क्ष' का प्रयोग केवल संस्कृत से आए शब्दों में होता है, किंतु हिंदी में कई बार इसका उच्चारण 'छ' के रूप में कर दिया जाता है; जैसे – 'लक्ष्मण' का लछमण, जो अशुद्ध है।

   'क्ष' 'छ' और 'च्छ' से युक्त तीन-तीन शब्द लिखिए और उनका शुद्ध उच्चारण कीजिए।

2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए –

   माँ डाँट यहाँ करूँ हूँ मैं दिनों भेंट नहीं हैं

   ध्यान दीजिए उपर्युक्त अनुनासिक ध्वनियों के उच्चारण के समय हवा नाक और

मुँह दोनों से निकलती है । हिंदी के सभी स्वर अनुनासिक भी होते हैं । अनुनासिक ध्वनियों के लिए चंद्रबिंदु ( ँ ) लगाया जाता है किंतु यह चंद्रबिंदु उन स्वरों और उन मात्राओं पर लगता है जो शिरोरेखा के ऊपर न जाते हों; जैसे – चाँद, ऊँट । अगर शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर अनुस्वार या बिंदु ( ं ) लगता है; जैसे – ऐंठना, सींचना। चंद्रबिंदु और बिंदु वाले पाँच-पाँच अनुनासिक शब्द लिखिए ।

3. पाठ में कई ऐसे शब्द हैं जिनके अंत में प्रत्यय लगे हैं। प्रत्यय के योग से कभी-कभी शब्द के मूल रूप में परिवर्तन आ जाता है; जैसे – धर्म + इक = धार्मिक। निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय छाँट कर उनके सामने लिखिए –

| | | | |
|---|---|---|---|
| धृष्टता | ——— | सामाजिक | ——— |
| वर्णनीय | ——— | कलंकित | ——— |
| व्यक्तित्व | ——— | दृढ़ता | ——— |

4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(क) मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है ।

(ख) माताजी ने किस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया।

उपर्युक्त वाक्य (क) और (ख) सरल वाक्य हैं । सरल वाक्य में एक ही विधेय अथवा क्रिया होती है । ये सरल वाक्य संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य के संदर्भ में उपवाक्य हो जाते हैं । यदि वाक्य (क) और (ख ) के योग से मिश्र वाक्य बनाया जाए तो उसमें सरल वाक्य (क) प्रधान उपवाक्य होगा और सरल वाक्य (ख) आश्रित उपवाक्य हो जाएगा, यथा –

मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि माताजी ने किस प्रकार अपनी देववाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया ।

निम्नलिखित सरल वाक्यों के मिश्र वाक्य बनाइए । योजक कोष्ठक में दिए गए हैं ।

1. (क) मुझे ऐसी माता न मिलतीं ।
   (ख) मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँस कर जीवन निर्वाह करता । (यदि —- तो )
2. (क) माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था ।
   (ख) किसी की प्राणहानि न हो । (कि)

5. हर्ष, विषाद, घृणा, आश्चर्य, प्रार्थना आदि का भाव प्रकट करने के लिए अथवा संबोधन के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग होता है; जैसे –

   जन्मदात्री जननी ! इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण उतारने के प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला ।

   उपर्युक्त वाक्य में 'जन्मदात्री जननी' के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग यह प्रकट करता है कि इसमें जन्मदात्री जननी को संबोधित करते हुए उससे प्रार्थना की गई है।

   इस पाठ से विस्मयादिबोधक चिह्नों से युक्त तीन वाक्य ढूँढ़िए और यह भी बताइए कि उस चिह्न से क्या भाव प्रकट होता है।

## योग्यता-विस्तार

1. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में रामप्रसाद 'बिस्मिल', चंद्रशेखर 'आज़ाद', भगत सिंह, यतींद्रनाथ मुखर्जी, अशफ़ाक उल्ला, राजगुरु जैसे क्रांतिकारियों के योगदान के बारे में पढ़िए और उनमें से किन्हीं दो के संबंध में भित्ति पत्रिका के लिए सचित्र लेख तैयार कीजिए ।

2. किसी एक ऐसे महापुरुष के संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए जिनके जीवन निर्माण में उनकी माता का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा हो ।
3. रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**प्रोत्साहन** - उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना

**सद्व्यवहार** - अच्छा व्यवहार, अच्छा चाल-चलन

**संकल्प** - दृढ़ निश्चय

**वकालतनामा** - अदालत में पैरवी करने का अधिकार पत्र

**नितांत** - बिलकुल, पूरी तरह

**जीवन निर्वाह** - जीवन व्यतीत करना, जीवन जीना

**मेजिनी** - मेजिनी (1805-1875) का जन्म इटली में हुआ था। वह लोकतंत्र का प्रबल समर्थक, परम देशभक्त, सक्रिय और निर्भीक नेता था। अनेक भागों में बँटे इटली को एक करने में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। वह ऑस्ट्रियन शासन से इटली को मुक्त कराने के लिए जीवन भर लड़ता रहा

**जन्मदात्री** - जन्म देने वाली, माता, माँ

**अवर्णनीय** - जिसका वर्णन न हो सके

**धृष्टता** - उद्दंडता, ढिठाई, दुस्साहस

**आत्मिक** - आत्मा से संबंधित

**जन्म-जन्मांतर** - अनेक जन्मों तक

**सांत्वना** - तसल्ली देना, ढाढ़स बँधाना

**धर्म-रक्षार्थ** - धर्म की रक्षा के लिए

**विचलित** - अस्थिर, डिगा हुआ, चंचल

# 6. शिष्टाचार

(मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में सभ्य नागरिक के रूप में व्यवहार करने के लिए निर्धारित नियमों को 'शिष्टाचार' कहते हैं। प्रस्तुत पाठ में जीवन में अपनाए जाने वाले नियमों की चर्चा की गई है और जीवन में शिष्ट व्यवहार का महत्त्व बताया गया है।)

मेरे पड़ोस में दो बच्चे रहते हैं – प्रदीप और भुवन। प्रदीप जब कभी मेरे पास आता है, पहले हाथ जोड़कर नमस्ते करता है, फिर 'चाचाजी' कहकर मुझसे बात करता है। बड़े ही मृदुल और शांत स्वर में वह बोलता है। किंतु भुवन दूसरी ही तरह से बात करता है। दूर से ही चिल्लाता हुआ आता है, "मुन्नी के बाबूजी, आपको मेरे बाबूजी बुला रहे हैं।"

आसपास के सभी लोग प्रदीप की प्रशंसा करते नहीं थकते और भुवन का व्यवहार सबको अनुचित लगता है। यों भुवन पढ़ने में तेज़ है और प्रदीप की अपेक्षा उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा है, फिर भी लोगों की प्रशंसा का पात्र प्रदीप ही है। इसका कारण यह है कि प्रदीप का बोल-व्यवहार लोगों का मन लुभा लेता है। दूसरे शब्दों में यों कहें कि प्रदीप का व्यवहार शिष्ट है जबकि भुवन का अशिष्ट।

समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए शिष्टाचार के नियम अवश्य जानने

चाहिए और उन्हें अपनी आदत में सम्मिलित कर लेना चाहिए । यह भी ध्यान रखना चाहिए कि अलग-अलग समाजों में शिष्टाचार के नियम भिन्न-भिन्न हैं, यद्यपि उनके आधार प्रायः समान ही हैं।

शिष्टाचार का सबसे पहला गुण है, विनम्रता। हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार में विनम्रता घुली होनी चाहिए। इसीलिए किसी बड़े के बुलाने पर 'हाँ', 'अच्छा', 'क्या' न कहकर 'जी हाँ' या 'जी नहीं' कहना चाहिए। किसी की बात का उत्तर ऐसे नहीं देना चाहिए कि सुननेवालों को लगे कि लट्ठ मारा जा रहा है।

विनम्रता केवल बड़ों के प्रति नहीं होती। बराबर वालों और अपने से छोटों के प्रति भी नम्रता और स्नेह का भाव होना चाहिए। सभी से बोलते हुए हमारी वाणी में मिठास रहनी चाहिए, कटुता या कर्कशता नहीं।

विनम्रता केवल भाषा की वस्तु नहीं। हमारे कर्म में भी विनम्रता होनी चाहिए। अपने यहाँ किसी के आने पर हमें उसका प्रसन्नता से स्वागत और यथोचित सत्कार करना चाहिए। अपने से बड़े व्यक्तियों के बैठ जाने के बाद ही हमें बैठना चाहिए।

महिलाओं के प्रति हमारे व्यवहार में और भी विनम्रता का होना आवश्यक है। बस या रेल में किसी महिला को खड़ी देखकर अपनी सीट उन्हें बैठने के लिए देना शिष्ट आचरण है।

अपने से बड़े व्यक्तियों के समाज में ठहाका लगाकर हँसना या ज़ोर से बोलना अनुचित माना जाता है। इसीप्रकार बड़े लोगों के साथ चलते समय उनके आगे चलने लगना भी अशिष्टता है। हाँ, उनके लिए झट-से आगे होकर दरवाज़ा खोल देना या राह दिखाना शिष्ट व्यवहार है।

विनम्रता और दीनता में अंतर है। विनम्र होते हुए भी हम अपने स्वाभिमान की रक्षा कर सकते हैं। विनम्र व्यवहार का अर्थ चापलूसी नहीं है। यदि कभी यह महसूस हो कि जिसके प्रति हम विनीत हैं वह हमारा तिरस्कार कर रहा है अथवा हमें दीन-हीन जानकर हमारे प्रति दया की भावना प्रकट कर रहा है, तो उसकी कृपा प्राप्त करने की चेष्टा हमें नहीं करनी चाहिए।

शिष्टाचार का दूसरा विशेष गुण है दूसरों की निजी बातों में दखल न देना। हर व्यक्ति का अपना एक निजी जीवन होता है। इसीलिए हमें अकारण किसी से उसका वेतन, उम्र, जाति, धर्म आदि पूछने से बचना चाहिए। यदि कोई कुछ लिख रहा है तो झाँक-झाँक कर उसे पढ़ने की चेष्टा करना

उजड्डपन कहा जाएगा। किसी के घर या दफ़्तर जाने पर उसकी वस्तुओं को बिना पूछे उलटने-पलटने लगना अशिष्टता है।

किसी का नाम लेने या लिखने के पहले श्री, श्रीमती या कुमारी लगाना अच्छी आदत है। कुछ लोग इनके स्थान पर पंडित, डॉक्टर, बाबू, लाला, मियाँ, मिर्ज़ा – जब जैसी आवश्यकता होती है, लगाते हैं। इसी तरह कुछ लोग नाम के बाद 'जी' लगाते हैं।

यदि कोई कुछ कष्ट या असुविधा उठाकर हमारे लिए कोई काम करता है तो हमें उसके प्रति अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। इसका सबसे सरल तरीका है उसे धन्यवाद देना। यदि बस या रेल में कोई अपनी जगह हमें बैठने के लिए देता है तो उसे धन्यवाद अवश्य देना चाहिए। 'धन्यवाद' शब्द बोलते समय ऐसा लगना चाहिए कि हम उसे हृदय से धन्यवाद दे रहे हैं, केवल ऊपर-ऊपर से नहीं।

औरों के साथ भोजन करते समय हमें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। हमें खाने में अधीरता नहीं दिखानी चाहिए। चबाने में मुँह से आवाज़ करना अच्छा नहीं माना जाता। अपने से बड़ों के भोजन समाप्त कर देने पर भी खाते रहना उचित नहीं है। यदि हमारे घर कोई अतिथि भोजन कर रहे हों तो उनकी रुचि का भोजन बनवाना उचित है। पर जब वे खा रहे हों तब उनके मना करने पर भी रोटी, पूड़ी, सब्ज़ी आदि उनकी थाली में ज़बरदस्ती नहीं डालनी चाहिए।

शिष्टता का तीसरा आधार अनुशासन का पालन है। अनुशासन समाज के नैतिक नियमों का भी हो सकता है और कानून की धाराओं का भी। उदाहरण के लिए किसी मंदिर, गुरुद्वारे या मस्जिद में जाने के पहले जूते उतार देना धार्मिक अनुशासन का पालन है। सड़क पर बाईं ओर चलना या जहाँ जाना मना हो, वहाँ न जाना, कानून के अनुशासन का पालन है। समय का पालन करना सामाजिक नियमों का पालन है। ठीक समय पर कहीं पहुँचना अनुशासन भी सिखाता है और लाभ भी पहुँचाता है।

हमें हरतरह के अनुशासनों का सामान्य ज्ञान होना ही चाहिए, जैसे, किसी सभा में शोर मचाना अनुचित है। किसी वक्ता को अपनी बात कहने का मौका न देना अशिष्टता है। राष्ट्रगान के अवसर पर बैठे रहना या चलना या झूमना अशिष्ट व्यवहार है। जहाँ सब लोग बैठे हों वहाँ लेट जाना या पैर फैलाकर बैठना बहुत अनुचित है। कभी-कभी थक जाने पर इच्छा होती है कि कुरसी पर पैर रखकर बैठें या चारपाई पर निढाल होकर पड़े रहें। अन्य लोगों की उपस्थिति में हमें अपनी ऐसी इच्छा को दबा देना चाहिए। अपने मन को संयम में रखना शिष्ट व्यवहार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि शिष्टाचार वह व्यवहार है जिसके करने पर दूसरों के तथा अपने मन को प्रसन्नता होती है। इसके विपरीत अशिष्ट व्यवहार से दूसरों का दिल दुखता है और उससे अंत में हानि भी होती है।

*– रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'*

## प्रश्न-अभ्यास

## बोध और विचार

### (क) मौखिक

1. प्रदीप सबका मन क्यों मोह लेता है?
2. भुवन का व्यवहार सबको अच्छा क्यों नहीं लगता?
3. समाज में सभ्य बनकर रहने के लिए क्या जानना चाहिए?
4. व्यक्ति की विनम्रता का पता कैसे चलता है?
5. धन्यवाद कब और कैसे देना चाहिए?
6. लेखक ने शिष्टता के कौन-से तीन गुण बताए हैं?

### (ख) लिखित

1. लेखक ने प्रदीप के व्यवहार को शिष्ट और भुवन के व्यवहार को अशिष्ट क्यों कहा है?
2. निम्नलिखित अवसरों पर हमें कैसा आचरण करना चाहिए –
   (क) जब घर में कोई मेहमान आए।
   (ख) जब कोई हमारे लिए कुछ काम करे।
   (ग) जब हम भोजन कर रहे हों।
   (घ) जब मेहमान को भोजन करा रहे हों।
   (ङ) जब हम सभा में बैठे हों।
   (च) जब राष्ट्रगान गाया जा रहा हो।
   (छ) जब हम धार्मिक स्थानों पर जाएँ।

3. शिष्टाचार में किन प्रमुख बातों को महत्त्व दिया जाना चाहिए?
4. विनम्रता और दीनता में क्या अंतर है?
5. धार्मिक, कानूनी और सामाजिक अनुशासन से क्या अभिप्राय है?
6. स्तंभ 'क' से स्तंभ 'ख' में आए शब्दों को इस प्रकार मिलाइए कि उनसे शिष्ट आचरण का बोध हो –

| **क** | **ख** |
|---|---|
| छोटों के प्रति | आदर |
| बड़ों के प्रति | मिठास |
| सहायक के प्रति | विनम्रता |
| वाणी में | कृतज्ञता |
| व्यवहार में | स्नेह |

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए –
   सभ्य, शिष्ट, अवश्य, प्रदीप, विनम्रता, प्रसन्नता, सत्कार, अत्यंत, सामान्य, उपस्थिति।
   उपर्युक्त शब्द संयुक्ताक्षर से युक्त हैं। इनके उच्चारण और वर्तनी में सावधानी बरतना आवश्यक है।
2. 'शिष्टाचार' शब्द मूलतः 'शिष्ट + आचार' शब्दों के योग से बना है। पूर्व पद 'शिष्ट' की अंतिम ध्वनि 'अ' और उत्तर पद 'आचार' की प्रारंभिक ध्वनि 'आ' मिलकर 'आ' बन जाते हैं। इस प्रक्रिया को 'संधि' कहते हैं। यहाँ स्वर 'अ' और स्वर 'आ' के योग से हुई संधि 'स्वर संधि' है। स्वरों के मिलने से स्वरों का जो रूप परिवर्तित होता है, वह स्वर संधि कहलाता है; जैसे –

अ + अ = आ, इ + ई = ई, उ + ऊ = ऊ, अ + इ = ए, आ + ई = ए

निम्नलिखित में संधि कीजिए –

स्व + अभिमान (अ + अ = आ)

सु + उक्ति (उ + उ = ऊ)

हिम + आलय (अ + आ = आ)

नर + ईश (अ + ई = ए)

मुनि + ईश (इ + ई = ई)

रमा + ईश (आ + ई = ए)

रजनी + ईश (ई + ई = ई)

3. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए –

विनम्रता, कटुता, कर्कशता, अशिष्टता, दीनता

उपर्युक्त शब्दों में विनम्र, कटु, कर्कश, अशिष्ट, दीन शब्द विशेषण हैं। इन शब्दों में - 'ता' के योग से शब्दों के अर्थ में कुछ परिवर्तन आ गया है। अंत में -'ता' प्रत्यय जुड़ जाने से वे भाववाचक संज्ञा बन गए हैं।

इसी प्रकार के पाँच शब्द पाठ से छाँट कर मूल शब्द और प्रत्यय को पृथक कीजिए।

4. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए –

**उदाहरण** – बच्चे ने दूध पिया। (माँ) => माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

नौकरानी ने कपड़े धोए। (माँ) => माँ ने नौकरानी से कपड़े धुलवाए।

(क) मिस्त्री ने मकान बनाया। (मालिक)

(ख) भुवन शिष्टाचार के नियमों का पालन करता है। (अध्यापक)

(ग) गाय ने घास खाई। (ग्वाला)

(घ) नौकरानी ने बच्चे को सुलाया। (माँ)

5. निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए –

हमें अकारण किसी से उसका वेतन, उम्र, जाति, धर्म आदि पूछने से बचना चाहिए।

इस वाक्य के बीच में अल्पविराम (,) है। समानपदी शब्दों का प्रयोग होने पर प्रत्येक शब्द के बाद अल्पविराम लगता है। किंतु ऐसे शब्दों के बाद 'आदि' शब्द का अथवा अंतिम शब्द के पहले 'और' का प्रयोग होता है; जैसे – उम्र, जाति, धर्म आदि। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई।

निम्नलिखित वाक्यों में यथास्थान अल्पविराम लगाइए –

(क) जब वे खा रहे हों तब उनके मना करने पर रोटी पूड़ी सब्ज़ी आदि उनकी थाली में ज़बरदस्ती नहीं डालनी चाहिए।

(ख) ज़मीदार अपनी भूमि संपत्ति प्रतिष्ठा मान मर्यादा सभी कुछ गँवा बैठा।

## योग्यता-विस्तार

1. 'दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार कीजिए जैसा आप अपने साथ चाहते हैं।' इस कथन को ध्यान में रखते हुए कुछ अपेक्षित शिष्ट व्यवहारों की सूची को कक्षा में चार्ट के रूप में प्रस्तुत कीजिए।
2. किसी देखी-सुनी अथवा पढ़ी घटना का वर्णन कीजिए जिसमें अशिष्ट व्यवहार के कारण किसी व्यक्ति को हानि उठानी पड़ी हो अथवा अपमानित होना पड़ा हो।
3. हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेज़ी भाषा की सूक्तियों का ऐसा चार्ट बनाइए जिसमें मीठी बोली के महत्त्व को दर्शाया गया हो।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**शिष्टाचार** - सभ्य व्यवहार, अच्छा आचरण

**मृदुल** - कोमल, मधुर

**लट्ठ मारना** - बोली में कठोरता होना, अप्रिय वचन बोलना

**यथोचित** - ठीक, मुनासिब

**कटुता** - कड़वाहट

**कर्कशता** - कठोरता

**सत्कार** - आदर

**दीन-हीन होना** - आत्मसम्मान खोना

**अकारण** - बिना कारण का, बिना वजह का

**उजड्डपन** - गँवारपन, असभ्यता

**निढाल** - थका-माँदा, उत्साहहीन, सुस्त
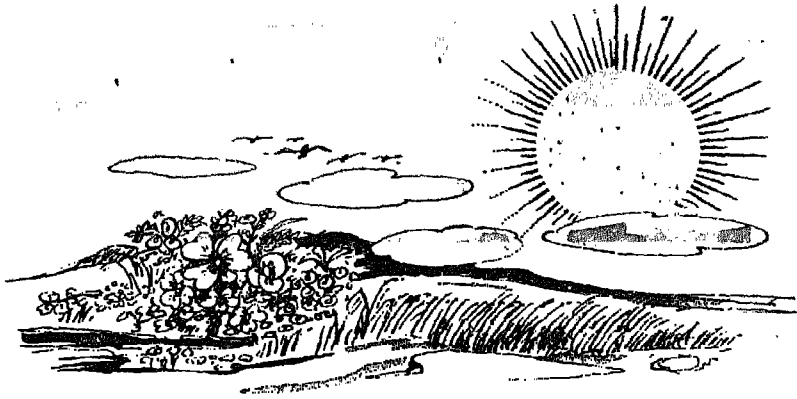
# 7. मेरी भी आभा है इसमें

(नए युग की नई सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में, फूलों के सौंदर्य और सुवास में, सुनहली फ़सलों अर्थात् भौतिक संपदा की श्रीवृद्धि में प्रगतिशील चिंतकों, कवि-कलाकारों, श्रमिकों, कृषकों आदि की भागीदारी और योगदान है। इसलिए कवि इनके प्रतिनिधि के रूप में इनमें अपनी आभा अर्थात् अपना योगदान और भागीदारी देख रहा है।)

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।

भीनी-भीनी खुशबू वाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था।

पकी सुनहली फ़सलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें इसमें मुसकाती हैं।
नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।

*— नागार्जुन*

## बोध और सराहना

### (क) मौखिक

1. नए आसमान का नया सूरज क्या है?
2. विशाल धरती की दमक का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए ।
3. रंग-बिरंगे फूल खिलाने के लिए कवि को क्या करना पड़ा?
4. फ़सलों से खलिहान के भर जाने का क्या रहस्य था?

### (ख) लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए —
   (क) कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
   कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था।
   (ख) मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें इसमें मुसकाती हैं।

2. 'संसार को सुंदर और धन-धान्य पूर्ण बनाने में मनुष्य के सोच-विचार, आकांक्षा और श्रम का बड़ा महत्त्व है।' इस कविता के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए ।

## योग्यता-विस्तार

अपने घर और विद्यालय को सजाने, सँवारने और अन्य क्रिया-कलापों में अपने योगदान पर विचार कीजिए और बताइए कि क्या वह आपको संतोषजनक लगता है?

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**नए गगन में नया सूर्य** - नए युग का नया प्रकाश
**आभा** - चमक, योगदान, भागीदारी
**सपनों ने सहलाया** - फूल खिलने के सपने देखे, आकांक्षा की, कल्पना की
**खलिहान** - कटी फ़सल को इकट्ठा रखने का स्थान
**शोणित** - रक्त
**विशाल भूखंड** - लंबी-चौड़ी धरती का टुकड़ा
**प्राणों ने नहलाया** - पूरी शक्ति और मन से सींचा

# 8. जीता कौन?

(प्रस्तुत पाठ में कछुए और खरगोश की प्रचलित पुरानी कहानी को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक युवा खरगोश अपने पूर्वजों की पराजय के कलंक को धो देने का निश्चय करता है। वह अपनी बदनामी से मुक्ति पाने के लिए एक बार पुनः दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन करवाता है फिर भी इतिहास को नहीं बदल पाता। यह सब कैसे हुआ, प्रस्तुत पाठ में इसे अत्यंत व्यंग्यात्मक एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।)

'दौड़ में कछुआ खरगोश को हरा देता है' – यह उक्ति सुनते-सुनते जब कान पक गए तो एक युवा खरगोश तैश खा गया। न जाने वह कौन-सा पूर्वज था जो बीच दौड़ में सो गया और हमेशा-हमेशा के लिए खरगोश जाति के मुँह पर कालिख पोत गया ! भला कहाँ कछुआ और कहाँ खरगोश ! एक बीस बार पैर मारकर मुश्किल से दस सेंटीमीटर सरकता है और दूसरा एक छलांग में कई मीटर नाप देता है। फिर भी सदियों से हारा हुआ कहलवाता चला आ रहा है। है न घोर अनर्थ ! घोर नाइंसाफ़ी ! वह भी मात्र एक पूर्वज की गलती के कारण। न जाने कौन-सा नशा करके दौड़ा था या फिर अपनी टाँगों की उछाल और रफ़्तार के घमंड में चूर हो गया था। बीच दौड़ में टाँगें पसार कर बेफ़िक्र सो गया और अब कलंक का बोझ सारी कौम ढो रही है। कोई बात हुई भला ! आहत खरगोश ने इस सदियों पुराने कलंक को धोने की ठान ली

और शहर के कछुओं से भरे सबसे बड़े तालाब के किनारे जा एक बार फिर से दौड़ की चुनौती दे डाली।

चुनौती की गर्जना सुनकर कछुए स्तब्ध रह गए। मुँह से एक बोल भी नहीं फूटा। उत्तर ही नहीं सूझा। दौड़ में अच्छी-खासी प्राचीन ख्याति चली आ रही थी। आज यह कौन सिरफिरा चुनौती देने आ पहुँचा। हर कछुए ने जब से होश सँभाला था, खरगोश से दौड़ जीतने का तमगा गले में लटका पाया था। अब इसे दोबारा सिद्ध करने की क्या ज़रूरत आ पड़ी। एक बुज़ुर्ग कछुए ने बात टालने की कोशिश की, "भाई खरगोश, अब दौड़ की क्या ज़रूरत है, दौड़ जो होनी थी हो चुकी। सारे ज़माने को उसके नतीजे का पता है। अब बार-बार तो दौड़ नहीं होती।"

"कैसे नहीं होती ! वह दौड़ एक धोखा थी, फ़रेब थी। हमारी जात को बदनाम करने का षड्यंत्र था। मैं उस दौड़ को नहीं मानता। अगर तुम दौड़ में सचमुच जीत सकते हो तो आओ मुझसे जीतकर दिखाओ।" खरगोश आपे से बाहर हो गया।

तैश खाने में कुछ नहीं रखा था। अतः बुज़ुर्ग कछुए ने शालीन तर्क प्रस्तुत किया, "देखो, तुम जवान खून हो। हम वृद्ध हो चुके हैं। अब तुमसे क्या दौड़ लगाएँगे। जवानी में कुछ कहते तो सोचते भी।"

"बनो मत, खून तो तुम्हारे यहाँ भी जवान है। सारे कछुए वृद्ध नहीं हुए हैं। मैं तो किसी भी एक से दौड़ लगाने को तैयार हूँ। है कोई माई का लाल कछुओं में !" खरगोश ने ताल ठोककर दो बार उछाल भरी।
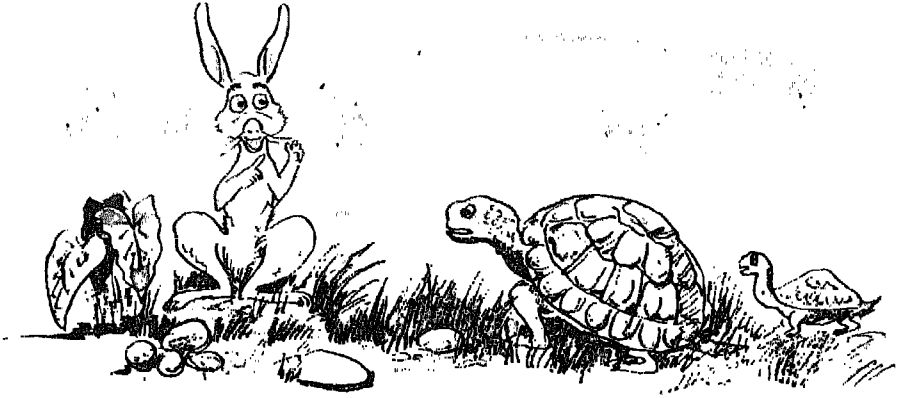
माई के लाल तो सभी थे, लेकिन अवसर इसका दावा करने का नहीं था। कछुए जितना बचना चाह रहे थे, खरगोश उतना ही लपेट रहा था। चुनौती स्वीकार करने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता था। इस बात की क्या गारंटी थी कि इस बार भी खरगोश वही पुरानी गलती को दोहराएगा। खामखाह इतिहास बदल जाएगा। कहावत उलट जाएगी। मुँह काला हो जाएगा। चुनौती उठाने का अर्थ था — आ बैल मुझे मार। निर्बलता के दामन में संतोष मशरूम की तरह बढ़ता रहता है। सो, ज़ब्त खाकर बचाव का पैंतरा फेंका, "भाई, हम झगड़े-फ़साद में विश्वास नहीं करते। जैसे चल रहा है वैसे ही चलने दो। हमें अब कोई दौड़ नहीं लगानी।"

लेकिन खरगोश तो ठानकर आया था कि जैसा चल रहा है वैसा नहीं चलने देगा। पूर्वजों का कलंक तो वह धोकर रहेगा। वह गरजा, "लगानी कैसे नहीं है। अगर दौड़ नहीं लगानी तो हार माननी पड़ेगी। घोषणा करनी होगी कि खरगोश से दौड़ हार गए। अब कभी कछुए को दौड़ में खरगोश से जीता हुआ नहीं समझा जाएगा।"

कछुए चुप्पी साध गए।

अब अचानक खरगोश को अपनी भूल का एहसास हुआ। उसे 'प्रेस' को साथ लाना चाहिए था। कोई संवाददाता होता जो उसकी इस दमदार चुनौती को सनसनीखेज़ समाचार के रूप में प्रसारित करता। दूरदर्शन पर भी देता। अगर कछुए इसी तरह टाल-मटोल करते रहे तो कैसे होगी दौड़? कैसे हो सकेगा खरगोश जाति का मुँह उजला? कैसे धुलेगी परंपरागत कालिख? उसकी चुनौती को, प्रस्तावित दौड़ को और उसके परिणाम को पूरे प्रचार-प्रसार की ज़रूरत थी। स्थानीय या राष्ट्रीय नहीं, अंतर्राष्ट्रीय जगत में भी। उस कलमुँही कहावत का भी तो विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होकर सदियों से जमकर प्रचार हुआ है। अतः सोच-समझकर खरगोश ने नया पासा फेंका, "मैं कल फिर इसी समय आऊँगा। इस बार मेरे साथ प्रेस और फ़ोटोग्राफ़र भी होंगे। अगर कोई कछुआ दौड़ लगाने के लिए राज़ी नहीं हुआ तो समझ लो कहावत बदल जाएगी। देश-विदेश के अखबारों में छपेगा कि अब खरगोश कछुए से दौड़ जीत गया है। खुली चुनौती के बाद भी कोई कछुआ दौड़ में खरगोश को नहीं हरा सका। वह कहावत कोई तुम्हारी जागीर नहीं है जिसका फ़ायदा तुम लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी उठाते चले जाओगे।"

खरगोश तो उफ़नता-बिफ़रता अगले दिन आने के लिए कहकर लौट गया, लेकिन कछुओं की चेतना घंटों तक नहीं लौटी। बैठे-बिठाए किस मुसीबत में पड़ गए। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। ये अचानक खरगोश की मति कैसे फिर गई। गहन मंत्रणा करने के लिए सभी कछुए अपने मुखिया

के चारों ओर सिमट गए।

चिंतातुर मुखिया की वाणी गंभीर हो गई थी, "यह हमारे लिए घोर संकट की घड़ी है। लगता है यह खरगोश बिना दौड़ लगाए नहीं मानेगा और हम इस दौड़ को जीत नहीं सकते। मुझे कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। हाँ, इस संकट में अगर हमारी कोई सहायता कर सकता है तो वह है 'मनुष्य'। उसमें सोचने-समझने की ताकत हमसे कुछ ज़्यादा है। ईश्वर ने उसके मस्तिष्क का आकार-प्रकार हमसे बड़ा और ज़्यादा पेचीदा बनाया है। उसमें दिन-रात नई-नई खुराफ़ातें पकती रहती हैं। अगर वह हमारी सहायता करना चाहे तो कोई-न-कोई जुगाड़ ज़रूर निकाल लेगा।"

"लेकिन मनुष्य जाति तो बहुत लालची होती है। बिना फ़ायदा देखे तो एक फली भी नहीं फोड़ती। हमारी सहायता क्यों करेगी?" एक बुज़ुर्ग कछुए ने टोका।

मुखिया बुज़ुर्ग से सहमत था। बुज़ुर्ग कछुए ने सवासोलह आने सच कहा था। उसके अपने अनुभव का यही निचोड़ था। लेकिन इस बार प्रश्न इतना विकट था कि कछुआ जाति हर ओखली में सिर देने को तैयार थी। सब कुछ दाँव पर लगा था — पूर्वजों की इज्ज़त, गौरवशाली परंपरा, उज्ज्वल इतिहास। अतः उसने भी खुलकर खेलने की ठान ली। तालाब में डुबकी लगाई और तलहटी में छिपाई स्वर्ण मुद्राओं की थैली निकाल लाया। यह स्वर्ण मुद्राओं की थैली पाँच सौ वर्ष पूर्व एक श्रेष्ठी की गाँठ से निकलकर उस समय तलहटी में पहुँच गई थी जब वह इस प्राचीन तालाब में डुबकियाँ लगा रहा था। इस

थैली की खोज मुखिया के पूर्वजों ने की थी और तभी से यह एक पुश्तैनी धरोहर बनकर पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसके परिवार के पास चली आती थी। शायद आज उसके सदुपयोग का उचित अवसर आ गया था।

स्वर्ण मुद्राओं की थैली लेकर कछुओं का मुखिया मनुष्य जाति के प्रसिद्ध वकील तिकड़मदास के पास पहुँचा । रो-रोकर अपनी सारी व्यथा सुनाई और सहायता के लिए पुरज़ोर गुहार की। नामी वकील तिकड़मदास ने मुँह टेढ़ा कर लिया। उलाहना दिया, "कछुए होकर खरगोश से दौड़ जीतना चाहते हो ! खरगोश की छलाँग देखी है कभी?"

कछुए ने तिकड़मदास के सामने स्वर्ण मुद्राओं की थैली खोल दी। थैली खुलते ही स्वर्ण मुद्राएँ बिखरकर फैल गईं। तिकड़मदास ने आँखों ही आँखों में गिनती कर ली। खरे सोने की पूरी इक्कीस मुद्राएँ थीं। सहज स्वाभाविक प्रतिक्रिया हुई। उसकी आँखों में चमक और आवाज़ में सहानुभूति उमड़ पड़ी, "तुम मुझसे आखिर क्या चाहते हो?"

तिकड़मदास ने दो मिनट सोचा। फिर स्वर्ण मुद्राएँ बटोरीं और बोला, "जाओ, तुम्हारी इज्ज़त बची रहेगी। अब जब खरगोश आए तो उसे मेरे पास ले आना। कहना कि यह प्रतियोगिता मेरी देख-रेख में होगी। बाकी सारी बात मैं सँभाल लूँगा। तुम निश्चिंत रहो।"

कछुआ और बहुत सारी बातें कहना और जानना चाहता था, लेकिन तिकड़मदास आगे कुछ भी बोलने-बताने के मूड में नहीं थे। अतः कछुआ मन मसोसकर वापस लौट आया।

उसको यह नहीं बताया गया था कि तिकड़मदास सारी बात कैसे सँभालेगा? जब सारी कौम पर संकट हो तब भला मौखिक आश्वासन से मुखिया कैसे निश्चिंत हो सकता था। उसे तो यह भी नहीं बताया गया था कि दौड़ होगी या नहीं? दौड़ हुई तो जीत कैसे होगी? मुखिया के साथ-साथ सारी जाति चिंतित थी। एक ने कह ही दिया, "मुझे तो लगता है कि स्वर्ण मुद्राएँ बेकार ही गईं। मनुष्य भला खरगोश से हमें कैसे जिताएगा! हमारी जगह खुद तो दौड़ने से रहा।"

सुनकर मुखिया ने आँखें तरेरीं, "तू अभी मनुष्य स्वभाव को नहीं जानता। पैसे की खातिर वह सब कुछ कर सकता है। आज के दिन उसमें कहीं ईमानदारी बाकी है तो बस बेईमानी के कामों में ही। तू देखता रह, स्वर्ण मुद्राएँ बेकार नहीं जाएँगी। अपना तिकड़मदास कोई न कोई तिकड़म भिड़ाकर रहेगा।"

अगले दिन जब खरगोश आया तो कछुआ उसे तिकड़मदास के पास ले गया। खरगोश अपने साथ दो प्रेस संवाददाता भी लाया था। खरगोश अपनी जीत के लिए इतना आश्वस्त था कि तिकड़मदास को इस दौड़ का रैफ़री बनाने में भी उसे कोई एतराज नहीं हुआ।

तिकड़मदास रैफ़री ने प्रतियोगिता की शर्तें गिनानी प्रारंभ कीं, "यह एक लंबी दौड़ होगी, जिसमें प्रतियोगी दस किलोमीटर की दूरी एक बार में तय करेंगे।"

"मुझे मंज़ूर है, लेकिन इस दौड़ के विजेता के गले में फूलों की माला

डालकर उसका फ़ोटो खींचा जाना चाहिए, जो अखबारों में भी छपना चाहिए और दूरदर्शन पर भी दिखाया जाना चाहिए।" खरगोश ने अपना प्रस्ताव रखा। वह निश्चित जीत का कल्पना-चित्र साकार देख रहा था।

तिकड़मदास ने दूसरी शर्त रखी, "दौड़ शुरू कराकर हम कार से प्रेस फ़ोटोग्राफ़र को लेकर निश्चित स्थान पर पहुँचेंगे। जो प्रतियोगी दस किलोमीटर दौड़कर निश्चित स्थान पर पहले पहुँचेगा, उसे ही विजेता घोषित किया जाएगा।"

तिकड़मदास ने तीसरी शर्त रखी, "पहले पहुँचने वाले प्रतियोगी को विजेता घोषित किया जाएगा। यह घोषणा अंतिम और सर्वमान्य होगी। इसकी कोई अपील नहीं होगी। इस दौड़ में हारे हुए प्रतियोगी को या उसकी कौम के किसी सदस्य को फिर कभी भविष्य में दूसरे प्रतियोगी की कौम को दौड़ के लिए चुनौती देने का अधिकार नहीं रह जाएगा। कछुओं और खरगोशों के बीच यह सदा-सदा के लिए अंतिम और मान्यताप्राप्त मुकाबला होगा ।"

खरगोश खुशी से झूम उठा। यही तो वह चाहता था। उसने भी तीसरा प्रस्ताव रखा, "क्या इस प्रतियोगिता को टी.वी. पर नहीं दिखाया जा सकता?"

"केवल अंतिम स्थल पर विजय के क्षणों को टी.वी. पर दिखाया जाएगा।" यहाँ तिकड़मदास ने खरगोश का मन रख लिया था।

प्रतियोगिता का दिन और समय तय करके सभी चले गए थे लेकिन कछुओं का मुखिया अभी भी सिर झुकाए चिंताग्रस्त खड़ा था। चाहकर भी वह स्वर्ण मुद्राओं के साथ अपनी चिंता मनुष्य को स्थानांतरित नहीं कर सका था।

वकील तिकड़मदास ने उसे देखा, मुसकराया और बोला, "कल हम तालाब के किनारे स्वयं आएँगे और बताएँगे कि कछुओं की ओर से इस दौड़ में कौन दौड़ेगा । अब तुम जाओ।"

मनुष्य के पेचीदा मस्तिष्क और अपनी खरी स्वर्ण मुद्राओं पर आस्था जमाए विवश मुखिया लौट आया। अगले दिन वकील साहब टहलते हुए आए और कछुओं के प्रतियोगी का चुनाव कर गए। जो कुछ वकील साहब ने समझाया वह भी कछुओं ने भली प्रकार समझा। दो हमशक्ल जुड़वाँ कछुओं में से एक ने उसी समय प्रतियोगिता की अंतिम सीमा रेखा पर डेरा जमाने के लिए प्रस्थान कर दिया।

निश्चित दिन, निश्चित समय पर, निर्धारित स्थान से दौड़ प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। पहली ही छलाँग में खरगोश कछुए से प्रतियोगिता में आगे निकल गया। प्रतियोगिता रैफ़री तिकड़मदास की कार मय फ़ोटोग्राफ़र और प्रेस संवाददाताओं के चंद मिनटों में ही खरगोश से भी आगे निकल गई। जब गुब्बार उड़ाती कार खरगोश के बाजू से गुज़री तो खरगोश ने ठहरकर पीछे मुड़कर देखा। बेचारा कछुआ तेज़ी से हाथ-पैर मारता हुआ धीरे-धीरे सरकता चला आ रहा था। निश्चिंत होकर खरगोश दौड़ लगाने लगा। इस बार उसने कम से कम समय में दस किलोमीटर की दूरी तय करने की ठान रखी थी । रास्ते में सोना तो दूर रहा एक मिनट को सुस्ताने का भी प्रोग्राम नहीं था। थकान मिटाने के लिए उसने कमर भी सीधी नहीं की। बस जीत की धुन में तेज़ी से दूरी नापता रहा। उसे जीत के साथ-साथ एक रिकॉर्ड भी कायम करना था।

जब खरगोश निर्धारित स्थान पर पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर गश खा गया। कछुए के गले में विजय-माला पड़ी थी और प्रेस फ़ोटोग्राफ़र उसके विभिन्न कोणों से फ़ोटो खींच रहे थे। प्रतियोगिता-रैफ़री तिकड़मदास वकील कछुए को विजेता घोषित कर चुके थे। इस बार फिर खरगोश दौड़ में कछुए से हार गया था। प्राचीन कहावत ज्यों-की-त्यों बनी रही – 'दौड़ में खरगोश कछुए से हारता है।' यह सब कैसे हुआ, यह युवा खरगोश की समझ से परे था।

तालाब किनारे कछुओं ने मिठाई बाँटी। एक कछुआ समाचारपत्र भी ले आया। उसमें विजेता कछुए का गले में माला डाले बड़े आकार का फ़ोटो छपा था। फ़ोटो देखने सभी कछुए पानी से बाहर निकल आए थे। कछुओं के मुखिया ने विजेता कछुए के भाई को फटकारा, "तू पानी के अंदर जा। तुझसे वकील साहब ने क्या कहा था? कुछ दिन अपनी सूरत किसी को न दिखाना।" अपराध-बोध से ग्रस्त जुड़वाँ भाई लपककर फिर पानी में घुस गया।
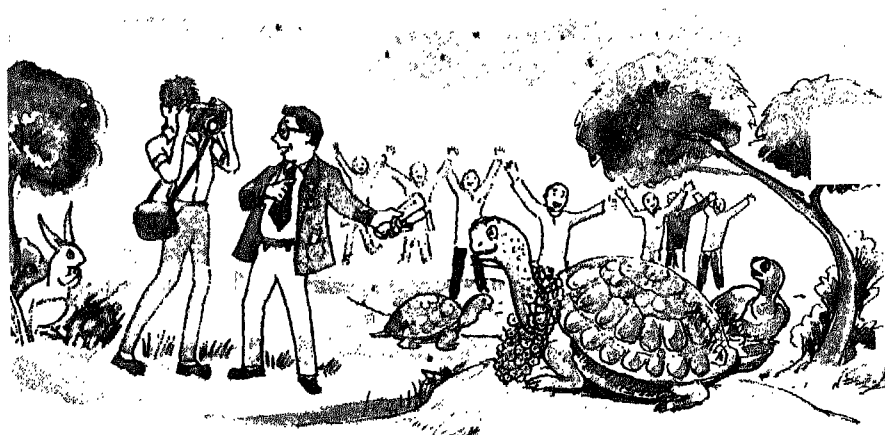
समस्त कछुआ-समुदाय मानव-मस्तिष्क और स्वभाव की विलक्षण पेचीदगियों का मन-ही-मन कृतज्ञ हो गया था।

***— सत्यप्रकाश अग्रवाल 'उमंग'***

## प्रश्न - अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. युवा खरगोश किस बात को लेकर तैश खा गया?
2. युवा खरगोश को किस बात में नाइंसाफ़ी नज़र आई?
3. खरगोश ने कछुओं को क्या चुनौती दे डाली और क्यों?
4. कछुए युवा खरगोश की चुनौती स्वीकार करने से क्यों कतरा रहे थे?
5. खरगोश जाते-जाते कछुओं को क्या धमकी दे गया?
6. मुखिया कछुए ने सहायता के लिए मनुष्य को ही क्यों चुना?
7. तिकड़मदास के मौखिक आश्वासन से मुखिया कछुए को संतोष क्यों नहीं हुआ?
8. निर्धारित स्थान पर पहुँच कर खरगोश गश क्यों खा गया?

**(ख) लिखित**

1. बुज़ुर्ग कछुए ने चुनौती से बचने के लिए क्या-क्या तर्क दिए?
2. खरगोश ने कछुओं को उकसाने के लिए क्या-क्या कहा?

3. कछुओं के मन में मनुष्य के बारे में क्या धारणा थी? आप उस धारणा से कहाँ तक सहमत हैं?
4. दौड़ से पूर्व खरगोश ने क्या-क्या निश्चय किए?
5. खरगोश ने प्रतियोगिता के लिए कौन-कौन-सी शर्तें रखीं?
6. तिकड़मदास द्वारा खरगोश के सामने रखी गई शर्तों के पीछे क्या कारण थे?
7. कछुओं के मुखिया ने विजेता कछुए के जुड़वाँ भाई को तालाब से बाहर निकलने पर क्यों फटकारा?
8. वकील तिकड़मदास ने कछुए को जिताने के लिए क्या तिकड़म भिड़ाई?
9. यदि तिकड़मदास रैफ़री नहीं होता तो इस प्रतियोगिता के क्या-क्या परिणाम हो सकते थे?
10. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए –
    (क) निर्बलता के दामन में संतोष मशरूम की तरह बढ़ता रहता है।
    (ख) आज के दिन उसमें कहीं ईमानदारी बची है तो बस बेईमानी के कामों में ही।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए अंतर समझिए –

| | | |
|---|---|---|
| शाल-साल | पाश-पास | शक-सक |
| गश्त-पस्त | काश-खास | शाम-साम |

उपर्युक्त शब्दों में आपने 'श' और 'स' के उच्चारण में अंतर देखा। 'श' के उच्चारण में जीभ तालु को छूती है जबकि 'स' के उच्चारण में जीभ मसूड़े को छूती है।

पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण ध्यान से कीजिए –

देश-विदेश खरगोश होश विश्वास

सहायता साँस शासन प्रशासन

2. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और अर्थ के अंतर पर विचार कीजिए –

(क) मुँह से एक बोल **भी** नहीं फूटा। => मुँह से एक बोल नहीं फूटा।

(ख) उत्तर **ही** नहीं सूझा। => उत्तर नहीं सूझा।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रमशः 'भी' और 'ही' शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये 'निपात' कहलाते हैं। इनके प्रयोग से वाक्य में अलग से एक प्रकार का बल आ जाता है।

पाठ से इन दोनों निपातों के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़िए।

3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

| **(क)** | | **(ख)** |
|---|---|---|
| 1. कैसे हो सकेगा खरगोश जाति का मुँह उजला? | => | खरगोश जाति का मुँह कैसे उजला हो सकेगा? |
| 2. कैसे धुलेगी परंपरागत कालिख? | => | परंपरागत कालिख कैसे धुलेगी? |
| 3. अवसर इसका दावा करने का नहीं था। | => | इसका दावा करने का अवसर नहीं था। |

उपर्युक्त खंड (क) में तीनों वाक्यों में पदक्रम में परिवर्तन मिलता है। वाक्य में पदों का उचित स्थान पर होना पदक्रम है जैसा कि खंड (ख) में, खंड (क) के पदों को उचित क्रम में रखा गया है। प्रत्येक भाषा में वाक्य का अपना-अपना पदक्रम होता है। हिंदी वाक्य संरचना के अनुसार सरल वाक्य में सामान्यतः कर्ता, कर्म/पूरक, क्रिया-विशेषण, क्रिया का क्रम रहता है। कभी-कभी वाक्य में किसी पद पर बल देने के लिए उसका क्रम बदल दिया जाता है।

खंड (क) में वाक्य (1) और (2) में क्रिया विशेषण 'कैसे' को पहले रखा गया है। इससे हो सकेगा (उजला) और 'धुलेगी' (कालिख) पर बल है। वाक्य (3) में 'अवसर' पर बल देने के लिए इसे पहले रखा गया है।

इस प्रकार के तीन वाक्य पाठ में से ढूँढ़िए।

4. वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए।

   **उदाहरण** – दौड़ हो चुकी। => दौड़ जो होनी थी हो चुकी।

   (क) मैं बात कह चुका।

   (ख) भूकंप से हानि हो चुकी।

   (ग) रोहित को फल मिल चुका।

   (घ) बाढ़ से गाँव डूब चुके।

5. इस पाठ में अनेक मुहावरों का सुंदर और सटीक प्रयोग हुआ है। पाठ से पाँच मुहावरे चुनकर उनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए।

## योग्यता-विस्तार

1. 'धन के लालच में मनुष्य अपनी चतुराई से सत्य को भी असत्य सिद्ध कर देता है।' आज के जीवन से कोई उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. समाचारपत्रों में आए दिन भ्रष्टाचार से संबंधित अनेक घटनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। ऐसी कुछ प्रमुख घटनाओं से संबंधित समाचारों का चयन कीजिए और उन पर चर्चा कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**कान पकना** - ऊब जाना, परेशान होना

**मुँह पर कालिख पोतना** - अपमानित करना

**अनर्थ** - बुरा, हानिकारक

**नाइंसाफ़ी** - अन्याय

**आहत** - दुखी, घायल

**ख्याति** - यश, प्रसिद्धि

**सिरफिरा** - जिसका दिमाग बिगड़ गया हो, पागल

**तमगा** - पदक, मेडल

**फ़रेब** - छल, कपट

**षड्यंत्र** - साज़िश

**माई का लाल** - बहादुर बेटा

**लपेटना** - फँसाने की कोशिश करना

**खामखाह** - अनावश्यक, व्यर्थ

**मुँह काला होना** - बदनामी होना

**आ बैल मुझे मार** - जानबूझ कर मुसीबत में पड़ना

**मशरूम** - कुकुरमुत्ता

**ज़ब्त खाना** - सहन करना, बरदाश्त करना

**दमदार** - मज़बूत, ताकतवर

**पैंतरा फेंकना** - एक मुद्रा से दूसरी मुद्रा में आना, चालाकी भरी चाल

**एहसास** - अनुभव, ख्याल, ध्यान

**जागीर** - पुरस्कार स्वरूप दी गई संपत्ति

**उफ़नता-बिफ़रता** - गुस्से में आकर

**खुराफ़ात** - शरारत

**जुगाड़** - युक्ति, तरीका

**सवा सोलह आने** - शत प्रतिशत, पूरी तरह

**तलहटी** - पानी के नीचे की ज़मीन

**श्रेष्ठी** - सेठ, व्यापारियों का प्रधान, बहुत धनी व्यक्ति

**पुरज़ोर** - पूरी तरह, ज़ोरदार

**एतराज़** - आपत्ति

**सर्वमान्य** - सभी के मानने योग्य

**हमशक्ल** - समान शक्ल वाले

**विलक्षण** - असाधारण, अलौकिक

**कृतज्ञ** - उपकार मानने वाला, एहसानमंद

# 9. संत कवि [illegible]

(प्रस्तुत पाठ में तमिलनाडु के संत कवि तिरुवल्लुवर के परोपकारी जीवन, उनके दांपत्य प्रेम, कवित्वशक्ति और मानवीय गुणों से परिचित कराया गया है। जीवन और जगत के व्यापक अनुभवों पर आधारित उनकी अनुपम रचना 'तिरुक्कुरल' एक ऐसा ग्रंथ है, जिसे तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है।)

भारत अनेक साधु-संतों और ऋषि-मुनियों की भूमि रही है, जिन्होंने अपने आदर्शों से मनुष्य को सुख, शांति और संतोष का जीवन बिताने की प्रेरणा दी है। ऐसे ही संतों की श्रेणी में आते हैं तमिलनाडु के संत कवि तिरुवल्लुवर।

उत्तर भारत के महान संत कवि कबीर और दक्षिण भारत के संत कवि तिरुवल्लुवर में अद्‌भुत साम्य है। इन दोनों के माता-पिता ने इन्हें जन्म देकर कहीं छोड़ दिया था और फिर निस्संतान दंपतियों ने इनका लालन-पालन बड़े स्नेह और यत्न से किया था। व्यवसाय से भी दोनों ही जुलाहे थे। दोनों ने गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए सात्विक जीवन की साधना की थी। इतना ही नहीं, दोनों के जीवन की अनेक अलौकिक घटनाएँ भी समान थीं।

प्रसिद्ध जनश्रुति के अनुसार तिरुवल्लुवर के पिता का नाम भगवन और माता का नाम आदि था। भगवन जाति के ब्राह्मण थे और आदि अछूत जाति की कन्या थी। किसी कारण से भगवन ने सदा घूमते रहने का व्रत ले लिया था और इसलिए वे अपनी पत्नी के साथ सदा घूमते रहते थे। एक दिन से अधिक वे कहीं टिकते न थे। भगवन और आदि अपने शिशुओं को जन्म देते ही छोड़कर चल देते थे। तिरुवल्लुवर को भी उन्होंने पैदा होते ही छोड़ दिया था। यह नवजात शिशु वल्लुव (जुलाहा) जाति की एक दयालु स्त्री को एक पेड़ के नीचे पत्तियों पर लेटा मिला। उस स्त्री के कोई संतान न थी। नवजात शिशु को देखते ही उसका मातृत्व उमड़ आया और भगवान का प्रसाद समझकर उसे उठाकर घर ले आई। उसका पति भी बालक को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और दोनों ने मिलकर बड़े यत्न और प्रेम से बालक को पाला।

वल्लुव घर में पालन होने के कारण बालक का नाम वल्लुवर पड़ा और वही अपने उच्च धार्मिक भावों के कारण बाद में तिरुवल्लुवर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तमिल भाषा में 'तिरु' आदर सूचक शब्द है जो हिंदी के 'श्री' के समान है। इस प्रकार तिरुवल्लुवर का आशय हुआ श्री वल्लुवर।

तिरुवल्लुवर जब बड़े हुए तो उन्हें अपने जन्म की कहानी ज्ञात हुई। इससे उनमें वैराग्य भाव जागा। अपने धर्मपिता और धर्ममाता से अनुमति लेकर उस समय की परंपरा के अनुसार वे तपस्या करने के लिए घनघोर जंगल में चले गए। उन्होंने वन में तपस्वियों की देखरेख में ध्यान और योग का

कठिन अभ्यास किया और तंत्र-मंत्र की सिद्धियाँ भी प्राप्त कीं। लेकिन थोड़े ही दिनों में इन सबसे उनका जी उचट गया। उन्होंने सोचा, संसार की सेवा करने के लिए हमें संसार के लोगों के बीच रहना चाहिए।

अब तिरुवल्लुवर जंगल छोड़कर नगर में आ गए और इधर-उधर घूमने लगे। घूमते-घूमते वे नगर के एक धनवान व्यक्ति के घर पहुँचे। उस धनवान का नाम मार्गसहाय था। किसी कारण से वह बड़े संकट में पड़ गया था। तिरुवल्लुवर ने उसका संकट दूर कर दिया।

मार्गसहाय की एक कन्या थी, रूप-गुण संपन्न और विदुषी। उसका नाम वासुकी था। मार्गसहाय ने वासुकी का विवाह तिरुवल्लुवर के साथ कर दिया।

विवाह के बाद तिरुवल्लुवर अपनी पत्नी के साथ अपने गाँव 'मयलापुर' आकर रहने लगे। आजीविका के लिए उन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय – बुनाई का काम आरंभ किया। पति-पत्नी दोनों बड़े प्रेम और सुख से रहने लगे। दोनों सादा जीवन बिताते और परोपकार के कार्य करते।

एक बार एक संन्यासी उनके घर आया। वह गृहस्थ जीवन से घृणा करता था। उसका विश्वास था कि स्त्री के साथ रहने पर ईश्वर-भक्ति नहीं हो सकती। तिरुवल्लुवर और वासुकी के सुखी गृहस्थ-जीवन और उनकी ईश्वर में अनुरक्ति देखकर उसने पूछा, "आपकी दृष्टि से गृहस्थ का जीवन श्रेष्ठ है या संन्यासी का?" तिरुवल्लुवर ने कोई उत्तर नहीं दिया। इतना ही कहा, "आप हमारा आतिथ्य स्वीकार कर स्वयं अनुभव कर लीजिए।" पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति प्रेम, निष्ठा और सहयोग भाव के साथ-साथ ईश्वर-भक्ति में अनुरक्ति देखकर संन्यासी के मन से नारी जाति के प्रति दुर्भावना जाती रही। वह गद्‌गद होकर बोला, "यदि वासुकी जैसी पत्नी हो तो गृहस्थ-जीवन ही श्रेष्ठ है। इससे ईश्वर-भक्ति में बाधा नहीं, बल्कि सहायता मिलेगी।" इतना कहकर संन्यासी ने श्रद्‌धापूर्वक तिरुवल्लुवर और वासुकी के चरणस्पर्श किए और विदा ली।

तिरुवल्लुवर अन्न के महत्त्व को भली-भाँति समझते थे। 'अन्न ही ईश्वर है', ऐसा मानकर वे अन्न के एक-एक दाने को मूल्यवान मानते थे। एक कथा के अनुसार तिरुवल्लुवर जब भोजन करने बैठते तो नियमित रूप से वासुकी से एक कटोरी में साफ़ पानी और एक सूई रखवा लेते थे। परंतु वासुकी इसका कारण नहीं जानती थी। उसने कभी इसके बारे में कुछ पूछा भी नहीं। परंतु जब वह मृत्यु शय्या पर थी तो उसने पति का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "स्वामी, मेरा अंतिम समय आ गया है। आपके आदेशानुसार मैं आपको भोजन परोसते समय पास में एक सूई और कटोरी में पानी अब

तक रखती रही हूँ, लेकिन उसका रहस्य नहीं समझ सकी।" तिरुवल्लुवर ने कहा, "मैं सूई और पानी भोजन के समय इसलिए रखवाता था कि अन्न का एक दाना भी बेकार न जाए। यदि अन्न का एक भी दाना भूमि पर गिरता तो मैं सूई से उठाकर और पानी में धोकर उसे खा लेता, परंतु तुम ऐसी सावधानी से भोजन परोसती थीं कि कभी एक भी दाना भूमि पर न गिरा।" अपने पति के विचारों को जानकर वासुकी को परम सुख मिला और उसने चैन से अपनी आँखें बंद कर लीं। वासुकी की मृत्यु के बाद तिरुवल्लुवर संसार से विरक्त हो गए।

पत्नी के वियोग से उनकी कवित्व शक्ति और अधिक मार्मिक हो गई। जीवन और जगत का व्यापक अनुभव उन्हें था ही। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने तेरह सौ तीन 'कुरल' रचे जो 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रंथ में संकलित हैं। 'कुरल' का अर्थ है, 'छोटा'। यह आकार की दृष्टि से तमिल भाषा का सबसे छोटा छंद है, जिसमें एक पूरा भाव पिरोया रहता है। यह लगभग पौने दो पंक्तियों का होता है यानि आकार में दोहे से भी छोटा, जैसे –

तीय्वै तीय पयतलाल कीयवै ।
तीयिनुम अंज पडुय

अर्थात् बुरे कर्म का बुरा फल होता है, इसलिए इनसे आग से भी ज़्यादा डरना चाहिए ।

तिरुक्कुरल तीन खंडों में विभक्त है – धर्म, अर्थ और काम।

'धर्म खंड' में पहले ईश्वर-वंदना, वर्षा का महत्त्व, संन्यासी का महत्त्व

और धर्म की शक्ति का वर्णन है। 'अर्थ-खंड' में शासन, राजा के गुण और कर्म-शिक्षा, अशिक्षा, शक्ति, समय और स्थान का बोध, विवेक, सुशासन, गुप्तचर, मंत्री, किला, सेना, मंत्री आदि विषयों का वर्णन है। 'काम-खंड' में स्त्री-पुरुष के संबंधों का वर्णन है। इन तीनों का निर्वाह करके व्यक्ति जीवन के महानतम लक्ष्य – मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

तिरुक्कुरल को तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है। जैनी, वैष्णव, शैव आदि इसे अपना-अपना आदि काव्य तथा तिरुवल्लुवर को अपना प्रथम कवि मानते हैं।

तिरुक्कुरल का अनुवाद हिंदी, उर्दू, संस्कृत, तेलुगु, मलयालम, मराठी आदि भारतीय भाषाओं में और अंग्रेज़ी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन, सिंहली आदि विदेशी भाषाओं में हुआ है। नीचे कुछ कुरलों के भावार्थ दिए जा रहे हैं –

– वंशी मधुर है, वीणा मधुर है – ऐसा वही कहते हैं जिन्होंने अपने शिशु की तोतली बोली का रस न चखा हो ।

– बच्चों के कोमल हाथों से जिस भोजन में खिलवाड़ हुआ हो माता-पिता के लिए वह भोजन अमृत से भी अधिक मधुर होता है।

– जैसे सोना तपकर निर्मल और प्रकाशवान होता है, वैसे ही व्यक्ति कष्ट सहन कर पवित्र ज्ञान के प्रकाश से युक्त होता है ।

– झूठ न बोलने के गुण को ग्रहण कर लेने से अन्य धर्म-कार्य करने की आवश्यकता नहीं रह जाती ।

– इसमें कोई शक नहीं है कि तिरुवल्लुवर के ये कुरल थोड़े ही शब्दों में हमें जीवन के गहन अनुभवों से परिचित कराते हैं ।

***– नरेंद्र व्यास***

## बोध और विचार

### (क) मौखिक

1. तमिल भाषा का 'तिरु' शब्द हिंदी के किस शब्द का समानार्थी है?
2. 'तिरुवल्लुवर' नाम का क्या अर्थ है?
3. तिरुवल्लुवर का पालन-पोषण किन्होंने किया था?
4. तिरुवल्लुवर का मन तपस्या से क्यों उचट गया था?
5. आजीविका के लिए तिरुवल्लुवर क्या कार्य करते थे?
6. पत्नी की मृत्यु का तिरुवल्लुवर पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. 'कुरल' छंद की क्या विशेषता है?

### (ख) लिखित

1. लेखक ने तिरुवल्लुवर और कबीर में क्या-क्या समानताएँ बताई हैं?
2. तिरुवल्लुवर के जन्म के विषय में प्रचलित जनश्रुति का उल्लेख कीजिए।
3. संन्यासी को यह अनुभव कैसे हुआ कि नारी ईश्वर-भक्ति में सहायक है, बाधक नहीं?

4. भोजन के समय पास में सूई और पानी भरी कटोरी रखने के पीछे क्या रहस्य था? इससे तिरुवल्लुवर के चरित्र की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?
5. तिरुक्कुरल के तीन खंडों के नामों का उल्लेख करते हुए उनकी विषय-वस्तु पर प्रकाश डालिए।
6. पाठ में दिए पाँच कुरलों में से आपको कौन-सा कुरल सबसे अधिक अच्छा लगा और क्यों?
7. तिरुवल्लुवर और उनकी पत्नी की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए –
   बालक, कबीर, ब्राह्मण, शब्द, विवाह, जीवन, व्यतीत, सात्विक
   उपर्युक्त शब्दों का उच्चारण करते समय आपने 'ब' और 'व' वर्णों के उच्चारण में अंतर पाया होगा। इन दोनों वर्णों का उच्चारण-स्थान अलग-अलग है। 'ब' के उच्चारण में दोनों होंठ मिल जाते हैं जबकि 'व' के उच्चारण में नीचे के दाँत ऊपर के होंठ को छूते हैं।
   उपर्युक्त वर्णों से बने दस शब्द पाठ से छाँट कर उच्चरित कीजिए और उन्हें लिखिए।
2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए और उनमें आए संयुक्ताक्षरों पर ध्यान दीजिए –
   व्यवसाय, तपस्या, ईश्वर, तिरुवल्लुवर, शय्या, संन्यासी, गुप्तचर, तिरुक्कुरल।
   उपर्युक्त शब्दों के अंतर्गत 'व्य', 'स्या', 'श्व', 'ल्लु', 'य्या', 'न्या', 'प्त', 'क्कु' संयुक्ताक्षर हैं। अंत में पाई वाले वर्णों (ख, ग, घ, च, ज, झ, ण, त, थ, ध, न, प,

ब, भ, म, य, ल, व, श, ष, स) को अन्य वर्णों के साथ संयुक्त करते समय इनकी पाई हटा दी जाती है। किंतु 'क' और 'फ' वर्ण की पाई बीच में होती है इसलिए दूसरे वर्णों के साथ संयुक्त करते समय इन दोनों वर्णों की घुंडी का झुका भाग हटा दिया जाता है; जैसे —

क् = क = तिरुक्कुरल, रक्तिम

फ् = फ = मुफ़्त, दफ़्तर

यह ध्यान रहे कि 'ङ', 'छ', 'ट', 'ठ', 'ड', 'ढ', 'द', 'ह' अर्ध पाई वाले वर्ण हैं, अन्य वर्णों के साथ संयुक्त करते समय इनको हलंत रूप में लिखा जाता है; जैसे — लट्टू, पाठ्य, टिड्डी, द्वंद्व, ग्राह्य ।

उपर्युक्त संयुक्ताक्षरों से बने शब्द पाठ से चुनकर लिखिए।

3. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए —

(क) माता-पिता तंत्र-मंत्र रूप-गुण

(ख) ईश्वर-भक्ति गृहस्थ-जीवन कर्म-शिक्षा

उपर्युक्त दोनों वर्गों के शब्द समास हैं। वर्ग (क) में जो समास हैं वे द्वंद्व समास हैं। द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा इन शब्दों का विग्रह करने पर इनके बीच से योजक चिह्न (-) को हटाकर 'और', 'अथवा', 'या' योजक शब्द का प्रयोग होता है; जैसे — माता-पिता = माता और पिता।

वर्ग (ख) में जो समास हैं वे तत्पुरुष हैं। तत्पुरुष समास में विग्रह करने पर पदों या शब्दों के बीच के कारक चिह्न या परसर्ग (का, के, की आदि) का लोप हो जाता है; जैसे — ईश्वर-भक्ति = ईश्वर की भक्ति ।

पाठ में इन दोनों प्रकार के समासों के तीन-तीन शब्द ढूँढ़िए।

4. निम्नलिखित रूपों पर ध्यान दीजिए —

(क) जिसके संतान न हो = निस्संतान

(ख) जिसका वर्णन न किया जा सके = अवर्णनीय

(ग) जिसका आकार न हो = निराकार

(घ) जो अच्छे आचरण वाला हो = सदाचारी

आपने देखा कि निस्संतान, अवर्णनीय, निराकार, सदाचारी शब्द अनेक शब्दों के समूह के अर्थ का बोध करा रहे हैं।

निम्नलिखित शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए –

(क) जो नया-नया पैदा हुआ हो = ____________

(ख) जो भावना बुरी हो = ____________

(ग) जो भाव राग-द्वेष से दूर हो = ____________

(घ) जिसका संकलन किया गया हो = ____________

5. निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए –

'अपने पति के विचारों को जानकर वासुकी को परम सुख मिला।'

इस वाक्य में दो वाक्य (अर्थात् उपवाक्य) निहित हैं।

(क) वासुकी ने अपने पति के विचारों को जान लिया।

(ख) उससे वासुकी को परम सुख मिला।

इन दोनों वाक्यों को मिलाकर जो वाक्य बना है, उसका आधार पूर्वकालिक क्रिया का प्रयोग है। पहले वाक्य की क्रिया की धातु के साथ 'कर' रूप लगाकर पूर्वकालिक क्रिया बनाई जाती है; जैसे – जानकर। पूर्वकालिक क्रिया दो वाक्यों के बीच में आती है। वाक्य के अंत में आनेवाली क्रिया को 'समापिका' क्रिया कहते हैं। पहले होने वाले सभी कार्यों को 'पूर्वकालिक' क्रिया द्वारा बताया जाता है।

पाठ से पूर्वकालिक क्रिया वाले तीन वाक्य छाँटकर उनमें आए उपवाक्यों को अलग-अलग कीजिए।

## योग्यता-विस्तार

1. तिरुवल्लुवर और कबीर की नीति संबंधी शिक्षाओं को चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगाइए तथा उनकी समानताओं पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ में दिए गए पाँचों कुरलों के भावार्थ को चार्ट पर लिखिए।
3. हिंदी के कवियों अथवा संतों के कुछ ऐसे दोहों या सूक्तियों का संकलन करके उन्हें कक्षा में सुनाइए जो भाव की दृष्टि से पाठ में आए कुरलों से मिलते-जुलते हों।
4. तिरुवल्लुवर के अतिरिक्त भारत के कुछ प्रमुख संत-महात्माओं के बारे में जानकारी प्राप्त करके कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**प्रेरणा** - किसी को किसी कार्य में लगाने की क्रिया या भाव

**कबीर** - मध्यकाल के प्रसिद्ध निर्गुण संत कवि

**साम्य** - समानता

**दंपति** - पति-पत्नी

**सात्विक** - नेक, पवित्र, सत्वगुण से उत्पन्न

**जनश्रुति** - किंवदंती, जनता में प्रचलित (बात)

**टिकना** - ठहरना, रुकना

**मातृत्व** - माँ का प्रेम

**वैराग्य** - सांसारिक कामों और सुख-भोगों से होने वाली विरक्ति

**तंत्र-मंत्र** - जादू-टोना, उपाय-युक्ति

**सिद्धि** - योग साधना के अलौकिक फल, योग की आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व)

**उचटना** - मन का न लगना

**विदुषी** - पंडिता स्त्री

**आजीविका** - रोज़ी-रोटी का साधन, रोज़गार, धंधा

**पैतृक** - पूर्वजों से प्राप्त, पिता का

**परोपकार** - दूसरे की भलाई

**आतिथ्य** - अतिथि-सत्कार, आवभगत

**अनुरक्ति** - प्रेम, आसक्ति

**दुर्भावना** - बुरी भावना, कुविचार

**गद्गद** - आनंदित, पुलकित, अत्यधिक प्रसन्न

**नियमित** - नियमबद्ध, नियम के अनुसार, निश्चित

**मार्मिक** - मर्मस्पर्शी, हृदयस्पर्शी

**बोध** - ज्ञान, जानकारी

**महानतम** - श्रेष्ठतम, सबसे बड़ा और श्रेष्ठ

**मोक्ष** - जीव की जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति, स्वर्गप्राप्ति

**जैनी** - जैन धर्म को मानने वाले

**वैष्णव** - विष्णु को पूजने वाला, विष्णु की उपासना करने वाला

**शैव** - शिव की आराधना करने वाला

# 10. खूनी हस्ताक्षर

(खून तो प्रत्येक जीवित प्राणी की रगों में बहता है किंतु वही खून धन्य है, जो देश की आज़ादी और उसकी रक्षा में काम आ सके। कवि ने इसी विचार को भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी और स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी सुभाषचंद्र बोस की बर्मा में आज़ाद हिंद सैनिकों के सम्मुख 1944 ई. में की गई उस ऐतिहासिक घोषणा से जोड़कर प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।")

वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नहीं।

वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें जीवन, न रवानी है।
जो परवश होकर बहता है,
वह खून नहीं है, पानी है।

उस दिन लोगों ने सही-सही
खून की कीमत पहचानी थी
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में
माँगी उनसे कुरबानी थी।

बोले, "स्वतंत्रता की खातिर
बलिदान तुम्हें करना होगा।
तुम बहुत जी चुके हो जग में,
लेकिन आगे मरना होगा।

आज़ादी के चरणों में जो,
जयमाल चढ़ाई जाएगी।
वह सुनो, तुम्हारे शीशों के
फूलों से गूँथी जाएगी।

आज़ादी का संग्राम कहीं
पैसे पर खेला जाता है?
यह शीश कटाने का सौदा
नंगे सर झेला जाता है।

आज़ादी का इतिहास कहीं
काली स्याही लिख पाती है?
इसके लिखने के लिए
खून की नदी बहाई जाती है।"

यूँ कहते-कहते वक्ता की
आँखों में खून उतर आया।
मुख रक्त-वर्ण हो दमक उठा
दमकी उनकी रक्तिम काया।

आजानु-बाहु ऊँची करके,
वे बोले, "रक्त मुझे देना।
इसके बदले में भारत की
आज़ादी तुम मुझसे लेना।"

हो गई सभा में उथल-पुथल,
सीने में दिल न समाते थे।
स्वर इनकलाब के नारों के
कोसों तक छाए जाते थे।

"हम देंगे – देंगे खून"
शब्द बस यही सुनाई देते थे।
रण में जाने को युवक खड़े
तैयार दिखाई देते थे।

बोले सुभाष, "इस तरह नहीं,
बातों से मतलब सरता है।
लो, यह कागज़, है कौन यहाँ
आकर हस्ताक्षर करता है?

इसको भरनेवाले जन को
सर्वस्व-समर्पण करना है।
अपना तन-मन-धन-जन-जीवन
माता को अर्पण करना है।

पर यह साधारण पत्र नहीं,
आज़ादी का परवाना है।
इस पर तुमको अपने तन का
कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है।

वह आगे आए, जिसके तन में
भारतीय खूँ बहता हो।
वह आगे आए जो अपने को
हिंदुस्तानी कहता हो।

वह आगे आए, जो इस पर
खूनी हस्ताक्षर देता हो।
मैं कफ़न बढ़ाता हूँ, आए
जो इसको हँसकर लेता हो।"

सारी जनता हुँकार उठी –
"हम आते हैं, हम आते हैं।
माता के चरणों में यह लो,
हम अपना रक्त चढ़ाते हैं।"

साहस से बढ़े युवक उस दिन,
देखा, बढ़ते ही आते थे।
चाकू-छुरी कटारियों से,
वे अपना रक्त गिराते थे।
फिर उसी रक्त की स्याही में,
वे अपनी कलम डुबाते थे।
आज़ादी के परवाने पर
हस्ताक्षर करते जाते थे।
उस दिन तारों ने देखा
हिंदुस्तानी विश्वास नया।
जब लिखा महा रणवीरों ने
खूँ से अपना इतिहास नया।

***– गोपाल प्रसाद व्यास***

## प्रश्न-अभ्यास
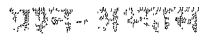
## बोध और सराहना

### (क) मौखिक

1. कवि ने किसके खून को सार्थक माना है?
2. कैसा खून पानी के समान है?
3. लोगों को खून की कीमत की पहचान किस दिन हुई?
4. 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' सुभाषचंद्र बोस के इस प्रसिद्ध नारे की अभिव्यक्ति कविता की किन पंक्तियों में हुई है?
5. अपने किस कथन पर सुभाषचंद्र बोस की आँखों में खून उतर आया?

### (ख) लिखित

1. सुभाषचंद्र बोस के अनुसार आज़ादी की लड़ाई केवल पैसे के बल पर क्यों नहीं लड़ी जा सकती?
2. सुभाषचंद्र बोस के द्वारा आज़ादी के लिए खून की माँग करने पर जनता की क्या प्रतिक्रिया हुई?
3. इस कविता का शीर्षक 'खूनी हस्ताक्षर' क्यों दिया गया है?
4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) सीने में दिल न समाते थे
   (ख) यह शीश कटाने का सौदा, नंगे सर झेला जाता है
5. सुभाषचंद्र बोस के बर्मा में दिए गए वक्तव्य को अपने शब्दों में लिखिए।

## योग्यता-विस्तार

1. नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जीवनी पढ़िए।
2. उन प्रमुख क्रांतिकारियों के नामों की सूची बनाइए जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में अपना योगदान दिया।
3. 'आज़ाद होकर जीना ही सच्चा जीना है।' विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**उबाल** - जोश

**रवानी** - प्रवाह, बहाव

**परवश** - जो दूसरे के वश में हो, पराधीन, पराश्रित

**कुरबानी** - बलिदान

**संग्राम** - युद्ध, लड़ाई

**नंगे सर झेलना** - बिना किसी सुरक्षा के बलिदान के लिए तैयार रहना

**रक्त-वर्ण** - लाल रंग

**दमक** - चमक, आभा

**रक्तिम काया** - लालिमा युक्त शरीर

**आजानु-बाहु** - घुटने तक लंबे हाथ

**सीने में दिल न समाना** - अति उत्साहित होना

**इनकलाब** - क्रांति

**कोस** - लगभग तीन किलोमीटर की दूरी

**रण** - युद्ध

**सरता** - पूरा होना, हल होना

**सर्वस्व** - सब कुछ, सारी संपत्ति

**समर्पण** - भेंट करना, सादर कुछ देना

**अर्पण** - देना, भेंट

**परवाना** - आज्ञापत्र, फ़रमान

**कफ़न** - मृत शरीर के ऊपर डाला जाने वाला वस्त्र

**हुंकार** - गर्जना, ललकार

**रणवीर** - योद्‌धा

# 11. परीक्षा

(रियासत देवगढ़ के दीवान सुजानसिंह के अनुसार मानवीयता व्यक्ति का सबसे बड़ा गुण है। अतः अपने स्थान पर नए दीवान के लिए वह एक ऐसा व्यक्ति चुनना चाहते हैं जो साहस, दया, आत्मबल, सहानुभूति जैसे मानवीय गुणों से युक्त हो। प्रेमचंद की 'परीक्षा' नामक इस कहानी में दीवान सुजानसिंह द्वारा आयोजित एक अनूठी परीक्षा का वर्णन है जिसके द्वारा पं. जानकीनाथ के रूप में दीवान साहब को ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उनकी निर्धारित कसौटी पर खरा उतर सका।)

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की, "दीनबंधु, दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब न माने तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रिसायत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के

योग्य समझें वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज़ को यहाँ तक का कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से। कोई नए फ़ैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम

पर रोया करते थे, यहाँ उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अँगरखे और कनटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका रहता था।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोज़ेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर व्यक्ति अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मि. 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि. 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि. 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था। शर्माजी घड़ी रात से ही वेदमंत्र पढ़ने लगते थे। मौलवी साहब को नमाज़ और तिलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

एक दिन नए फ़ैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। संभव है, कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फ़ील्ड बन गया। खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ़्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भले-मानुस लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेज़ी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर से खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँखों और चेहरे से झलक रही थी। हाँफ़ते-हाँफ़ते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था, पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन

कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से धकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई नज़र न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी न सकता था। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखों से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और भाईचारे का नाम भी न था।

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था, जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा, एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, "हुज़ूर मैं आपसे कैसे कहूँ?"

युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को धकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाएगी।"

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगाकर उठाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, "महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?" किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ़ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ,

कहीं ये सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही लगता है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुसकराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

महीना पूरा हुआ और चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से अपनी-अपनी किस्मत का फ़ैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते-जाते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे? न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी?

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य, राजकर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे । उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा, "दीवानी के उम्मीदवार महाशयो ! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो विपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ़ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फ़रमाया, "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।"

**— *प्रेमचंद***

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. सरदार सुजानसिंह ने महाराज से क्या प्रार्थना की और क्यों?
2. राजा साहब ने दीवान साहब की प्रार्थना स्वीकार करने के लिए क्या शर्त रखी?
3. विज्ञापन से देश में हलचल क्यों मच गई?
4. हॉकी खेलने का प्रस्ताव क्यों रखा गया?
5. गेंद की तुलना दफ़्तर के 'अप्रेंटिस' से क्यों की गई?

6. किसान की सहायता किसने की और किस प्रकार?
7. किसान ने युवक को क्या आशीर्वाद दिया?
8. युवक के मन में किसान को देखकर क्या संदेह हुआ?
9. किसने कहा, किससे कहा, क्यों कहा?
   (क) नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।
   (ख) गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।
   (ग) हुज़ूर मैं आप से कैसे कहूँ?

**(ख) लिखित**

1. विज्ञापन में दीवान पद के उम्मीदवारों से क्या-क्या अपेक्षाएँ की गई थीं?
2. विज्ञापन को पढ़कर किस-किस प्रकार के उम्मीदवार देवगढ़ पहुँचे?
3. 'जिससे बात कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था'– इस कथन में लेखक ने 'देवता बना मालूम देता था' क्यों कहा है, 'देवता था' क्यों नहीं कहा है?
4. कहानी में 'बूढ़ा जौहरी', 'बगुला' और 'हंस' शब्दों का प्रयोग किस-किस के लिए किया गया है और क्यों?
5. 'सहमी आँखों से देखना' तथा 'बंद आँखों से देखना' इनका क्या आशय है? किसान और खिलाड़ियों के मनोभावों पर प्रकाश डालिए।
6. सरदार सुजानसिंह ने पं. जानकीनाथ को दीवान पद के लिए चुनने के क्या कारण बताए?
7. दीवान सुजानसिंह और पं. जानकीनाथ की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
8. इस कहानी का संदेश क्या है?

## भाषा-अध्ययन

निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए उनके अंतर को समझिए –

डाली ढाल डमरू ढक्कन डलिया डाकिया

पड़ना पढ़ना सड़क चढ़ाई किवाड़ बढ़ना

आपने 'ड-ढ' और 'ड़-ढ़' के उच्चारण के अंतर को देखा। 'ड' और 'ढ' के उच्चारण में जीभ मूर्धा (कठोर तालु) को छूती है किंतु 'ढ' के उच्चारण में वायु अधिक मात्रा में निकलती है और 'ड' के उच्चारण में कम मात्रा में। इन ध्वनियों को मूर्धन्य ध्वनियाँ कहते हैं। 'ड़' और 'ढ़' भी मूर्धन्य ध्वनियाँ हैं किंतु इनके उच्चारण में जीभ मूर्धा की ओर उलट कर झटके से ऊपर उठती है और नीचे गिरती है। 'ड़' के उच्चारण में वायु कम मात्रा में निकलती है किंतु 'ढ़' के उच्चारण में अधिक मात्रा में। 'ड' और 'ढ' तथा 'ड़' और 'ढ़' से युक्त शब्दों को पाठ से छाँटकर अलग-अलग लिखिए और उनका उच्चारण कीजिए।

2. पाठ में 'विद्या', 'संध्या' और 'सिद्ध' शब्द आए हैं। इनमें 'द्य', 'ध्य', 'द्ध' संयुक्ताक्षर हैं जो 'द्+य', 'ध्+य' तथा 'द्+ध' के योग से बने हैं। इनको लिखते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

   निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए और उन्हें लिखिए –

   (क) गद्य, पद्य, उद्योग, विद्यालय, द्योतक

   (ख) ध्यान, अध्याय, बाध्य, अध्यापक, ध्येय

   (ग) बुद्ध, युद्ध, क्रुद्ध, प्रसिद्ध, सिद्धांत

3. निम्नलिखित वाक्यों में मोटे छपे पदों को पढ़िए और उदाहरण के अनुसार क्रिया के साथ उनका संबंध देखते हुए कारक (कर्ता, कर्म, करण आदि) बताइए।

**उदाहरण – लोगों ने** जानकीनाथ की तरफ़ देखा। => कर्ता

(क) **खिलाड़ियों ने** भी उसको देखा। => ____________

(ख) **मैं** तुम्हारी गाड़ी निकाल देता हूँ। => ____________

(ग) युवक ने **किसान को** देखा। => ____________

(घ) वह **दयाधर्म से** कभी नहीं हटेगा। => ____________

(ङ) यह पुस्तक **लेखक के लिए** है। => ____________

(च) वह पूरी **ईमानदारी से** काम करेगा। => ____________

(छ) उसके **हृदय में** साहस का वास अवश्य था। => ____________

4. निम्नलिखित वाक्यों को देखिए –

युवक किसान के पास जाकर बोला => (1) युवक किसान के पास गया।
(2) युवक बोला।

उपर्युक्त वाक्य में पूर्वकालिक क्रिया (धातु + कर/करके) का प्रयोग है। इसे दो सरल वाक्यों में विभक्त किया गया है।

इसी उदाहरण के आधार पर पूर्वकालिक क्रिया से युक्त निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में विभक्त कीजिए –

(क) तुम गाड़ी पर **जाकर** अपने बैलों को साधो।

(ख) युवक ने पहियों को ज़ोर **लगाकर** ऊपर उठाया।

(ग) किसान युवक के सामने हाथ **जोड़कर** खड़ा हो गया।

(घ) पुरुष ने गाड़ी को दलदल से **निकालकर** नाले पर चढ़ा दिया।

5. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए – मिट्टी में मिल जाना, पहाड़ बन जाना, लक्ष्मी की कृपादृष्टि होना, कलेजा धड़कना, नाक में दम होना।

## योग्यता-विस्तार

1. कक्षा में प्रस्तुत कहानी को भावपूर्ण ढंग से अपने शब्दों में सुनाइए।
2. सरदार सुजानसिंह ने केवल एक ही घटना के आधार पर पं. जानकीनाथ को दीवान पद के लिए चुन लिया। यदि आप उनकी जगह होते तो और क्या-क्या युक्तियाँ अपनाते? कक्षा में चर्चा कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**दीवान** - मंत्री, वज़ीर
**दीनबंधु** - दीनों का सहायक, रक्षा करने वाला
**दाग लगना** - कलंक लगना
**नेकनामी** - अच्छा नाम, इज़्ज़त
**मिट्टी में मिलना** - बरबाद हो जाना, नष्ट हो जाना
**मंदाग्नि** - भूख न लगने का रोग
**नसीब** - किस्मत, भाग्य
**मौलवी** - इस्लामी धर्मशास्त्र का पंडित, अरबी भाषा का पंडित
**सनद** - डिग्री, उपाधि
**एमामा** - साफ़ा, छोटी पगड़ी
**चोगा** - लंबा, ढीला-ढाला पहनावा
**ग्रेजुएट** - स्नातक, बी.ए. या बी.एससी., बी.काम.
**रोज़ेदार** - रोज़ा रखनेवाला
**नास्तिक** - जिसको ईश्वर में विश्वास न हो, जो आस्तिक नहीं हो
**हक्सले** - एक अंग्रेज़ दार्शनिक जो ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था

**धर्मनिष्ठ** - जो धर्म में आस्था रखता हो, जो धर्मानुकूल आचरण करता हो, धर्मपरायण

**मानुस** - मनुष्य

**पदच्युत** - पद से हट जाना

**तिलावत** - कुरान का पाठ, धर्मग्रंथ को पढ़ना

**बगुलों में हंस** - ढोंगी व्यक्तियों में गुणी व्यक्ति

**धावे के लोग** - हमला बोलने वाले

**बेदम** - शिथिल, बेजान, बहुत कमज़ोर

**मद** - अहंकार

**ठिठक गया** - रुक गया

**बैलों को साधना** - बैलों को सँभालना, बैलों को प्रोत्साहित करना

**पैठना** - घुसना

# 12. आप भले तो जग भला

(इस पाठ में जीवन जीने की एक दृष्टि दी गई है। लेखक ने विभिन्न दृष्टांतों, प्रसंगों और उद्धरणों द्वारा यह बताने का प्रयत्न किया है कि यदि मनुष्य स्वयं भला है तो उसे सारा संसार भला दिखाई देता है। भला होने से आशय है—सदैव दूसरों की अच्छाइयों को देखना, अपने अवगुणों पर भी ध्यान देना और हर परिस्थिति में खुश रहना। अपने निंदक का भी एहसानमंद होना और प्रत्येक व्यक्ति के साथ प्रेम और नम्रतापूर्ण व्यवहार करना।)

एक विशाल काँच के महल में न जाने किधर से एक भटका हुआ कुत्ता घुस गया। हज़ारों काँचों के टुकड़ों में अपनी शक्ल देखकर वह चौंका। उसने जिधर नज़र डाली, उधर ही हज़ारों कुत्ते दिखाई दिए। वह समझा कि ये सब उस पर टूट पड़ेंगे और उसे मार डालेंगे। अपनी शान दिखाने के लिए वह भौंकने लगा, उसे सभी कुत्ते भौंकते हुए दिखाई पड़े। उसकी आवाज़ की ही प्रतिध्वनि उसके कानों में ज़ोर-ज़ोर से आती। उसका दिल धड़कने लगा। वह और ज़ोर से भौंका। सब कुत्ते भी अधिक ज़ोर से भौंकते दिखाई दिए। आखिर वह उन कुत्तों पर झपटा, वे भी उस पर झपटे। बेचारा ज़ोर-ज़ोर से उछला, कूदा, भौंका और चिल्लाया। अंत में गश खाकर गिर पड़ा।

कुछ देर बाद उसी महल में एक दूसरा कुत्ता आया । उसको भी हज़ारों कुत्ते दिखाई दिए । वह डरा नहीं, प्यार से उसने अपनी दुम हिलाई । सभी
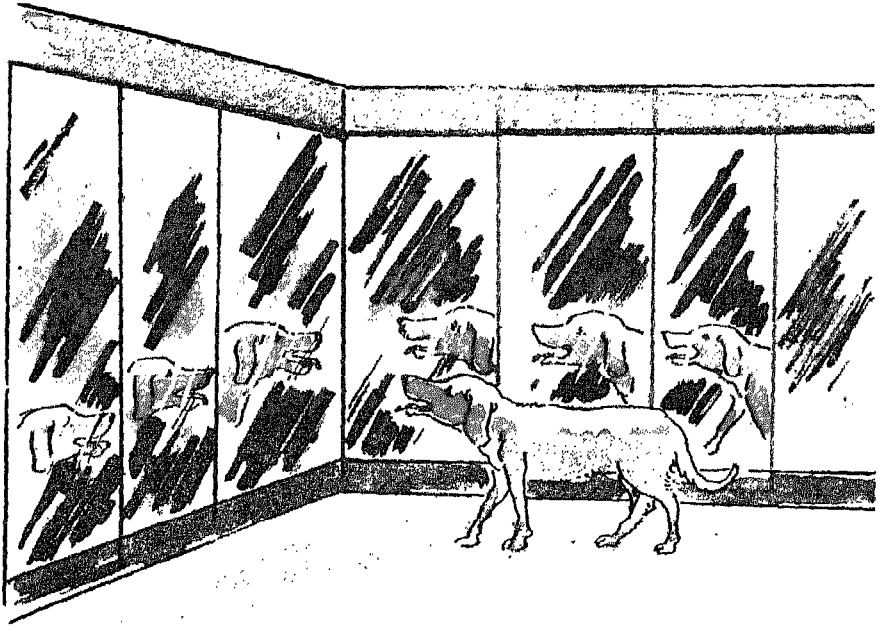
कुत्तों की दुम हिलती दिखाई दी। वह खूब खुश हुआ और कुत्तों की ओर अपनी पूँछ हिलाता बढ़ा। सभी कुत्ते उसकी ओर दुम हिलाते बढ़े। वह प्रसन्नता से उछला-कूदा, अपनी ही छाया से खेला, खुश हुआ और फिर पूँछ हिलाता बाहर चला गया।

जब मैं अपने एक मित्र को हमेशा परेशान, नाराज़ और चिड़चिड़ाते देखता हूँ तब इसी किस्से का स्मरण हो आता है। मैं उनकी मिसाल भौंकने वाले कुत्ते से नहीं देना चाहता। यह तो बड़ी अशिष्टता होगी। पर इस कहानी से वे चाहें तो कुछ सबक ज़रूर सीख सकते हैं।

दुनिया काँच के महल जैसी है। अपने स्वभाव की छाया ही उस पर पड़ती है। 'आप भले तो जग भला', 'आप बुरे तो जग बुरा।' अगर आप

प्रसन्नचित्त रहते हैं, दूसरों के दोषों को न देखकर उनके गुणों की ओर ध्यान देते हैं तो दुनिया भी आपसे नम्रता और प्रेम का बरताव करेगी। अगर आप हमेशा लोगों के ऐबों की ओर देखते हैं, उन्हें अपना शत्रु समझते हैं और उनकी ओर भौंका करते हैं तो फिर वे क्यों न आपकी ओर गुस्से से दौड़ेंगे? अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि अगर आप हँसेंगे तो दुनिया भी आपका साथ देगी, पर अगर आपको गुस्सा होना और रोना ही है तो दुनिया से दूर किसी ज़ंगल में चले जाना ही हितकर होगा।

अमेरिका के मशहूर नेता अब्राहम लिंकन से किसी ने एक बार पूछा, "आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य क्या है?"

उन्होंने ज़रा देर सोचकर उत्तर दिया, "मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी कर उनका दिल नहीं दुखाता।"

मेरे मित्र की यही खास गलती है। वे दूसरों का दृष्टिकोण समझने की कोशिश नहीं करते। दूसरों के विचारों की, कामों की, भावनाओं की आलोचना करना ही अपना परम धर्म समझते हैं। उनका शायद यह ख्याल है कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सुधारने के लिए ही भेजा है। पर वे यह भूल जाते हैं कि शहद की एक बूँद ज़्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाय एक सेर ज़हर के।

दुनिया में पूर्ण कौन है ? हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रहती हैं। प्रत्येक व्यक्ति से गलतियाँ होती हैं। फिर एक-दूसरे को सुधारने की कोशिश करना अनुचित ही समझना चाहिए। जैसा ईसा ने कहा था, "लोग दूसरों की आँखों

का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।" दूसरों को सीख देना तो बहुत आसान काम है, अपने ही आदर्शों पर स्वयं अमल करना कठिन है। अगर हम अपने को ही सुधारने का प्रयत्न करें और दूसरों के अवगुणों पर टीका-टिप्पणी करना बंद कर दें तो हमारे मित्र जैसा हमारा हाल कभी नहीं होगा।

इसी सिलसिले में एक बात और । आप तो दूसरों की नुक्ताचीनी नहीं करेंगे, ऐसी उम्मीद है, पर दूसरे ही अगर आपकी नुक्ताचीनी करना न छोड़ें तो ? मेरे मित्र अपनी बुराई या आलोचना सुनकर आगबबूला हो जाते हैं, भले ही वह दुनिया की दिन भर बुराई करते रहें । पर आपके लिए तो ऐसे मौके पर दादू की पंक्तियाँ गुनगुना लेना बड़ा कारगर होगा :

निंदक बाबा वीर हमारा, बिनही कौड़ी बहै बिचारा ।
आपन डूबे और को तारे, ऐसा प्रीतम पार उतारे ।

अगर सचमुच कुछ त्रुटियाँ हैं, जिनकी ओर 'निंदक' हमारा ध्यान खींचता है तो उन अवगुणों को दूर करना हम सभी का कर्तव्य हो जाता है। जिसने उनकी ओर ध्यान दिलाया उसका उपकार ही मानना चाहिए। एक दिन एक सज्जन से कुछ गलती हो गई। हमारे मित्र तुरंत बिगड़कर बोले, "देखिए महाशय, यह आपकी सरासर गलती है। आइंदा ऐसा करेंगे तो ठीक नहीं होगा।" बेचारे महाशय जी बड़े दुखी हुए। उनका अपमान हो गया। मन में क्रोध जाग्रत हुआ और वे बिना कुछ उत्तर दिए ही उठकर चले गए। दूसरे दिन मैंने उन महाशय जी से एकांत में कहा, "देखिए, गलती तो सभी से होती है। ऐसी

गलती मैं भी कर चुका हूँ। दुखी होने का कोई कारण नहीं। आप तो बड़े समझदार हैं। कोशिश करें तो यह क्या, बड़ी से बड़ी गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं। ठीक है न?"

उनकी आँखों में आँसू छलछला आए। बड़े प्रेम से बोले, "जी हाँ, मैं अपनी गलती मानता हूँ। आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा ! पर कोई मुहब्बत से पेश आए तब न ! आदमी प्रेम का भूखा रहता है।"

जब सरदार पृथ्वीसिंह ने हिंसा का मार्ग त्यागकर अपने को बापू के सामने अर्पण कर दिया तब बापू को बहुत खुशी और संतोष हुआ। पर बापू जहाँ प्रेम और सहानुभूति की मूर्ति थे, वहाँ बड़े परीक्षक भी थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने पृथ्वीसिंह से कहा, "सरदार साहब, अगर आप सेवाग्राम में आकर मेरे आश्रम में रह सकें तभी मैं समझूँगा कि आपने अहिंसा का पाठ सचमुच सीख लिया है।"

पृथ्वीसिंह ज़रा चौंककर बोले, "आपका क्या मतलब बापूजी?"

"भाई, मेरा आश्रम तो एक प्रयोगशाला जैसा ही है । जिन लोगों की कहीं नहीं बनती, अक्सर वे मेरे पास आ जाते हैं । उन सबको एक-साथ रखने में मैं सीमेंट का काम करता हूँ और वह सीमेंट मेरी अहिंसा ही है ।"

"मैं समझ गया, बापूजी !" पृथ्वीसिंह ने मुसकराकर कहा । आगे की कहानी यहाँ कहने की ज़रूरत नहीं, पर इसमें बापू के प्रेममय व्यवहार की एक झलक मिल जाती है । उन्होंने अपने प्रेम और सहानुभूति से कितने ही व्यक्तियों को अपनी ओर खींचा था । बापू कड़ी-से-कड़ी आलोचना कर

सकते थे और करते भी थे, पर हँसकर, मीठी चुटकियाँ लेकर, अपना प्रेम दरसाकर।"

अमेरिका के मशहूर लेखक इमर्सन की एक घटना याद आती है । उन्हें गाएँ पालने का शौक था । इसलिए गाएँ और नन्हें बछड़े उनके मकान के पास एक कुटी में रहते थे। एक बार ज़ोर की बारिश आने वाली थी। सभी गाएँ तो झोंपड़ी के अंदर चली गईं, पर एक बछड़ा बाहर ही रह गया। इमर्सन और उनका लड़का दोनों मिलकर उस बछड़े को पकड़कर खींचने लगे कि वह कुटी में चला आए पर ज्यों-ज्यों उन्होंने ज़ोर से खींचना शुरू किया त्यों-त्यों वह बछड़ा भी सारी ताकत लगाकर पीछे हटने लगा। बेचारे इमर्सन बड़े परेशान हुए। इतने में उनकी बूढ़ी नौकरानी उधर से निकली। जैसे ही उसने यह तमाशा देखा, वह दौड़ी आई और अपना अँगूठा बछड़े के मुँह में प्यार

7. रसोइया बिना खबर दिए लेखक के मित्र की नौकरी क्यों छोड़ गया?
8. इस पाठ के लिए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

**(ख) लिखित**

1. अपने मित्र को परेशान देखकर लेखक को किस किस्से का स्मरण हो आता है?
2. दुखड़ा रोते रहने वाले व्यक्ति का दुनिया से दूर किसी जंगल में चले जाना क्यों बेहतर है?
3. 'प्रेम और सहानुभूति से किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है।' यह स्पष्ट करने के लिए लेखक ने क्या-क्या उदाहरण दिए हैं?
4. आशय स्पष्ट कीजिए –
   (क) शहद की एक बूँद ज़्यादा मक्खियों को आकर्षित करती है, बजाए एक सेर ज़हर के।
   (ख) लोग दूसरों की आँखों का तिनका तो देखते हैं पर अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखते।
   (ग) जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है; पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है।
5. लेखक ने अपने मित्र की किन गलतियों का वर्णन किया है?
6. इस पाठ के आधार पर बताइए कि 'हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।'

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए –

नज़र, ज़ोर, हज़ार, नाराज़, ज़रूर, ज़रा, ज़िंदगी, तारीफ़, ऑफ़िस, सफ़ाई, फ़ैशन, फ़न

उपर्युक्त शब्दों में 'ज़' और 'फ़' अरबी-फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी से आए तत्सम शब्दों की ध्वनियाँ हैं। इन्हें संघर्षी ध्वनि कहते हैं, क्योंकि इनका उच्चारण करते समय हवा घर्षण के साथ निकलती है, जबकि 'ज' और 'फ' ध्वनि के उच्चारण में हवा रुकती है। निम्नलिखित शब्दों में अंतर समझते हुए उच्चारण कीजिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए—जरा (बुढ़ापा) ज़रा (थोड़ा-सा), राज (राज्य) राज़ (रहस्य), तेज (चमक) तेज़ (फुरतीला), फन (साँप का फण) फ़न (कला)।

2. निम्नलिखित गद्यांश का पाठ करते समय इसका ध्यान रखें कि तिरछी रेखाएँ क्षणभर ठहराव का संकेत देती हैं। इसी के अनुसार इसे पढ़िए।

   महात्मा गांधी ने/पृथ्वीसिंह से कहा/"सरदार साहब,/अगर आप सेवाग्राम में आकर/मेरे आश्रम में रह सकें/तभी मैं समझूँगा कि/आपने अहिंसा का पाठ/सचमुच सीख लिया है।"

   पृथ्वीसिंह ज़रा चौंक कर बोले,/ "आपका क्या मतलब बापू जी?" "भाई, मेरा आश्रम तो/एक प्रयोगशाला जैसा ही है/जिन लोगों की कहीं नहीं बनती,/अक्सर वे मेरे पास/आ जाते हैं। उन सबको एक साथ रखने में/मैं सीमेंट का काम करता हूँ/और वह सीमेंट/मेरी अहिंसा ही है।"

3. निम्नलिखित विलोम शब्दों के अर्थ का अंतर स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए —

| | |
|---|---|
| ध्वनि - प्रतिध्वनि | हिंसा - प्रतिहिंसा |
| क्रिया - प्रतिक्रिया | फल - प्रतिफल |

4. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए —

**उदाहरण** – उनकी मित्रों, आफ़िस के कर्मचारियों और घर के नौकरों में से किसी से नहीं बनती => उनकी किसी से नहीं बनती – न मित्रों से, न ऑफ़िस के कर्मचारियों से और न घर के नौकरों से।

(क) वह घर-बाहर कहीं नहीं पढ़ता।

(ख) उसका यहाँ-वहाँ कहीं पता नहीं था।

(ग) वे महाशय अपने-पराए किसी की तारीफ़ नहीं करते।

(घ) उसकी पत्नी को उसका उठना-बैठना, खाना-पीना कुछ भी पसंद नहीं।

5. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

(क) तुम्हारा नाम क्या है?

(ख) राम दिल्ली जा रहा है?

(ग) तुम्हारा नाम?

(घ) ठीक है न?

उपर्युक्त वाक्यों में वाक्य (क) प्रश्नवाचक वाक्य है जिसमें प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग हुआ है और वाक्य के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न प्रयुक्त हुआ है। कई बार प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग नहीं होता, फिर भी वाक्य प्रश्नवाचक होता है और उसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग अवश्य किया जाता है। वाक्य (ख), (ग) और (घ) में प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग नहीं हुआ है किंतु ये भी प्रश्नवाचक वाक्य हैं।

कई स्थितियों में प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग तो होता ही है किंतु उस वाक्य का आशय प्रश्न न होकर विस्मयादिबोधक होता है। इसलिए विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग होता है; जैसे – आगे भला मैं वही गलती क्यों करने लगा!

कुछ स्थितियों में प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग नहीं होता; जैसे–

(क) जिन वाक्यों में प्रश्नसूचक शब्द संबंधसूचक का काम करता है; जैसे— आपने क्या कहा, मैं नहीं जानता।

(ख) जिन वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्द से पूछने के स्थान पर डाँटने का भाव व्यक्त होता है; जैसे— क्या कर रहे हो, चुपचाप बैठे रहो।

उपर्युक्त स्थितियों के अनुसार पाठ से पाँच प्रश्नवाचक वाक्य ढूँढ़िए।

6. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए — आग बबूला होना, नुक्ताचीनी करना, टूट पड़ना, चुटकियाँ लेना, कोई चारा न होना।

## योग्यता-विस्तार

1. 'निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
   बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।'
   कबीर की इन पंक्तियों और पाठ में उल्लिखित दादू की पंक्तियों की तुलना कीजिए।
2. कबीर, रहीम और वृंद के उन नीतिपरक दोहों का संकलन कीजिए जिनमें मीठा बोलने, परनिंदा न करने, प्रेम और विनम्रतापूर्ण व्यवहार करने की बात कही गई है।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**काँच** - शीशा
**प्रतिध्वनि** - टकराकर लौटी हुई ध्वनि
**गश खाना** - बेहोश होना, मूर्छित होना
**मिसाल** - उदाहरण

**अशिष्टता** - उजड्डपन, असभ्यता

**बरताव** - व्यवहार

**ऐब** - दोष, बुराई

**नुक्ताचीनी** - दोष निकालना, आलोचना

**शहतीर** - लकड़ी का लंबा लट्ठा

**अमल** - आचरण, व्यवहार

**टीका-टिप्पणी** - आलोचना

**आग बबूला होना** - बहुत गुस्सा करना, गुस्से से लाल होना

**सरासर** - पूरी तरह

**आइंदा** - भविष्य में, आगे

**सेवाग्राम** - वर्धा में स्थित गांधी जी का आश्रम

**सीमेंट का काम करना** - जोड़ने और मिलाने का काम करना

**मीठी चुटकियाँ लेना** - हँसी-हँसी में व्यंग्य करना

**साग** - सब्ज़ी के रूप में खाई जाने वाली पत्तियाँ

**यंत्र** - मशीन

**ग्रीस** - यूनान देश

**सुकरात** - प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक

**निंदक बाबा वीर हमारा,**
**बिनही कौड़ी बहै बिचारा।**
**आपन डूबे और को तारे**
**ऐसा प्रीतम पार उतारे।।**

निंदा करने वाला मनुष्य बड़ा वीर है जो अपने विचारों को बिना कोई कीमत लिए प्रकट करता है। ऐसा करने में भले ही वह स्वयं डूब जाता है, अर्थात् दूसरों की बुराई करने का दोष अपने ऊपर ले लेता है, परंतु दूसरों को उनकी बुराई का ज्ञान करा देता है। ऐसा व्यक्ति प्रिय है क्योंकि वह सबका कल्याण करता है।

# 13. नीति के दोहे

(हिंदी के नीति-काव्य में रहीम और वृंद के काव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है । इन कवियों ने प्रकृति, मानव-जीवन और लोकव्यवहार को बड़ी सूक्ष्म और गहन दृष्टि से देखा है और अपने बहुमूल्य अनुभवों को 'दोहे' जैसे छोटे-से छंद में भर दिया है। यहाँ दिए गए दोहों में समय की सही पहचान, वाणी की महत्ता, लघु से लघु वस्तु का महत्त्व और अपने दोष नहीं देख पाना आदि विषयों पर अनेक नीतिगत बातें रोचक ढंग से कही गई हैं।)

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।।

दोनों रहिमन एक से, जौ लौं बोलत नाहिं।
जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माँहि।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जाय।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछिताय।।

टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम।।

*— रहीम*

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार।
जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली बुरी कहि देत।।

होय बुराई तैं बुरो, यह कीनी निरधार।
खाड़ खनैगो और को, ताको कूप तयार।।

सब देखै पै आपनो, दोष न देखै कोय।
करै उजेरौ दीप पै, तरे अँधेरो होय।।

एकहिं भले सुपुत्र तें, सब कुल भलो कहात।
सरस सुबासित बिरछ तें, ज्यों वन सकल बसात।।

*— वृंद*

# प्रश्न-अभ्यास

## बोध और सराहना

### (क) मौखिक

1. पावस ऋतु में कोयल क्यों मौन साध लेती है?
2. वसंत ऋतु में कोयल और कौए की पहचान किस आधार पर की जाती है?
3. 'छोटी से छोटी वस्तु भी परिस्थिति विशेष में बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है, इसलिए उसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।' यह भाव किस दोहे में व्यक्त हुआ है?
4. 'समय आने पर पेड़-पौधे फलते हैं तो समय आने पर उनके पत्ते और फल आदि सब झड़ जाते हैं।' इस तथ्य से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
5. कवि रहीम स्वयं को किस बड़ी मुश्किल में फँसा अनुभव करते हैं?
6. काठ की हाँड़ी चूल्हे पर दुबारा क्यों नहीं चढ़ाई जा सकती?
7. 'आँखें दिल का दर्पण होती हैं' यह भाव किस दोहे में व्यंजित है?
8. 'दोष पराए देखकर, चला हसंत-हसंत।
   अपने चित्त न आवई, जिनका आदि न अंत ।'
   वृंद का कौन-सा दोहा इस दोहे की तुलना में रखा जा सकता है?
9. बुराई का फल बुरा होता है, इस बात को पुष्ट करने के लिए कवि ने कौन-सा दृष्टांत दिया है?

### (ख) लिखित

1. 'एकै साधे सब सधै' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
2. 'टूटे सुजन' को बार-बार मनाना क्यों उचित है?

3. 'एक ही सपूत से पूरा कुल भला कहलाने लगता है।' इस तथ्य की पुष्टि के लिए कवि ने क्या उदाहरण दिया है? आप अपनी ओर से एक और उदाहरण दीजिए।

## योग्यता-विस्तार

1. उक्त सभी दोहे सुभाषित (सूक्तियाँ) हैं। इन सभी को कंठस्थ कीजिए । ऐसे दो प्रसंग सुनाइए जिनकी पुष्टि में इनमें से दो दोहों को उद्धृत किया जा सके।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**पावस** - वर्षा ऋतु
**दादुर** - मेंढक
**बक्ता** - बोलने वाला
**काक-पिक** - कौआ-कोयल
**मूलहिं** - जड़ को, मूल को
**सुजन** - सज्जन, मित्र
**पोहिए** - पिरोइए
**मुक्ताहार** - मोतियों की माला
**गाढ़े** - कठिन
**हाँड़ी** - चावल-दाल पकाने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन
**काठ** - लकड़ी
**दूजी** - दूसरी
**हेत-अहेत** - हितकर-अहितकर, प्रिय-अप्रियकर
**आरसी** - शीशा, दर्पण
**खाड़ खनैगो** - गड्ढा खोदेगा

# 14. नर्मदा की आत्मकथा

(इस पाठ में नर्मदा नदी की आत्मकथा वर्णित है। अपने उद्गम अमरकंटक से लेकर अरब सागर में मिलने तक की संपूर्ण यात्रा में उसके अनेक मनोहारी रूपों के दर्शन होते हैं— वह कहीं कोमल है, कहीं जुझारू है तो कहीं वात्सल्यमयी माँ। यह माँ एक ओर तो अपने पुत्रों के कष्ट से व्याकुल हो उठती है तो दूसरी ओर इन्हीं पुत्रों के द्वारा किए जा रहे प्राकृतिक विनाश से दुखी होती है और मानव से अपेक्षा करती है कि वे समस्त प्रकृति के प्रति प्यार और निष्ठा की भावना रखें। नर्मदा नदी की यह आपबीती उसके भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व को उजागर करती है।)

हमारा देश आज जैसा है, सदा वैसा ही नहीं रहा। आज जहाँ हिमालय है, करोड़ों वर्ष पूर्व वहाँ उथला समुद्र था। किसी भूकंप ने उसे हिमालय में बदल डाला, हालाँकि इसमें लाखों वर्ष लगे।

इसी तरह आज जहाँ मैं हूँ, वहाँ चार करोड़ वर्ष पूर्व अरब सागर का एक सँकरा हिस्सा लहराता था। इसीलिए मेरी घाटी में दरियाई घोड़ा, दरियाई भैंसा, राइनोसरस जैसे समुद्री पशुओं के जीवाश्म पाए गए हैं। मेरे ही तट पर मानव के विलुप्त पूर्वजों के अस्थि-पंजर भी पाए गए हैं।

उम्र के हिसाब से मैं गंगा से बड़ी हूँ क्योंकि जब गंगा नहीं थी, मैं तब भी थी। जब हिमालय नहीं था, विंध्य तब भी था। विंध्य शायद भारतभूमि का सबसे पुराना प्रदेश है।

लेकिन यह पुरानी, बहुत पुरानी बात है।

यह ठीक है कि मेरे तट पर मोहनजोदड़ो या हड़प्पा जैसे 5,000 वर्ष प्राचीन नगर नहीं रहे, लेकिन मेरे ही तटवर्ती प्रदेश होशंगाबाद और भीमबेटका में न जाने कितने हज़ार वर्ष पुराने प्रागैतिहासिक चित्र पाए गए हैं।

और उतने बड़े नगर मेरे तट पर हो भी कैसे सकते थे। मेरे दोनों ओर दंडकारण्य जैसे घने जंगलों की भरमार थी। इन्हीं जंगलों के कारण वैदिक आर्य तो मुझ तक पहुँचे ही नहीं। बाद में जो आए, वे भी अनेक वर्षों तक इन जंगलों को पार कर दक्षिण में जाने का साहस न कर सके। इसलिए मैं आर्यावर्त की सीमारेखा बनी। उन दिनों मेरे तट पर आर्यावर्त या उत्तरापथ समाप्त होता था और दक्षिणापथ शुरू होता था।

मेरे तट पर मोहनजोदड़ो जैसी नागर संस्कृति नहीं रही, लेकिन एक आरण्यक संस्कृति अवश्य रही। भारतीय संस्कृति मूलतः आरण्यक संस्कृति है। मेरे तटवर्ती वनों में मार्कंडेय, भृगु, कपिल, जमदग्नि आदि अनेक ऋषियों

के आश्रम रहे। यहाँ की यज्ञवेदियों का धुआँ आकाश में मँडराता रहता था। ऋषियों का कहना था कि तपस्या तो बस नर्मदा-तट पर ही करनी चाहिए।

इन्हीं ऋषियों में से एक ने मेरा नाम रेवा रखा । रेव् यानि कूदना। उन्होंने मुझे चट्टानों में कूदते-फाँदते देखा, तो मेरा नाम रेवा रखा। एक अन्य ऋषि ने मेरा नाम नर्मदा रखा। नर्म यानी आनंद। उनके विचार से मैं सुख या आनंद देनेवाली नदी हूँ, इसलिए उन्हें नर्मदा नाम ठीक जान पड़ा।

मैं भारत की सात प्रमुख नदियों में से हूँ। गंगा के बाद मेरा ही महत्त्व है। हज़ारों वर्षों से मैं पौराणिक गाथाओं में स्थान पाती रही हूँ। पुराणों में मुझ पर जितना लिखा गया उतना और किसी नदी पर नहीं। स्कंदपुराण का रेवा-खंड तो पूरा का पूरा मुझको अर्पित है।

भारत की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं, मैं पश्चिम की ओर। अमरकंटक में मेरा और सोन का उद्‌गम पास-पास है। लेकिन मैं पश्चिम में बहती हूँ और सोन पूर्व में—बिलकुल विपरीत दिशाओं में। भक्तगण मुझे अत्यंत पवित्र नदी मानते हैं और मेरी परिक्रमा करते हैं। यह परिक्रमा भिक्षा माँगते हुए नंगे पैर करनी पड़ती है और नियमानुसार करने पर इसमें 3 वर्ष, 3 महीने और 13 दिन लगते हैं। पुरुषों के अलावा स्त्रियाँ भी यह कठिन परिक्रमा करती हैं।

मेरे तट पर कभी शक्तिशाली आदिम जातियाँ निवास करती थीं। मेरा तट गिरिजन और वन जातियों की प्राचीन लीलाभूमि रहा। आज भी मेरे तट पर बैगा, गोंड, भील आदि माटी से जुड़ी जनजातियाँ निवास करती हैं। इनकी

जीवन-शैलियों, नृत्यों तथा अन्य प्रथाओं ने दूर-दूर के लोगों को आकृष्ट किया है।

जीवन में मैंने सदा कड़ा संघर्ष किया। सरल मार्ग छोड़कर कठिन मार्ग चुना। कठिनाइयों में से रास्ता निकालना मेरा स्वभाव हो गया है। अमरकंटक से जो एक बार चली, तो खड्डों में कूदती, निकुंजों में धँसती, चट्टानों को तराशती और वन-प्रांतरों की बाधा तोड़ती भागती चली गई। न जाने कौन-सी अक्षय शक्ति मुझे पहाड़ी ढलानों, घाटियों, वनों या पथरीले पाटों में बिना थके दौड़ते रहने की प्रेरणा देती है। अपनी सारी शक्ति से, जिसे मैंने अपना अंतिम लक्ष्य माना, उसी ओर चलती रही—दिन और रात, रात और दिन !

मैं एक हूँ, पर मेरे रूप अनेक हैं। जब मूसलाधार वृष्टि होती है, तब मैं उफन पड़ती हूँ। वसंत में मैं मंथर गति से बहती हूँ और गरमियों में तो बस, मेरी साँस भर चलती है। प्रत्येक नदी का सर्वाधिक मूल तत्त्व पानी होता है, लेकिन यही मेरा सबसे कमज़ोर तत्त्व है। बरसात में तो उफन पड़ती हूँ, पर गरमी में सूखकर काँटा रह जाती हूँ।

बड़ी अप्रत्याशित नदी हूँ मैं—आज कुछ, कल बिलकुल दूसरी। कब चौड़ी में से सँकरी, द्रुत में से विलंबित, गहरी में से उथली या नन्ही-नाज़ुक में से जुझारू हो जाऊँ कुछ कहा नहीं जा सकता। हल्ला-गुल्ला मुझे पसंद है, नाम ही रेवा है, पर कोमल और शांत बनते भी देर नहीं लगती। सच तो यह है कि मैं खुद भी नहीं जानती कि अगले क्षण मैं क्या करने वाली हूँ।

मैं प्रपात-बाहुल्या नदी हूँ। मेरे उद्‌गम-स्थल अमरकंटक में दो प्रपात हैं—कपिलधारा और दूधधारा। जबलपुर के पास धुआँधार मेरा सबसे सुंदर प्रपात है। यहाँ से चट्टानी बाधाओं को काटती मैं संगमरमर की सँकरी घाटी में सिमट जाती हूँ । नौका विहार करते दर्शकों को मेरा संगमरमरी सौंदर्य अनायास बाँध लेता है। मेरे और किसी स्थान ने लोगों को इतना सम्मोहित नहीं किया।

धावड़ीकुंड के प्रपातों का सौंदर्य भी कम नहीं। यहाँ से निकले शिवलिंग सारे देश में पूजे जाते हैं।

ओंकारेश्वर मेरे तट का सबसे बड़ा तीर्थ है। महेश्वर ही प्राचीन माहिष्मती है। यहाँ के घाट हमारे देश के सर्वोत्तम घाटों में से हैं। इसके बाद शूलपाण की झाड़ी। नाम झाड़ी, पर एक पेड़ नहीं। नंगी पहाड़ियों वाला यह प्रदेश आबादी से प्रायः शून्य है। मार्ग इतना टेढ़ा-मेढ़ा है कि यहाँ के गरीब भील आदिवासी किसी तरह अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

मेरे मुहाने पर स्थित भरूच ही भृगुकच्छ था। कभी यह पश्चिम भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह था। सौदागरों और जहाज़ियों की यहाँ भीड़ लगी रहती थी। मेरे जिस पाट में कभी सैंकड़ों जहाज़ों का आना-जाना लगा रहता था, वही पाट आज खाली पड़ा है।

अब मैं खंभात की खाड़ी में अरब सागर में मिलने ही वाली हूँ। मुझे याद आया, अमरकंटक में मैंने कैसी मामूली-सी शुरुआत की थी। वहाँ तो एक बच्चा भी मुझे लाँघ जाता और यहाँ मेरा पाट 20 किलोमीटर चौड़ा है। यह तय करना कठिन है कि कहाँ मेरा अंत है और कहाँ समुद्र का आरंभ।

आज मेरे तटवर्ती प्रदेश काफ़ी बदल गए हैं। मेरी वन्य एवं पर्वतीय रमणीयता बहुत कम रह गई है। मुझे दुःख है कि मेरे घने जंगल जड़ से काट डाले गए हैं। पहले इन जंगलों में जंगली जानवरों की गर्जन सुनाई देती थी, अब पक्षियों का कलरव तक सुनाई नहीं देता। उन दिनों मेरे तट पर पशु-पक्षियों का राज्य था, लेकिन उसमें आदमी के लिए भी जगह थी। अब आदमी का राज्य हो गया है, लेकिन उसमें पशु-पक्षी के लिए कोई जगह नहीं।

मेरा पानी भी उतना निर्मल और पारदर्शी नहीं रहा।

फूलों और दूर्वादलों से सुवासित स्वच्छ हवा भी नहीं रही।

इन दिनों मुझ पर कई बाँध बाँधे जा रहे हैं। बाँध में बँधना भला किसे अच्छा लगेगा ! फिर मैं तो स्वच्छंद हरिणी-सी हूँ, मेरे लिए तो यह और भी कष्टप्रद है। इससे मेरी आदिम युग की स्वच्छंदता चली जाएगी।

किंतु, जब अकाल-ग्रस्त भूखे-प्यासे लोगों को, पानी और चारे के लिए

तड़पते पशुओं को और बंजर खेतों को देखती हूँ तो मेरा मन रो उठता है। आखिर मैं माँ हूँ, अपनी संतान को तड़पता कैसे देख सकती हूँ। इसलिए मैंने इन बाँधों को स्वीकार कर लिया है। अभी तक मैं दौड़ के आनंद के लिए दौड़ती थी। अब धरती की प्यास बुझाने के आनंद के लिए दौड़ूँगी भी और ठहरूँगी भी। सरोवर बनाऊँगी। नहरों के माध्यम से खेतों की प्यास बुझाऊँगी। धरती को सुजला-सुफला बनाऊँगी।

मुझे इस बात की खुशी है कि इस उम्र में भी मैं यौवन और जीवन से भरपूर हूँ। अगर मैं अपनी स्थापना की वर्षगाँठ मनाऊँ तो पता नहीं वह कौन-सी करोड़वीं वर्षगाँठ होगी। मैं आज भी परिवर्तनशील हूँ और अपने आपको बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल ढाल सकती हूँ। मैं अपने आप में अनूठी हूँ, विश्व में अपने ढंग की अकेली नदी, क्योंकि सारे संसार में एक मात्र मेरी ही परिक्रमा की जाती है।

लोगों ने खूब स्नेह दिया। मुझे माँ कहा, मेरे जल को अमृत माना, मेरे तट पर तपस्या की, आश्रम बनाए, तीर्थ बनाए। मेरे तट के छोटे-से-छोटे तृण और छोटे-से-छोटे कण न जाने कितने परिव्राजकों, ऋषि-मुनियों और साधु-संतों की पदधूलि से पावन हुए। मुझे चिरकुमारी कहा। मेरी परिक्रमा करने की परंपरा चलाई। इस देश के करोड़ों निवासियों के लिए मैं केवल नदी नहीं, माँ हूँ। यह सुखद अनुभूति मेरे लिए अनंत काल तक काफ़ी होगी।

जाते-जाते एक बात कहना चाहती हूँ। याद रखो, पानी की हर बूँद एक चमत्कार है। हवा के बाद पानी ही मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

किंतु पानी दिन पर दिन दुर्लभ होता जा रहा है। नदियाँ सूख रही हैं। उपजाऊ ज़मीन दूहों में बदल रही है। आए दिन अकाल पड़ रहे हैं। मुझे खेद है, यह सब मनुष्यों के अविवेकपूर्ण व्यवहार के कारण हो रहा है। अभी भी समय है। वन-विनाश बंद करो। बादलों को बरसने दो। नदियों को स्वच्छ रहने दो। केवल मेरे प्रति ही नहीं, समस्त प्रकृति के प्रति प्यार और निष्ठा की भावना रखो। यह मैं इसलिए कह रही हूँ क्योंकि मुझे तुमसे बेहद प्यार है।

*— अमृतलाल वेगड़*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. इस पाठ में 'मैं' कौन है?
   (क) हमारा देश (ख) नर्मदा नदी (ग) गंगा नदी (घ) हिमालय
2. होशंगाबाद और भीमबेटका की क्या विशेषता है?
3. नर्मदा के तट पर बड़े नगरों के न बस पाने का क्या कारण था?
4. नर्मदा ने स्वयं को आर्यावर्त की सीमारेखा क्यों कहा है?
5. नर्मदा नदी का नाम रेवा और नर्मदा कैसे पड़ा?
6. नर्मदा नदी की परिक्रमा किस प्रकार की जाती है?
7. नर्मदा नदी के तट पर कौन-कौन-सी जनजातियाँ निवास करती हैं?

8. नर्मदा के प्रमुख प्रपातों के नाम बताइए।
9. नर्मदा नदी ने स्वयं को 'अप्रत्याशित' क्यों कहा है?
10. नर्मदा स्वयं को संसार की सबसे अनूठी नदी क्यों मानती है?

### (ख) लिखित

1. लेखक ने भारतीय संस्कृति को मूल रूप से आरण्यक संस्कृति क्यों कहा है?
2. नर्मदा नदी ने अपने अनेक रूपों का उल्लेख किया है । उनका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।
3. बाँध में बँधना पसंद न होने पर भी नर्मदा ने बाँधों को क्यों स्वीकार कर लिया है?
4. अमरकंटक से लेकर अरब सागर में मिलने तक नर्मदा की यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
5. पाठ से उन पंक्तियों को छाँटिए, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि नर्मदा केवल नदी ही नहीं, माँ भी है।
6. नर्मदा नदी से हमें क्या-क्या प्रेरणा मिलती है?
7. 'नर्मदा की आत्मकथा वर्तमान पर्यावरण के प्रति मनुष्य को सचेत करने की कथा है ।' टिप्पणी कीजिए ।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित गद्यांश को अनुतान सहित पढ़िए –
   मेरे तट पर मोहनजोदड़ो जैसी नागर संस्कृति नहीं रही, लेकिन एक आरण्यक संस्कृति अवश्य रही । भारतीय संस्कृति मूलतः आरण्यक संस्कृति है । मेरे

तटवर्ती वनों में मार्कंडेय, भृगु, कपिल, जमदग्नि आदि अनेक ऋषियों के आश्रम रहे । यहाँ की यज्ञवेदियों का धुआँ आकाश में मँडराता रहता था । ऋषियों का कहना था कि तपस्या तो बस नर्मदा-तट पर ही करनी चाहिए ।

2. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए –

गंगा, बंजर, खंड, संतान, खंभात

उपर्युक्त शब्दों में स्वर रहित नासिका ध्वनियों (ङ्, ञ, ण्, न्, म्,) के स्थान पर अनुस्वार (बिंदी) प्रयुक्त हुआ है। यहाँ गंगा में 'गं' का उच्चारण 'गङ्' है। पंजाब में 'पं' का उच्चारण 'पञ' है। खंड में 'खं' का उच्चारण 'खण्' है। संतान में 'सं' का उच्चारण 'सन्' है और खंभात में 'खं' का उच्चारण 'खम्' है। यह ध्यान रखें कि अनुस्वार के बाद जो व्यंजन हो उसी वर्ग का पंचम वर्ण अनुस्वार रूप में लिखा जाता है; जैसे –

**कवर्ग** - गंगा = गङ्गा (ं = ङ्)

**चवर्ग** - बंजर = बञ्जर (ं = ञ्)

**टवर्ग** - खंड = खण्ड (ं = ण्)

**तवर्ग** - संतान = सन्तान (ं = न्)

**पवर्ग** - खंभात = खम्भात (ं = म्)

पाठ में से अनुस्वार युक्त पाँच शब्द ढूँढ़िए और उन्हें लिखते हुए यह भी बताइए कि वह अनुस्वार किस नासिक्य ध्वनि का द्योतक है।

3. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

(क) एक **आरण्यक** संस्कृति अवश्य रही ।

(ख) हज़ारों वर्षों से मैं **पौराणिक** ग्रंथों में स्थान पाती रही हूँ ।

(ग) वसंत में मैं **मंथर** गति से बहती हूँ ।

(घ) मैं संगमरमर की **सँकरी** घाटी में सिमट जाती हूँ।

(ङ) दर्शकों को मेरा **संगमरमरी** सौंदर्य अनायास बाँध लेता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में मोटे छपे शब्द 'आरण्यक', 'पौराणिक', 'मंथर', 'सँकरी', 'संगमरमरी' पद विशेषण हैं जो क्रमशः 'संस्कृति', 'ग्रंथों', 'गति', 'घाटी' तथा 'सौंदर्य' पदों की विशेषता बता रहे हैं। ये विशेषण संज्ञा पदों के गुण, आकार, स्थिति आदि का बोध कराते हैं । अतः इन्हें 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं । पाठ में से ऐसे गुणवाचक विशेषणों से युक्त पाँच वाक्य लिखिए ।

4. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

(क) **मैं** भारत की सात प्रमुख नदियों में से हूँ।

(ख) **मेरे** तट पर कभी शक्तिशाली आदिम जातियाँ निवास करती थीं ।

(ग) **मैं** एक हूँ, पर मेरे रूप अनेक हैं ।

(घ) **मुझे** इस बात की खुशी है ।

उपर्युक्त वाक्यों में मोटे छपे पद उत्तम पुरुष सर्वनाम 'मैं' और उसके दो रूप हैं। 'मैं' के इन दोनों रूपों में परिवर्तन विभिन्न कारकों में प्रयुक्त होने के कारण हुआ है । 'मेरे' और 'मुझे' तिर्यक रूप कहलाते हैं, जो अधिकतर कारक चिह्न या परसर्ग लगने से बनते हैं। इसे निम्नलिखित तालिका से समझा जा सकता है –

| | | | |
|---|---|---|---|
| मूल | मैं + ने | = | मैंने |
| | मैं + को | = | मुझे अथवा मुझको |
| तिर्यक | मैं + से | = | मुझसे |
| | मैं + पर | = | मुझ पर |
| संबंध कारक | मैं+का/के/की | = | मेरा/मेरे/मेरी |

इसी प्रकार 'तू' मध्यम पुरुष सर्वनाम के रूप लिखिए।

5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलकर लिखिए–

**उदाहरण–** मैं सदा कड़ा संघर्ष करती हूँ => मैंने सदा कड़ा संघर्ष किया

(क) मैं सरल मार्ग छोड़कर कठिन मार्ग चुनती हूँ।

(ख) मैं प्रायः मंथर गति से चलती हूँ।

(ग) मेरे पर्यटनस्थल लोगों को अधिक सम्मोहित नहीं करते ।

(घ) सरकार मुझ पर कई बाँध बाँधती है।

(ङ) लोग मुझे खूब स्नेह देते हैं।

## योग्यता-विस्तार

1. 'गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
   नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।'
   उपर्युक्त श्लोक में सात प्रसिद्ध नदियों का उल्लेख है। नर्मदा के अतिरिक्त किन्हीं दो नदियों के तटों पर स्थित धार्मिक स्थलों अथवा प्रमुख नगरों का परिचय प्राप्त कीजिए।

2. (क) **मैं** भारत की सात नदियों में से हूँ।
   (ख) **मेरे** तट पर कभी शक्तिशाली आदिम जातियाँ वास करती थीं ।
   (ग) जीवन में **मैंने** सदा कड़ा संघर्ष किया।
   (घ) **मुझे** माँ कहा, मेरे जल को अमृत माना ।
   उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए । आप पाएँगे कि नर्मदा नदी ने अपने लिए 'मैं', 'मेरे', 'मैंने', 'मुझे' शब्दों का प्रयोग करते हुए अपनी कहानी कही है । इसे 'आत्मकथा' कहते हैं । आप 'अपनी आत्मकथा' लिखिए।

3. 'आज का मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण प्रकृति का रूप बिगाड़ता जा रहा है ।'

इस विषय पर कक्षा में अपने-अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**जीवाश्म** - फॉसिल प्रागैतिहासिक युग के पौधों तथा प्राणियों के अवशेष जो चट्टानों में दबे हुए सुरक्षित रह गए

**विलुप्त** - नष्ट, समाप्त

**प्रागैतिहासिक** - लिखित इतिहास से पहले का, बहुत प्राचीन

**आर्यावर्त** - भारत का मध्य देश, उत्तरी भारत का दक्षिणी भाग

**उत्तरापथ** - उत्तर भारत

**दक्षिणापथ** - दक्षिण भारत

**नागर संस्कृति** - विकसित संस्कृति, सभ्य संस्कृति

**आरण्यक** - वन में उत्पन्न, वन्य

**मार्कंडेय** - मृकंड ऋषि के पुत्र, प्रलय में जीवित रहने वाले अष्ट ऋषियों एवं सिद्धों में से एक, मार्कंडेय पुराण के रचयिता

**भृगु** - सप्त ऋषियों में से एक

**कपिल** - सांख्य शास्त्र के आदि प्रवर्तक, इनका एक आश्रम नर्मदा के तट पर भी था

**जमदग्नि** - सप्त ऋषियों में से एक, परशुराम के पिता

**स्कंद पुराण** - अठारह पुराणों में से एक

**अर्पित** - अर्पण किया हुआ, दिया हुआ

**उद्गम** - जन्म स्थान, निकास, उत्पत्ति का स्थान

**गिरिजन** - पहाड़ पर रहने वाले लोग, पर्वतवासी

**निकुंज** - सघन वृक्षों और लताओं से घिरा स्थान, लता मंडप

**तराशना** - काटना

**उफनना** - उबलना, जोश खाना

**अप्रत्याशित** - आकस्मिक, जिसकी आशा न रही हो

**द्रुत** - तेज़

**विलंबित** - धीमी लय, मंद लय

**प्रपात बाहुल्या** - झरनों की अधिकता वाली

**कलरव** - मंद एवं मधुर स्वर

**पारदर्शी** - स्वच्छ, आर-पार दिखने वाली

**दूर्वा** - दूब, घास

**सुवासित** - सुगंधित

**सरोवर** - तालाब

**सुजला-सुफला** - अधिक जल और फल वाली, धन-धान्य पूर्ण

**परिव्राजक** - संन्यासी

**दूह** - मिट्टी का ढेर, टीला

# 15. बाघा जतिन

(खूँखार बाघ को मार डालने के कारण 'बाघा जतिन' के नाम से विख्यात यतींद्रनाथ मुखर्जी भारतीय क्रांतिकारियों में अग्रगण्य हैं । मरते दम तक अंग्रेज़ों के अत्याचारों का विरोध करने वाले बाघा जतिन की वीरता, अदम्य साहस, अटूट देशप्रेम, बौद्धिक क्षमता आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।)

बंगाल के प्रसिद्ध देशभक्त - क्रांतिकारी बाघा जतिन का पूरा नाम यतींद्रनाथ मुखर्जी था। वे बड़े साहसी और निर्भीक स्वभाव के थे। उनके शरीर में अपार बल था। उन्हें व्यायाम करने, घंटों साइकिल चलाने, घुड़सवारी करने और शिकार करने का बड़ा शौक था। उनके साहस और निर्भीकता का पता इसी बात से चल जाता है कि ग्यारह वर्ष की छोटी अवस्था में ही उन्होंने एक बिगड़ैल घोड़े को आसानी से बस में कर लिया था।

यतींद्रनाथ 'बाघा जतिन' के नाम से कैसे प्रसिद्ध हुए, इसके पीछे एक बड़ी रोमांचक घटना है। 1906 ई. की बात है। बंगाल के नदिया ज़िले के कोया गाँव के आसपास एक बाघ ने बड़ा आतंक मचा रखा था। जब

मौका मिलता, वह पशुओं को उठा ले जाता । कभी-कभी गाँव वालों पर भी आक्रमण कर देता था । इससे चारों ओर भय का वातावरण व्याप्त था।

युवा यतींद्र को लोगों की इस परेशानी का पता चला। उसने न आव देखा न ताव, एक लंबा चाकू हाथ में लेकर बाघ से भिड़ने के लिए निकल पड़ा। उसे गाँव के निकट ही अकस्मात एक झाड़ी में बाघ दिखाई दिया। यतींद्र को देखते ही बाघ गुर्राया और उसकी ओर झपटा । यतींद्र तो तैयार ही था। वह बाघ से भिड़ गया। बाघ की गुर्राहट और यतींद्र की चीख सुनकर गाँव के लोग भी उस ओर दौड़ पड़े। बाघ और यतींद्र की गुत्थम-गुत्था देखकर वे स्तब्ध रह गए। लेकिन उन्हें उस समय और भी आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने देखा कि घायल यतींद्र तो उठ खड़ा हुआ है और बाघ उसके सामने ज़मीन पर पड़ा हुआ तड़प रहा है और अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है। आमने-सामने की भिड़ंत में बाघ को मार डालने की इस असाधारण घटना के बाद से यतींद्रनाथ 'बाघा जतिन' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

जतिन के हृदय में आरंभ से ही विदेशी शासकों के प्रति आक्रोश की भावना भरी हुई थी । वे अंग्रेज़ों से बदला लेने का कोई अवसर नहीं चूकते थे। किसी भारतीय पर अत्याचार करते हुए किसी अंग्रेज़ को देखकर उनका खून खौल उठता था और वे उससे बदला लेने के लिए उतारू हो जाते थे।

एक दिन बाघा जतिन कोलकाता के गोरा बाज़ार में खड़े थे। उन्होंने देखा कि सामने एक अंग्रेज़ भारतीयों पर कोड़े बरसा रहा है। स्त्री है, बच्चा है, वृद्‌ध है, पढ़ा-लिखा है, इसकी परवाह किए बिना वह गिन-गिन कर कोड़े मार

रहा था – तीस, इकतीस, बत्तीस। यह अपमानजनक दृश्य भला जतिन कैसे देख सकते थे । उन्होंने झपट कर अंग्रेज़ के हाथ से कोड़ा छीन लिया और उसकी पीठ पर कोड़े बरसाने लगे— लो, तैंतीस, चौंतीस, पैंतीस। अंग्रेज़ हक्का-बक्का रह गया और उसने किसी तरह भाग कर अपनी जान बचाई।

अपनी राजसत्ता के मद में अंग्रेज़ भारतीयों को हीनता की दृष्टि से देखते थे और उन्हें अपमानित करने पर तुले रहते थे। एक दिन की बात है, वेल्स के राजकुमार की सवारी कोलकाता की एक सड़क से निकल रही थी। सड़क के दोनों ओर सैकड़ों स्त्री-पुरुषों की भीड़ खड़ी थी। वहीं एक बग्घी में कुछ भारतीय महिलाएँ भी बैठी थीं। जतिन ने देखा कि कुछ अंग्रेज़ उस बग्घी की छत पर जा बैठे और नीचे पैर लटका कर महिलाओं के साथ अभद्रता करने लगे। जतिन अपने को रोक नहीं सके। वे झपटकर छत पर बैठे अंग्रेज़ों पर टूट पड़े और लोगों ने देखा कि वे अंग्रेज़ मुँह के बल धरती पर गिरे पड़े हैं। बाद में वे उठकर भाग खड़े हुए। एक भारतीय के हाथ मार खाने के कारण वे इतने लज्जित थे कि इस घटना की उन्होंने किसी से चर्चा तक नहीं की।

ये कुछ घटनाएँ जतिन के साहसपूर्ण जीवन की उदाहरण मात्र हैं । उनका तो पूरा जीवन ही ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। इस कारण ही उस समय के क्रांतिकारियों के नेता महर्षि अरविंद ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उनका कहना था कि जतिन का स्थान मानवता की सर्वोच्च श्रेणी में बना रहेगा।

राष्ट्रभक्त-क्रांतिकारी यतींद्रनाथ मुखर्जी का जन्म 8 दिसंबर, 1879 ई.

को बंगाल में नदिया ज़िले के कोया नामक गाँव में अपनी ननिहाल में हुआ था। वे पाँच वर्ष के थे, तभी पिता उमेशचंद्र का साया उनके सिर पर से उठ गया। माँ शरत शशि ने बड़ी सावधानी से बालक का पालन-पोषण किया और उसके चरित्र-निर्माण और नैतिक गुणों के विकास पर विशेष ध्यान दिया। मामा ने जतिन की शिक्षा की व्यवस्था की। एफ.ए. की परीक्षा पास करने के बाद वे बंगाल सरकार के वित्त सचिव ह्वीलर के अधीन क्लर्क के पद पर नियुक्त हुए।

आजीविका के लिए विदेशी सरकार की नौकरी स्वीकार करने पर भी, जतिन के अंदर देशभक्ति की भावना भरी हुई थी। बंगाल में जो क्रांतिकारी आंदोलन आरंभ हुआ था, उसका पूरा प्रभाव उन पर पड़ रहा था। बंकिमचंद्र का प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंद मठ' प्रकाशित हो चुका था। यह उपन्यास और विशेष रूप से इसमें सम्मिलित 'वंदे मातरम्' गान क्रांतिकारियों का कंठहार बन गया था। जतिन 'आनंद मठ' से बहुत प्रभावित थे।

समाज सेवा के कामों में भी जतिन की बड़ी रुचि थी। जहाँ भी किसी को संकट में देखते, सहायता के लिए पहुँच जाते थे। उनकी इस सेवा-भावना से भगिनी निवेदिता बड़ी प्रभावित हुईं और उन्होंने जतिन की भेंट स्वामी विवेकानंद से कराई। जतिन के ऊपर संन्यासी भोलानाथ गिरि का भी प्रभाव पड़ा। भोलानाथ गिरि अपने शिष्यों में देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने का मंत्र फूँकने के लिए प्रसिद्ध थे। जतिन ने उनसे दीक्षा ले ली थी।

सन् 1905 के 'बंगभंग' विरोधी आंदोलन से प्रेरित होकर बंगाल में

अनेक गुप्त क्रांतिकारी संगठन बने। उनका उद्‌देश्य विदेशी सरकार के विरुद्‌ध अपनी समानांतर सरकार स्थापित करना था। इस आंदोलन में अरविंद घोष की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने अपने विचारों के प्रचार के लिए 'युगांतर' नाम की पत्रिका प्रकाशित की और इसी नाम का एक बड़ा क्रांतिकारी संगठन बनाया। इन सब कार्यों में जतिन अरविंद के प्रमुख सहयोगी थे। उनके उत्साह, लगन और राष्ट्रसेवा की भावना से प्रभावित होकर अरविंद उन्हें अपना दाहिना हाथ कहते थे।

जतिन यह सब कार्य सरकारी सेवा में रहते हुए कर रहे थे। उनकी सरकार विरोधी इन गतिविधियों की किसी को भनक भी नहीं लगती थी। अपने आकर्षक व्यक्तित्त्व के कारण वे युवकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। वे उनसे कहते – "इनसान बनो, गीता पढ़ो और मृत्यु से कभी मत डरो।"

सन् 1910 की बात है। कोलकाता हाईकोर्ट के भीड़ भरे आँगन में एक क्रांतिकारी ने सरकारी वकील की हत्या कर दी थी। इस मामले में अपने अनेक साथियों के साथ जतिन भी गिरफ़्तार हुए। उन पर 'हावड़ा षड्‌यंत्र केस' के नाम से मुकदमा चला, पर साक्ष्य के अभाव में सब लोग छूट गए। परंतु जतिन सरकार की आँखों में तो खटक ही गए थे। उनकी सरकारी नौकरी छूट गई और खुफ़िया विभाग उनके पीछे पड़ गया।

अब जतिन ने अपनी पूरी शक्ति क्रांतिकारी आंदोलन को संगठित करने में लगाई। उन्होंने अनेक छोटे-छोटे दलों को एक में मिलाया और उनके प्रयत्न

से 'युगांतर पार्टी' और भी सुदृढ़ हुई।

क्रांतिकारियों को अपने कार्य जारी रखने के लिए धन की बड़ी आवश्यकता थी। इसी से वे शस्त्र खरीद सकते थे। गुप्त संगठन होने के कारण किसी से खुलेआम चंदा माँगना संभव नहीं था। इसलिए धनी व्यक्तियों और व्यावसायिक संस्थाओं से बलपूर्वक धन वसूलना पड़ता था। जतिन के दल को भी ऐसे अनेक कार्य करने पड़े। इनमें 'गार्डनरीच' और 'बलियाघाट' की घटनाएँ विशेष प्रसिद्ध हुईं। इनमें क्रांतिकारियों के हाथ पर्याप्त धन लगा था। जतिन और उसके साथियों का देश के बाहर चल रहे क्रांतिकारी आंदोलनों से भी संबंध था। परंतु बाहर से हथियार मँगाने में उन्हें सफलता नहीं मिली।

सरकार के खुफ़िया विभाग को यह पता चल गया कि जतिन का पथरियाघाट का घर क्रांतिकारी गतिविधियों का केंद्र है और वहीं सारी योजनाएँ बनती हैं। एक दिन पुलिस ने अपना एक मुखबिर उनके घर भेजा। क्रांतिकारियों को ज्यों ही उसकी असलियत का पता चला, वह जीवित नहीं लौट पाया।

उसी दिन से सरकार की पूरी शक्ति जतिन के पीछे लग गई। किंतु जतिन उसके हाथ पड़ने वाले जीव नहीं थे । वे और उनके साथी स्थान बदलते रहे। पर अंत में पुलिस को उनके छिपने के एक अड्डे का पता चल गया। पुलिस दलबल के साथ उस अड्डे को जब तक घेरती, जतिन और साथी वहाँ से भी निकल गए। वे भूखे-प्यासे, कँटीली झाड़ियों और दलदल को पार करते हुए 20 किलोमीटर दूर बालासोर के जंगल में जा पहुँचे। लेकिन पुलिस को

उस स्थान का भी पता लग गया। उसने एक चाल और चली। आसपास के गाँवों में यह झूठा प्रचार करा दिया कि जंगल में चार-पाँच डाकू छिपे हुए हैं। इस मिथ्या प्रचार के कारण गाँव वाले धोखे में आ गए और वे भी पुलिस के साथ हो लिए।

9 सितंबर, 1915 ई. को पुलिस दल ने उस स्थान को चारों ओर से घेर लिया। लेकिन इस प्रकार घिर जाने पर भी जतिन घबराए नहीं। उनके साथ चार क्रांतिकारी युवक और थे – चित्तप्रिय, मनोरंजन, नीरेन और ज्योतिष। एक ओर इन क्रांतिकारियों के पास केवल माउज़र पिस्तौलें थीं और दूसरी ओर आधुनिक हथियारों से लैस सैकड़ों की संख्या में अंग्रेज़ों की पुलिस और गुमराह गाँव वाले थे। पुलिस ने चारों ओर ऐसा जाल बिछाया था कि उससे

बचकर निकलना असंभव था। फिर भी क्रांतिकारियों की बलिदान भावना को जानते हुए पुलिस आगे बढ़ने में हिचकिचा रही थी। उसने रेंगते हुए आगे जाने का निश्चय किया। क्रांतिकारियों ने ज्यों ही देखा कि पुलिस वाले उनकी पिस्तौलों की मार के अंदर पहुँच चुके हैं, वे गोलियाँ चलाने लगे। पुलिस दल ने भी गोली-वर्षा शुरू कर दी। क्रांतिकारियों की गोलियों से अनेक पुलिसकर्मी दम तोड़ चुके थे। लेकिन उनकी संख्या बहुत बड़ी थी। वे गोली चलाते हुए आगे बढ़ते गए। पुलिस की गोली से पहले शहीद होने वाले क्रांतिकारी थे– चित्तप्रिय। जतिन को भी कई गोलियाँ लग चुकी थीं। फिर भी वे लोग आखिरी गोली तक पुलिस का सामना करते रहे। दोनों ओर से 75 मिनट तक गोलियाँ चलती रहीं। ज्यों ही क्रांतिकारियों की ओर से गोलियाँ चलनी बंद हुईं, पुलिस ने इन घायल युवकों को गिरफ़्तार कर लिया। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। जतिन का ऑपरेशन हुआ, पर उसके बाद ही भारत माँ का यह सपूत सदा के लिए चल बसा। शेष युवकों पर मुकदमा चला। नीरेन और मनोरंजन को फाँसी की सज़ा हुई और ज्योतिष को आजीवन कारावास की सज़ा भोगने के लिए जेल में डाल दिया गया। मुकदमे की कार्यवाही के समय न्यायाधीश ने बचावपक्ष के वकील से जतिन का एक लेख पढ़ कर सुनाने के लिए कहा। लेख सुनकर न्यायाधीश के मुँह से अकस्मात निकल पड़ा– "यदि यह वीर जीवित होता तो विश्व का नेता होता।"

जतिन महान क्रांतिकारी तो थे ही, वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अंग्रेज़ी और बँगला भाषा पर उनका अच्छा अधिकार था। वे दोनों भाषाओं

में लिखते थे। उनके लेख 'युगांतर' पत्रिका में प्रकाशित होते थे। उनके विचार बड़े प्रगतिशील थे और वे रूढ़ियों तथा विकृत परंपराओं का खुलकर विरोध करते थे। इस कारण साहित्यकारों में उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी। क्रांतिकारी साथी तो उनके प्रति भक्तिभाव रखते ही थे, अपनी असाधारण निर्भीकता, उच्च मानवीय गुणों, बौद्धिक क्षमता और आध्यात्मिक रुचि के कारण वे विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर और प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता चित्तरंजन दास के भी प्रशंसा के पात्र बन गए थे।

मनुष्य मरणशील प्राणी है। जो संसार में आता है, उसे एक दिन जाना ही पड़ता है। परंतु देश के लिए संघर्ष करते हुए अपना जीवन न्योछावर करने वाले लोग विरले ही होते हैं। उनका बलिदान आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता है और इतिहास के पृष्ठों में उनका नाम सदा के लिए अंकित हो जाता है। बाघा जतिन एक ऐसे ही अमर बलिदानी थे।

***— लीलाधर शर्मा 'पर्वतीय'***

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. बाघा जतिन का पूरा नाम क्या था?
2. बाघा जतिन की किन-किन चीज़ों में रुचि थी?

3. बचपन की किस घटना से बाघा जतिन की हिम्मत और निडरता का पता चलता है?
4. बाघा जतिन को विदेशी सरकार की नौकरी क्यों स्वीकार करनी पड़ी?
5. बंगभंग विरोधी आंदोलन में अरविंद घोष ने क्या भूमिका निभाई?
6. अरविंद बाघा जतिन को अपना दाहिना हाथ क्यों कहते थे?
7. बाघा जतिन युवकों को क्या संदेश देते थे?
8. बाघा जतिन की सरकारी नौकरी क्यों छूट गई?
9. मुकदमे की कार्यवाही के दौरान न्यायाधीश ने जतिन का लेख सुनकर क्या कहा?

**(ख) लिखित**

1. यतींद्रनाथ मुखर्जी का नाम 'बाघा जतिन' कैसे पड़ गया?
2. किन घटनाओं से पता चलता है कि बाघा जतिन अंग्रेज़ों द्वारा भारतीयों के अपमान को बिलकुल सहन नहीं कर सकते थे?
3. बाघा जतिन पर किन-किन व्यक्तियों एवं घटनाओं का प्रभाव पड़ा?
4. बाघा जतिन ने क्रांतिकारी आंदोलन को संगठित करने के लिए क्या-क्या कार्य किए?
5. बाघा जतिन क्रांतिकारी आंदोलन के लिए धन क्यों और किस प्रकार इकट्ठा करते थे?
6. बाघा जतिन और उसके साथियों ने पुलिस से बचने के लिए क्या-क्या यत्न किए?
7. बाघा जतिन तथा उसके साथियों की पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
8. सिद्ध कीजिए कि बाघा जतिन महान क्रांतिकारी ही नहीं, बहुमुखी प्रतिभा के धनी भी थे ।

9. हम यह कैसे कह सकते हैं कि बाघा जतिन सामान्य मनुष्य से भिन्न थे?
10. बाघा जतिन के जीवन की कौन-सी घटनाएँ उनके निम्नलिखित गुणों पर प्रकाश डालती हैं?
    (क) साहस, निर्भीकता (ग) अत्याचार-विरोध
    (ख) अटूट देश प्रेम (घ) समाज सेवा

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए –
   व्यायाम यतींद्र व्याप्त वातावरण आजीविका विदेशी यदि
   युगांतर विकास युवा आश्चर्य
   उपर्युक्त शब्दों में 'य' तथा 'व' वर्णों का प्रयोग हुआ है। यह देखा गया है कि क्षेत्रीय प्रभाव के कारण कुछ लोग 'य' के स्थान पर प्रायः 'ज' का उच्चारण करते हैं और कुछ 'व' के स्थान पर 'ब' का उच्चारण करते हैं, जो अशुद्ध है । इसलिए 'य' तथा 'व' के उच्चारण पर ध्यान दीजिए।
2. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए –
   परेशानी भारतीय प्रभावित बिगड़ैल आध्यात्मिक गुर्राहट
   क्रांतिकारी अभद्रता
   आपने देखा कि उपर्युक्त शब्द क्रमशः 'ई', 'ईय','इत', 'ऐल', 'इक', 'आहट', 'कारी' और 'ता' प्रत्यय लगकर बने हैं । इन प्रत्ययों के प्रयोग से बने शब्द भाववाचक संज्ञा और विशेषण हैं । 'ई', 'ईय', 'इक', 'इत', 'आहट' प्रत्ययों के योग से दो-दो शब्द बनाइए और यह भी बताइए कि उनमें से कौन-से शब्द भाववाचक संज्ञा हैं और कौन-से विशेषण हैं ।

3. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए –

गुत्थम-गुत्था आमने-सामने हक्का-बक्का छोटे-छोटे छोटा-बड़ा
गिन-गिन भूरि-भूरि भूखे-प्यासे चार-पाँच खाना-वाना

ये शब्द युग्म हैं। ये पाँच प्रकार से बनाए जाते हैं –

(क) पुनरुक्ति द्वारा – कभी-कभी, छोटे-छोटे, जाते-जाते, दूर-दूर।
(ख) विलोम द्वारा – छोटा-बड़ा, दिन-रात, नया-पुराना, ऊपर-नीचे।
(ग) समानार्थक शब्दों द्वारा – दीन-हीन, साधु-संत, दुख-दर्द।
(घ) दो शब्दों में से एक निरर्थक शब्द के प्रयोग द्वारा – ठीक-ठाक, हल्ला-गुल्ला, चाय-वाय।
(ङ) दो निरर्थक शब्दों द्वारा – अंट-संट, गड्ड-मड्ड

पाठ में से ऐसे शब्द युग्म चुनिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

4. आप यह तो जानते हैं कि जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं और उनके अर्थ को सीमित करते हैं, वे क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे –

बाघ गाँव वालों पर **कभी-कभी** आक्रमण कर देता था।

निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियाविशेषण छाँटिए –

(क) अंग्रेज़ों ने अपने पैर बग्घी की छत से नीचे लटकाए।
(ख) अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण वे युवकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे।
(ग) पुलिस दल ने उस स्थान को चारों ओर से घेर लिया।

5. पाठ से पाँच मुहावरे चुनकर उनका अर्थ बताते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

## योग्यता-विस्तार

1. चंद्रशेखर आज़ाद और बाघा जतिन के क्रांतिकारी जीवन में भिन्नताओं के होते

हुए भी पर्याप्त समानता है। चंद्रशेखर आज़ाद की जीवनी पढ़िए और इन समानताओं, विभिन्नताओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. बाघा जतिन के अन्य साथियों के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**आव देखा न ताव** - बिना सोचे-समझे

**अकस्मात** - अचानक, एकाएक

**आक्रोश** - रोषपूर्ण भावना

**खून खौल उठना** - अधिक क्रोधित होना

**हक्का-बक्का** - भौंचक, घबराया-सा

**बग्घी** - चार पहियों की घोड़ा-गाड़ी

**अभद्रता** - अशिष्टता, असभ्यता

**अरविंद** - (1872 -1950) महान देशभक्त और क्रांतिकारी, जो बाद में उच्च ज्ञानी एवं योगी हो गए । इन्होंने पांडिचेरी में अपना आश्रम स्थापित किया

**आजीविका** - रोज़ी, रोज़गार

**बंकिम चंद्र** - (1838-1894) आधुनिक बँगला साहित्य के जनक और 'वंदे मातरम्' गान के रचयिता । स्वभाषा के कट्टर प्रेमी एवं देशभक्त, अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया, लेकिन उपन्यासों के कारण विशेष ख्याति प्राप्त की

**भगिनी निवेदिता** - स्वामी विवेकानंद की एक प्रमुख शिष्या जो आयरिश महिला थीं। स्वामी जी से प्रभावित होकर भारत आ गईं और अपना पूरा जीवन समाज-सेवा में लगा दिया

**स्वामी विवेकानंद** - (1863-1902) प्रसिद्ध संन्यासी, उपदेशक और समाज सेवक, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शिष्य, रामकृष्ण मिशन के संस्थापक, भारतीय संस्कृति के उन्नायक

**बंगभंग** - 1905 में अंग्रेज़ों ने बंगाल का विभाजन कर दिया, बंगाल की जनता ने जिसके विरोध में आंदोलन किया था। यह आंदोलन बंगाल तक सीमित न रह कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप में पूरे भारत में फैल गया।

**समानांतर** - बराबर स्तर पर काम करने वाला, समान अंतर पर होने वाला

**रवींद्रनाथ ठाकुर** - (1861-1941) बँगला के प्रसिद्ध साहित्यकार, काव्यसंग्रह 'गीतांजलि' पर 1913 ई. में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित, शांतिनिकेतन के संस्थापक

**चित्तरंजन दास** - (1870-1925) विख्यात वकील, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य, स्वतंत्रता सेनानी, स्वराज्य पार्टी के संस्थापकों में एक, गांधी जी के प्रभाव से वकालत छोड़कर असहयोग आंदोलन में भाग लिया और पूर्णतया राजनीति में आ गए

**विकृत** - विकार युक्त, बिगड़ा हुआ, कुरूप

# 16. बाल-लीला

(सूरदास कृष्ण-बाल-लीला के अद्भुत चितेरे हैं। यहाँ प्रस्तुत बाल-लीला के तीन पदों में से पहले पद में कवि ने माँ यशोदा की उस सहज अभिलाषा का चित्रण किया है जिसमें वह शिशु कृष्ण के घुटनों के बल चलने, दूध के दो दाँत निकालने, तोतली वाणी में बोलने और नंद को बाबा कहकर पुकारने आदि की इच्छा प्रकट करती हैं। दूसरे पद में कृष्ण के बाल-हठ और बाल सुलभ धमकी का सरस और सटीक चित्रण है। तीसरे पद में कृष्ण माँ यशोदा से ग्वाल-बालों की शिकायत करते हैं कि वे सब मुझसे गाय घिरवाते हैं जिससे मेरे पैर दर्द करने लगते हैं। माँ यशोदा उन ग्वाल-बालों को बुरा-भला कहकर कृष्ण के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करती हैं।)

जसुमति मन अभिलाष करै।<br>
कब मेरो लाल घुटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै।।<br>
कब द्वै दाँत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन झरै।<br>
कब नंदहिं बाबा कहि बोलै, कब जननी कहि मोहिं ररै।।<br>
कब मेरौ अँचरा गहि मोहन, जोइ-सोइ कहि मोसौं झगरै।<br>
कब धौं तनक-तनक कछु खैहै, अपने कर सौं मुखहिं भरै।।<br>
कब हँसि बात कहैगो मोसौं, जा छबि तैं दुख दूरि हरै।<br>
स्याम अकेले आँगन छाँड़े, आपु गई कछु काज घरै।।

इहिं अंतर अँधवाह उठ्यौ इक, गरजत गगन सहित घहरै।
सूरदास ब्रज-लोग सुनत धुनि, जो जहँ-तहँ सब अतिहिं डरै।।

मैया, मैं तौ चंद-खिलौना लैहौं।
जैहौं लोटि धरनि पर अबहीं, तेरी गोद न ऐहौं।।
सुरभी कौ पय पान न करिहौं, बेनी सिर न गुहैहौं।
ह्वैहौं पूत नंद बाबा कौ, तेरौ सुत न कहैहौं।।
आगैं आउ, बात सुनि मेरी, बलदेवहि न जनैहौं।
हँसि समुझावति, कहति जसोमति, नई दुलहिया दैहौं।।
तेरी सौं, मेरी सुनि मैया, अबहिं बियाहन जैहौं।
सूरदास ह्वै कुटिल बराती, गीत सुमंगल गैहौं।।

मैया हौं न चरैहौं गाइ ।

सिगरे ग्वाल घिरावत मोसौं, मेरे पाइ पिराइ ।।

जौ न पत्याहि पूछि बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाइ ।

यह सुनि माइ जसोदा ग्वालनि, गारी देति रिसाइ ।।

मैं पठवति अपने लरिका कौं, आवै मन बहराइ ।

सूर स्याम मेरौ अति बालक, मारत ताहि रिंगाइ ।।

*— सूरदास*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और सराहना

**(क) मौखिक**

1. कृष्ण की कौन-सी छवि माँ यशोदा के सारे कष्टों का निवारण कर सकती है?
2. बवंडर आने पर ब्रज के लोग क्यों डर गए?
3. कृष्ण के हठ को दूर करने के लिए यशोदा चुपके-चुपके से उनसे क्या कहती हैं?
4. दुलहन लाने के आश्वासन पर कृष्ण की तुरंत क्या प्रतिक्रिया होती है?
5. कृष्ण की बरात में कवि कुटिल बराती क्यों बनना चाहता है?
6. गाय चराने के लिए जाने से कृष्ण क्यों मना करते हैं?
7. कृष्ण अपनी शिकायत की सत्यता प्रमाणित करने के लिए माँ यशोदा के सामने क्या प्रस्ताव रखते हैं?

### (ख) लिखित

1. माँ यशोदा के मन में कृष्ण की किन-किन लीलाओं को निरखने की लालसा बनी हुई है?
2. अपनी हठ पूरी न होने पर कृष्ण माँ यशोदा को क्या-क्या धमकियाँ देते हैं?
3. कृष्ण की शिकायत पर माँ यशोदा की क्या प्रतिक्रिया होती है?

## योग्यता-विस्तार

1. सूरदास द्वारा रचित बाल-लीला के कुछ और पद पढ़िए ।
2. तुलसीदास द्वारा रचित 'कवितावली' से राम के बाल-वर्णन से संबंधित सवैये चुनिए और शिक्षक की सहायता से उनकी तुलना इन पदों से कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**जसुमति** - यशोदा

**अभिलाष** - इच्छा

**घुटुरुवनि** - घुटनों के बल

**पग** - पैर

**द्वै** - दो

**तोतर** - तोतली

**ररै** - पुकारेगा

**अँचरा** - आँचल

**अँधवाह** - बवंडर, (बालक कृष्ण को मारने के लिए तृणावर्त नामक राक्षस आँधी-बवंड़र बन कर आया था, जिससे ब्रजवासी भयभीत हो गए थे। कृष्ण ने उसका गला घोंट कर मार डाला था)

**लैहौं** - लूँगा

**ऐहौं** - आऊँगा

**सुरभी** - गाय

**पय-पान** - दुग्ध-पान

**बेनी** - चोटी

**गुहैहौं** - गुहाऊँगा

**ह्वैहौं** - हूँगा

**कहैहौं** - कहूँगा

**जनैहौं** - बताऊँगा

**कुटिल** - व्यंग्य करने वाला, हँसी-मज़ाक करने वाला

**सिगरे** - सब, सभी

**पाइ** - पाँव

**पिराइ** - दर्द करने लगते हैं

**बलदाउहिं** - बलराम से

**रिसाइ** - गुस्सा होकर

**पठवति** - भेजती हूँ

**लरिका** - लड़का

**रिंगाइ** - दौड़ा-दौड़ा कर

# 17. शल्य-चिकित्सा के [illegible]

प्रस्तुत पाठ हमें भारतीय चिकित्सा विज्ञान के उस स्वर्णिम युग की याद दिलाता है जिसमें आचार्य सुश्रुत के रूप में एक ऐसे व्यक्ति का जन्म हुआ जिसने शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में ऐसी नई-नई शल्य तकनीकें विकसित कीं, जो भावी शल्य-चिकित्सकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनके द्वारा रचित 'सुश्रुत-संहिता' चिकित्सा ग्रंथ आयुर्वेद का एक महान ग्रंथ है जिसमें शल्य-चिकित्सा की अनेक विलक्षण विधियों, यंत्रों और उपकरणों की व्यापक जानकारी दी गई है।)

भारत की एक बहुत प्राचीन नगरी है – वाराणसी। गंगा की निर्मल धारा सहस्रों वर्षों से इसके आँचल में मचल-मचल कर बहती रही है। इस नगरी का अपना सैकड़ों वर्ष पुराना वैभवशाली इतिहास है। हमेशा से यह नगरी शिक्षा का बड़ा केंद्र रही है। प्राचीन काल में यह काशी राज्य की राजधानी थी।

आज से लगभग ढाई हज़ार वर्ष पहले की बात है। गंगा तट से थोड़ी दूर एक पाठशाला थी। वहाँ आयुर्वेद (जीवनदान देनेवाला ज्ञान) की शिक्षा दी जाती थी। दूर-दूर से विद्यार्थी यहाँ आते और शल्य-चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करते। इस पवित्र मंदिर के द्वार केवल उनके लिए खुले थे, जिनका मन मानव-सेवा और प्रेम से ओतप्रोत होता था, जिनमें साधना और कठोर परिश्रम करने की लगन होती थी।

इस पाठशाला के आचार्य थे महर्षि सुश्रुत। शल्य-चिकित्सक के रूप में
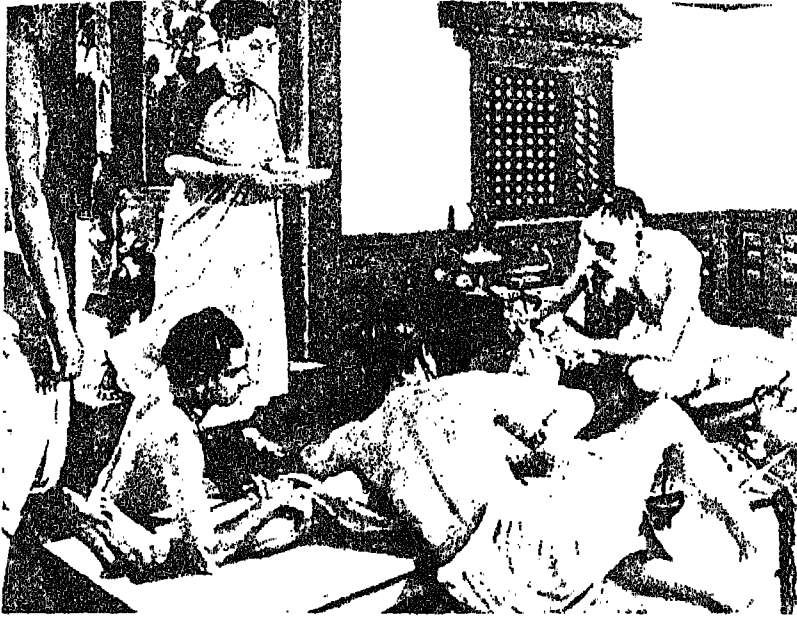
उनका यश चारों दिशाओं में दूर-दूर तक फैला हुआ था। वे स्वयं काशी के राजा दिवोदास के शिष्य थे। दिवोदास को भगवान धन्वंतरि का अवतार कहा गया है।

सुश्रुत के प्रारंभिक जीवन के बारे में आज कोई निश्चित जानकारी नहीं मिलती। बस, इतना ही कहा जा सकता है कि उनके पिता का नाम विश्वामित्र था और उनका बाल्यकाल गंगा की पावन लहरों से खेलते हुए बीता था। बड़े होने पर उन्होंने काशी के राजा और महान चिकित्साशास्त्री दिवोदास की देखरेख में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। वे अपने समय के अद्‌वितीय शल्य-चिकित्सक हुए। अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत-सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं, जो आगे चलकर बहुत से शल्य-चिकित्सकों के लिए

प्रेरणा का स्रोत बनीं। उनके द्‌वारा रचित चिकित्सा ग्रंथ 'सुश्रुत-संहिता' एक महान ग्रंथ है। यह ग्रंथ इस तथ्य का जीवंत प्रमाण है कि प्राचीन भारत के चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में अपने समय से बहुत आगे थे।

सुश्रुत-संहिता से हमें शल्य-चिकित्सा की विशद जानकारी मिलती है। इसमें कुल मिलाकर 120 अध्याय हैं और इन्हें छह भागों में बाँटा गया है – सूत्रस्थान, निदानस्थान, शरीरस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान और उत्तरस्थान।

इस ग्रंथ में शल्य-चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आनेवाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकरी दी है कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ। इसी तरह जब शरीर के कुछ अंग जलवृद्‌धि के कारण फूल जाएँ तो उनका जल सूई द्‌वारा कैसे खींच लेना चाहिए, यह विधि भी उपयुक्त रूप से बताई गई है। मूत्राशय की पथरी, भगंदर, बवासीर और मोतियाबिंद की शल्य-क्रिया के साथ-साथ, ज़रूरत पड़ने पर माँ के गर्भ में चीरा लगाकर शिशु को जन्म देने की शल्य-क्रिया और दंत-चिकित्सा तथा अस्थि-चिकित्सा की बारीकियों का अनूठा वर्णन भी सुश्रुत-संहिता में मिलता है। इसके अलावा काया श्रृंगार (प्लास्टिक सर्जरी) से जुड़े तरह-तरह के ऑपरेशन भी विस्तार से वर्णित हैं।

सुश्रुत-संहिता में शल्य यंत्रों की संख्या 101 बताई गई है। इन यंत्रों को हिंस्र पशु तथा पक्षियों के मुँह के आकार के अनुसार नाम दिए गए हैं, जैस–

सिंहमुख (सिंह के मुँह जैसा), गृध्रमुख (गिद्ध के मुँह जैसा), मक्रमुख (मगरमच्छ के मुँह जैसा) आदि। ये यंत्र आधुनिक शल्ययंत्रों से किसी भी तरह कम न थे। इनके साथ ही 20 और शल्ययंत्र भी वर्णित हैं। इनके नाम हैं – मंडलाग्र, करपत्र, मुद्रिका, बृहिमुख आदि। ये शल्य औज़ार प्रायः लौह धातु या चाँदी से बनाए जाते थे। इन्हें इस ढंग से बनाया जाता था कि इनकी धार कभी कमज़ोर न पड़े और इनमें कभी ज़ंग न लगे। उन्हें रखने के लिए खासतौर से लकड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जाते थे।

टाँके लगाने के लिए त्वचा और विभिन्न ऊतकों की मोटाई और रचना को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के धागे भी विकसित किए गए थे। कुछ का आधार रेशम की डोर होती थी तो कुछ सूत से बनाए जाते थे। कुछ चमड़े से तैयार किए जाते थे तो कुछ घोड़ों के बालों से। इसी प्रकार कई किस्म की सूइयाँ भी उपयोग में लाई जाती थीं – कुछ मोटी, कुछ पतली, कुछ अधिक घुमाव लिए हुए, तो कुछ कम और कुछ बिलकुल सीधी।

उन दिनों तरह-तरह की रूई, रेशम और मलमल से बनी पट्टियों का भी प्रचलन था।

दुर्घटनाओं में अथवा अस्त्र-शस्त्र के वार से फट गई आँतों के दो किनारों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली
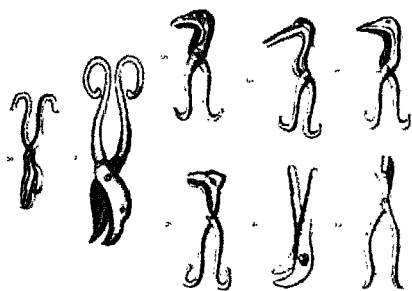
थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलाकर उस पर चींटे छोड़ दिए जाते। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे आपस में
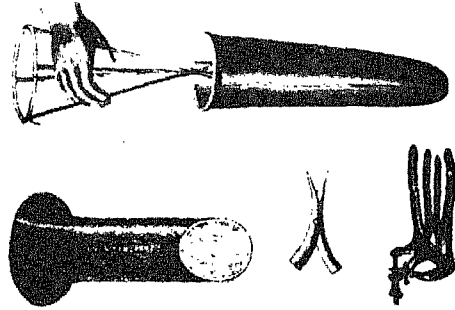
सिल-से जाते। अब चींटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिए जाते। कुछ ही दिनों में आँत का घाव भर जाता। साथ ही चींटों का सिर भी ऊतकों में अपने आप घुल-मिल जाता था। आजकल शल्य-चिकित्सक शरीर के भीतरी अंगों के टाँके लगाने के लिए भेड़ की आँत से बनाए गए धागों का उपयोग करते हैं। उद्देश्य यह रहता है कि टाँके भीतर ही भीतर घुल जाएँ जिससे टाँके निकालने के लिए कम-से-कम शरीर का वह भाग दोबारा न खोलना पड़े।

सुश्रुत-संहिता में शल्य-चिकित्सा के लगभग हर महत्त्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी गई है; जैसे – ऑपरेशन के बाद क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए, रोगी का आहार कैसा होना चाहिए, घाव भर जाए इसके लिए कौन-कौन-सी ओषधियाँ देनी चाहिए आदि।

प्राचीन भारत के चिकित्सकों को ओषधि विज्ञान के बारे में भी व्यापक जानकारी थी। उन्होंने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज की थी। साथ ही

रसायन भी खोज निकाले थे। ये रोगी का दुख-दर्द दूर करने में काम आते थे।

शल्यक्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न हो, इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज निकाली गई थीं जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वज़नदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी-सी नहर में डाल दिया जाता था। एक सप्ताह बाद जब बाहरी त्वचा और ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े बुरुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था । इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी।

सुश्रुत जितने बड़े शल्य-चिकित्सक थे, उतने ही श्रेष्ठ गुरु भी थे। शल्यकला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है — इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्ज़ियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या तकनीक अपनाएँ — इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाज़ा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के

फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदरे चमड़े पर, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

इस प्रशिक्षण में उत्तीर्ण होने के बाद ही शिष्य के प्रशिक्षण का दूसरा चरण शुरू होता। अब उसे किसी कुशल शल्य-चिकित्सक की देखरेख में रख दिया जाता था। वह तरह-तरह की शल्यक्रियाएँ देखता और उनसे सीखता जाता। फिर कुछ समय बाद जब वह पूरी तरह परिपक्व हो जाता, तब उसे गुरु की देखरेख में स्वयं ऑपरेशन करने की अनुमति दी जाती थी। इस तरह पूर्ण प्रशिक्षण और अनुभव पाकर ही वह पाठशाला से बाहर निकलता था।

सुश्रुत मूलतः शल्य-चिकित्सक थे। किंतु उन्होंने क्षय रोग, कुष्ठ रोग, मधुमेह, हृदय रोग, एवं विटामिन सी की कमी से होने वाले रोग – स्कर्वी के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। ईसा से 600 वर्ष पूर्व और 1000 ई. तक का समय भारतीय चिकित्सा विज्ञान के लिए स्वर्णिम युग था। आत्रेय, जीवक, चरक और वाग्भट्ट जैसे बहुत से यशस्वी चिकित्साशास्त्रियों ने भारत की पावनभूमि पर जन्म लिया। काशी के साथ-साथ नालंदा और तक्षशिला के प्राचीन विश्वविद्यालय भी सैकड़ों वर्षों तक उच्चकोटि की शिक्षा के लिए विश्वविख्यात रहे। यहाँ दूर-दूर से शिक्षार्थी आते और चिकित्सा विज्ञान में निपुण होकर मानव कल्याण की प्रतिज्ञा लेते। चिकित्सा

विज्ञान के कुछ इतिहासकारों का तो यह भी कहना है कि यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुत-से सिद्धांत प्राचीन भारतीय चिकित्सकों के विचारों पर ही आधारित हैं।

*– यतीश अग्रवाल*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. लेखक ने वाराणसी का क्या महत्त्व बताया है?
2. आयुर्वेद-पाठशाला में किस प्रकार के विद्यार्थियों को प्रवेश मिल सकता था?
3. 'सुश्रुत-संहिता' किस तथ्य का जीवंत प्रमाण है?
4. सुश्रुत द्वारा टाँके लगाने के लिए किस-किस प्रकार के धागे प्रयुक्त किए जाते थे?
5. शल्य क्रिया के दौरान रोगी को कष्ट न होने देने के लिए क्या उपाय किया जाता था?
6. सुश्रुत ने मानव शरीर के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने की क्या विधि निकाली?
7. काशी के साथ-साथ कौन-कौन से प्राचीन विश्वविद्यालयों में उच्चकोटि की शिक्षा दी जाती थी?

### (ख) लिखित

1. 'सुश्रुत-संहिता' का संक्षेप में परिचय दीजिए।
2. सुश्रुत अपने विद्यार्थियों को चीरा लगाने का प्रशिक्षण-अभ्यास कराने के लिए क्या-क्या युक्तियाँ अपनाते थे?
3. सुश्रुत-संहिता में वर्णित शल्य यंत्रों के नाम और उनकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. फट गई आँतों के दो किनारों को जोड़ने के लिए सुश्रुत द्वारा खोजी गई तकनीक को विलक्षण क्यों कहा गया है?
5. सुश्रुत-संहिता में चिकित्सा विज्ञान के किन-किन महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी गई है?
6. सिद्ध कीजिए सुश्रुत महान शल्य-चिकित्सक तो थे ही, श्रेष्ठ गुरु भी थे।
7. किस काल को भारतीय चिकित्सा विज्ञान का स्वर्णिम युग माना गया है और क्यों?

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए –

   क्षेत्र, क्षय, आत्रेय, विज्ञान, प्रतिज्ञा, सुश्रुत

   आपने देखा कि उपर्युक्त शब्दों में 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ', 'श्र' संयुक्त वर्ण हैं। उक्त सभी वर्ण संयुक्त होने पर नया रूप ले लेते हैं, जैसे –

   क् + ष = क्ष, त् + र = त्र, ज् + ञ = ज्ञ, श् + र = श्र।

   क्ष, त्र, ज्ञ, श्र से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए और उनका उच्चारण कीजिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए –

   (क) **यह** नगरी शिक्षा का एक बहुत बड़ा केंद्र रही है।

(ख) **इस** पाठशाला के आचार्य महर्षि सुश्रुत थे।

(ग) **उस** मंदिर के द्‌वार सबके लिए खुले थे।

(घ) **वे** यंत्र आधुनिक शल्य यंत्रों से किसी भी तरह कम न थे।

उपर्युक्त मोटे छपे पद मूलतः सर्वनाम हैं किंतु वे संज्ञा पदों से पूर्व प्रयुक्त हुए हैं और संज्ञा पद की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे पदों को 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। जब ये पद (यह, वह, ये, वे) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं तो 'सर्वनाम' कहलाते हैं और जब ये संज्ञा की विशेषता बताते हैं तो 'सार्वनामिक विशेषण' कहलाते हैं। यह भी ध्यान दें कि 'यह', 'वह', 'ये' और 'वे' के बाद अगर परसर्ग आ जाए तो वे क्रमश 'इस', 'उस', 'इन' और 'उन' पदों में बदल जाते हैं; जैसे– वाक्य (ख) और (ग) में।

नीचे लिखे गद्‌यांश में से सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषणों को छाँटकर लिखिए –

इस ग्रंथ में शल्य-चिकित्सा की विधियों और उसमें काम आने वाले यंत्रों तथा शस्त्रों के बारे में व्यापक जानकारी दी गई है। शरीर के किसी भाग में मवाद पड़ जाने पर चीरा लगाना आवश्यक होता है, यह महत्त्वपूर्ण तथ्य सुश्रुत से छिपा न था। उन्होंने इस बारे में स्पष्ट जानकारी दी है कि इस स्थिति में चीरा कैसे और कहाँ लगाएँ।

3. पाठ में 'चिकित्सा' शब्द के साथ अन्य शब्द के योग से अनेक समस्तपद बने हैं, जिनमें चिकित्सा शब्द कहीं पूर्वपद के रूप में प्रयुक्त हुआ है तो कहीं उत्तरपद के रूप में; जैसे – चिकित्सा-शास्त्री, चिकित्सा-विज्ञान, शल्य-चिकित्सा और दंत-चिकित्सा।

इन समासों का विग्रह निम्नलिखित प्रकार से होगा –

चिकित्साशास्त्री = चिकित्सा का शास्त्री

चिकित्सा विज्ञान = चिकित्सा का विज्ञान

शल्य-चिकित्सा = शल्य के द्‌वारा चिकित्सा

दंत-चिकित्सा = दाँतों की चिकित्सा

उपर्युक्त चारों समासों का विग्रह 'का', 'की', 'के द्‌वारा' हो रहा है। इसलिए ये तत्पुरुष समास हैं।

पाठ में आए पाँच समस्तपद छाँटिए और उनका विग्रह करते हुए यह भी बताइए कि उनमें कौन-से समास हैं?

4. निम्नलिखित वाक्य पढ़िए –
   (क) अपने जीवनकाल में उन्होंने बहुत-सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं, जो आगे चलकर बहुत-से शल्य-चिकित्सकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं।
   (ख) इसके लिए कुछ ऐसी सक्षम जड़ी-बूटियाँ भी खोज निकाली गईं, जिनके देने से रोगी गहरी नींद में सो जाता था।

   पाठ में उपर्युक्त प्रकार के अनेक वाक्य हैं जिनमें ऐसे वाक्य भी हैं जिनका प्रारंभ 'जो', 'जिस', 'जिन' आदि पदों से हुआ है। ऐसे वाक्य सामान्यतः 'विशेषण उपवाक्य' कहलाते हैं।

   पाठ में से 'जो', 'जिस', 'जिन' पदों से शुरू होने वाले तीन विशेषण उपवाक्य चुनिए।

5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए –

   **उदाहरण** – सुश्रुत ने बहुत-सी नई शल्य तकनीकें विकसित कीं।

   => सुश्रुत के द्‌वारा बहुत-सी नई शल्य तकनीकें विकसित की गईं।

   उपर्युक्त उदाहरणों में पहला वाक्य कर्तृवाच्य में और दूसरा वाक्य कर्मवाच्य में है। कर्तृवाच्य में क्रिया को करने वाला स्वयं कर्ता होता है और कर्मवाच्य में कर्म

प्रमुख होता है। इसके कारण वाक्य में कर्ता के बाद 'द्वारा' अथवा 'के द्वारा' लगाया जाता है या कर्ता का लोप हो जाता है।

निम्नलिखित कर्तृवाच्य वाक्यों को कर्मवाच्य वाक्यों में रूपांतरित कीजिए –

(क) सुश्रुत ने हर महत्त्वपूर्ण पहलू पर विस्तृत जानकारी दी है।

(ख) उन्होंने बहुत-सी जड़ी-बूटियों की खोज की थी।

(ग) झाड़ियों और लताओं से बने बुरुश इन चीज़ों को शरीर से अलग करते हैं।

(घ) आँतों के दो किनारों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी।

6. मूल शब्दों से अनेक नए शब्द बनते हैं। ऐसे सभी शब्द मिलकर 'शब्द परिवार' बनाते हैं, जैसे – राजा से महाराज, महाराजा, राजा-महाराजा, राजकुमार, राजमहल, राजधानी, राजदूत आदि।

   निम्नलिखित मूल शब्दों से अधिकाधिक नए शब्द बनाइए –

   विद्या, शिक्षा, शरीर, शरण, यश।

## योग्यता-विस्तार

1. कुछ अन्य भारतीय चिकित्सकों की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में उनकी चर्चा कीजिए।
2. शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में हुई नई उपलब्धियों के विषय में चर्चा कीजिए। दूरदर्शन और रेडियो पर मस्तिष्क की शल्यक्रिया, हृदय, गुर्दा आदि अंगों के प्रत्यारोपण संबंधी कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं, उन्हें देखिए, सुनिए और उन पर चर्चा कीजिए।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**शल्य-चिकित्सा** - चीर-फाड़ द्‌वारा इलाज

**मचल-मचल कर बहना** - चंचलता के साथ बहना

**प्रवर्त्तक** - आरंभ करने वाला, आविष्कार करने वाला

**सहस्त्र** - एक हज़ार

**आयुर्वेद** - भारतीय चिकित्सा शास्त्र

**ओतप्रोत** - भरपूर, परिपूर्ण

**महर्षि** - श्रेष्ठ ऋषि, बहुत बड़ा ऋषि

**धन्वंतरि** -देवताओं के वैद्‌य जो पुराणानुसार समुद्रमंथन के समय हाथ में अमृत लिए हुए समुद्र से निकले थे

**अद्‌वितीय** - जिसके समान दूसरा न हो

**तकनीक** - तरीका, विधि

**जीवंत** - जीता-जागता

**विशद** - स्पष्ट, व्यापक

**मवाद** - पीब

**जलवृद्‌धि** - एक रोग विशेष जिसमें पेट में पानी भर जाता है

**भगंदर** - एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा (मलद्‌वार) के किनारे होता है

**बवासीर** - एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं

**हिंस्त्र** - खूँखार, खतरनाक, जंगली

**त्वचा** - खाल

**ऊतक** - जीवों या वनस्पतियों का वह सूक्ष्म अंश जो एक ही ढंग की कोशिकाओं से बना हो

**आँत** - पेट के भीतर की लंबी नली जिसमें भोजन की पाचन-क्रिया होती है, अँतड़ी

**सक्षम** - प्रभावी, समर्थ

**मशक** - भेड़ या बकरी की खाल को सी कर बनाया हुआ थैला, जिसे पानी ढोने के लिए प्रयोग किया जाता है

**दीमक** - चींटी की तरह का एक कीड़ा जो लकड़ी, कागज़ आदि को चाट कर खोखला और नष्ट कर देता है

**रुग्ण** - बीमार, अस्वस्थ

**प्रशिक्षण** - ट्रेनिंग, किसी विशेष कार्य (व्यवसाय) के लिए व्यावहारिक ज्ञान और आवश्यक कौशल प्राप्त करना

**क्षय रोग** - यक्ष्मा, तपेदिक, टी.बी.

**कुष्ठ** - कोढ़

**मधुमेह** - एक रोग जिसमें खून में शक्कर की मात्रा अधिक हो जाती है, प्रमेह

**यशस्वी** - जिसका बहुत यश हो, कीर्तिमान

**काशी** - वर्तमान वाराणसी, प्राचीनकाल से यह नगर शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र रहा है

**नालंदा** - बिहार प्रदेश में राजगिरि के निकट स्थित प्राचीन नगर। शिक्षा के लिए विश्व प्रसिद्ध । यहाँ तिब्बत, चीन, जावा, श्रीलंका आदि देशों के विद्यार्थी और विद्वान भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। यहाँ सभी विषयों की शिक्षा दी जाती थी किंतु बौद्ध धर्म की महायान शाखा की शिक्षा पर विशेष बल था

**तक्षशिला** - एक प्राचीन नगर जो भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी था। वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी के पास स्थित। यह नगर शिक्षा के लिए सारे विश्व में प्रसिद्ध था और सुदूर देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन के लिए आते थे

# 18. सर चंद्रशेखर वेंकटरमन

(प्रस्तुत पाठ विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त विश्वविख्यात भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन से लेखक की मुलाकात पर आधारित एक संस्मरण है। लेखक को अपनी मुलाकात के दौरान सर वेंकटरमन के अद्‌भुत व्यक्तित्व एवं कृतित्व का जो परिचय मिलता है उससे हमारे सम्मुख एक ऐसे व्यक्ति का चित्र उभरता है जिसमें अनुसंधानकर्ता की लगन और विज्ञान की गहरी पैठ के साथ-साथ एक वृद्‌ध की सनक और शिशु जैसी सरलता का अद्‌भुत सम्मिश्रण है।)

29 मई, 1957 ! .... बंगलौर के सांध्य आकाश में श्यामल मेघ घिर आए हैं। घूमते-घूमते सहसा हमारे आतिथेय धनजी भाई बोल उठते हैं, "रमन इंस्टीच्यूट देखोगे ?" और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना गाड़ी को एक विशाल और भव्य भवन के अहाते की ओर मोड़ देते हैं। द्‌वार पर लिखा है, 'यह आम रास्ता नहीं है। बिना आज्ञा प्रवेश वर्जित है।' मैं हठात उस ओर संकेत करता हूँ तो धनजी भाई कहते

हैं, "यह तो विदेशियों के लिए लिखा है। संस्था हमारी है। हमें कौन रोक सकता है ?" और बरामदे के पास गाड़ी रोककर वह चपरासी को पुकारते हैं, "रमन साहब हैं ? उनको बोलो कि हम आए हैं।"

कुछ कहूँ कि इससे पूर्व ही देखता हूँ कि अंदर से आकर एक व्यक्ति तेज़ी से अंग्रेज़ी में कह रहा है, "मैं जानता हूँ तुम बिना आज्ञा अंदर आए हो, पर कोई बात नहीं। किसी से कहना मत। मेरे पास पंद्रह मिनट हैं .....।"

हम लोग सँभलें कि वे तीव्र गति से आगे बढ़ जाते हैं। हम विश्वास ही नहीं कर पाते कि नोबेल पुरस्कार प्राप्त, प्रकाश एवं नाद विज्ञान के विशेषज्ञ, विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन ये ही हैं। कोट, पतलून, जूता, दक्षिण भारतीय शैली की पगड़ी, नाक कुछ लंबी, बाईं ओर का दाँत टूटा हुआ। बाँह और गले पर से कोट भी फटा हुआ। ये हैं– रमन ! यह व्यक्तित्व है इनका !

विचार तीव्र गति से उमड़ते-घुमड़ते हैं । उतनी ही तीव्र गति से वे बोलते चले जाते हैं । सहसा गंभीर होकर वे मेरी ओर मुड़ आते हैं और पूछते हैं, "जानते हो, मेरा मतलब क्या है ?"

मैं अचकचाकर कहता हूँ, "जी .....जी"

तभी यशपाल जी हँसते हुए मेरा हाथ दबाते हैं, "क्या खाक जानते हो। यह तो उनका तकियाकलाम है।"

सचमुच उस एक घंटे में वे अनेक बार इस वाक्य का प्रयोग करते हैं। आरंभ में उन्होंने कहा था, मेरे पास तो पंद्रह मिनट हैं। लेकिन जब हम उनसे

विदा लेते हैं तो पता लगता है कि एक घंटा कभी का बीत चुका है। जल-प्रलय के सिद्धांत की व्यर्थता से लेकर पत्तों के, कोयले के नाना रूपों में रूपांतरण, हीरे के निर्माण, नाना धातुओं, ग्रेनाइट, न जाने इन सबके बारे में वे हम अवैज्ञानिकों को क्या-क्या बता देते हैं। तीव्रता से बोलते रहते हैं, "देखो, यह है ऑयल डायमंड। यह इंडस्ट्रियल डायमंड है, ये मोती हैं, चमकते हैं न ? ना-ना, इन्हें छूना मत । हीरे कोयले की खानों में ही पैदा होते हैं, पर उनको चमकदार बनाने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। तुम तो जानते ही हो कि भारत में नोबेल प्राइज़ पाने वाले दो व्यक्ति थे। अब एक मैं ही जीवित हूँ इसीलिए मेरी मुसीबत है।"

बीच-बीच में वे ऐसी बातें कह जाते हैं कि जिनका कोई पूर्वापर संबंध नहीं होता, लेकिन अर्थ अवश्य होता है। उनके संग्रहालय में नाना प्रकार के शंख, सीपियाँ, तितलियों का भंडार, समुद्र के नाना रूप जीव-जंतु हैं। आग्रहपूर्वक वे एक-एक वस्तु को दिखाते हैं। दिखाते ही नहीं, समझाते हैं। घूम-घूमकर पूरा भवन दिखाते हैं, बाग दिखाते हैं, कहाँ क्या बनाने की उनकी कल्पना है, यह सब बड़ी आत्मीयता से समझाते हैं और बीच-बीच में सहसा हमारी ओर मुड़कर कह उठते हैं, "क्या तुम इस बारे में कुछ लिखोगे ? मैं जानता हूँ, तुम कुछ नहीं लिखोगे।"

फिर एक क्षण बाद कहते हैं, "यदि लिखो तो यह अवश्य लिखना कि ऊपर की मंज़िल की खिड़की से चारों ओर का दृश्य बहुत मनोरम दिखाई देता है।"

और फिर सांध्य मेघों की तरल छाया में दूर तक फैली हुई हरितवसना

पहाड़ियों और ऊँचे वृक्षों को स्निग्ध दृष्टि से देखते हुए कहते हैं, "है न बंगलौर सुंदर !"

मैं कभी उनकी ओर देखता हूँ, कभी चारों ओर के सौंदर्य पर दृष्टि डालता हूँ। इंस्टीच्यूट के भीतर भी तो सब कुछ सुंदर ही सुंदर है। अचानक दृष्टि ब्लैकबोर्ड पर अटक कर रह जाती है। उस पर विज्ञान के किसी सिद्धांत के बारे में कुछ लिखा है। कह उठता हूँ, "कितने सुंदर अक्षर हैं, मोती जैसे !"

वैज्ञानिक रमन मुसकराकर कहते हैं, "विज्ञान आदमी को सौंदर्य की ही प्रेरणा देता है।"

इसी प्रसंग में सुधीर कहता है, "मेरी पुस्तक में आपका चित्र है।"

वे तुरंत उसके कंधे पर हाथ रखकर बोल उठते हैं, "तो तुम विद्यार्थी हो ! मैं तुमको कुछ ऐसी वस्तुएँ दिखाऊँगा जो किसी को दिखाना पसंद नहीं करता। मेरे साथ आओ।" और वे हमको अपने छोटे-से कमरे में ले जाते हैं, जिसमें कई अलमारियाँ हैं। वे उन्हें खोलते हैं और देखते-देखते हमारे सामने नाना रंग के अनेक मैडल और अनेक प्रमाणपत्रों का ढेर लग जाता है। अनेक मैडलों के बीच में प्रकाश फेंकते हुए नोबेल पुरस्कार के उस भव्य पदक को हम बड़ी उत्सुकता से देखते हैं, जो उन्हें 1930 में भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने के लिए मिला था। श्री रमन ने अपना जीवन भारतीय अर्थ विभाग में असिस्टेंट एकाउंटेंट जनरल के पद से आरंभ किया था, लेकिन शीघ्र ही वे विज्ञान के क्षेत्र में आ गए और फिर तो विश्व के

सर्वोच्चकोटि के वैज्ञानिकों की श्रेणी में पहुँचकर ही रुके। उन्होंने विज्ञान की शिक्षा विदेशों में नहीं प्राप्त की। इसी देश की मिट्टी में अपनी महानता को खोजा। समुद्र को देखकर उन्होंने कल्पना की कि स्वच्छ जल में होकर जब प्रकाश चलता है तब प्रकाश के फैलने की प्रक्रिया में नाना रंग उत्पन्न होते हैं।

उनकी इस खोज के बारे में सोचते-सोचते न जाने मैं कहाँ चला जाता हूँ कि सहसा सुनता हूँ, वे कह रहे हैं, "इस पदक को देखो, कितना असुंदर है।"

सहसा झटका लगता है, लेकिन जब उस बोर्ड पर लगे हुए पदकों को देखता हूँ तो सचमुच ही उनमें 'भारत रत्न' का पदक असुंदर ही दिखाई देता है। उससे असुंदर एक और पदक है 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' का। गलतफ़हमी न हो, यहाँ भौतिक सौंदर्य की चर्चा है और मैं जानता हूँ, उन्होंने इस शब्द का प्रयोग इसीलिए किया कि कुछ क्षण पहले मैंने अक्षरों के सौंदर्य की प्रशंसा की थी।

एकाएक वे बोल उठते हैं, "आओ, आओ, आप लोगों को कुछ और सुंदर वस्तुएँ दिखाएँ।"

और वे तीव्र गति से आगे बढ़ जाते हैं । पीछे-पीछे हम भी एक छोटे-से कमरे में पहुँचते हैं। विज्ञान के नाना उपकरणों से सजा यह कमरा कुछ ही क्षणों में इंद्रधनुष के प्रकाश से जगमगा उठता है। आश्चर्य से हम एक-दूसरे को देखते हैं। जैसे हम सब रंगों के सागर में तैर रहे हों। वैसे ही, जैसे नाना रूप-रंग की परियाँ बच्चों के स्वप्न संसार में तैरा करती हैं और प्रकाश तथा रंग के जादूगर रमन हैं कि कभी यह स्विच दबाते हैं तो कभी वह, और फिर

कोट की जेब में हाथ डालकर स्रष्टा की तरह निःसंग भाव से मुसकराने लगते हैं और वह पराबैंगनी प्रकाश हमको अलौकिक रूप देता रहता है।

काफ़ी कुछ देख चुके हैं। अंत में सोने और हीरे के नाना रूपों को देखते हैं, इस बार हिंदी में कहते हैं, "सब देखा, हो गया।"

और फिर बोल उठते हैं, "मैंने तुम्हें इतना समय दिया। मेरा भी एक काम करना। तुम लोगों को कहीं से हीरे मिलें तो मेरे पास भेज देना, अच्छा!"

और फिर वही शिशु-सुलभ शरारत भरी मुसकान। हम भी मुसकराते हुए कह देते हैं, "अवश्य भेजेंगे।"

हम सब छत पर आ गए हैं। विदा लें, इससे पूर्व यशपाल जी उनसे प्रार्थना करते हैं, "आपका एक चित्र खींचने की इच्छा है।"

वे जैसे एकदम तड़प उठते हैं, "इस फटे कोट में चित्र खींचोगे ? यानी आप दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि मैं फटा कोट पहनता हूँ ? खैर, कोई बात नहीं, खींच लो।"

यशपाल भाई फ़ोटो खींचते हैं और फिर हम इस आकस्मिक अद्‌भुत प्रसंग से अभिभूत कई क्षण मौन चलते रहते हैं।

वे उसी निःसंग भाव से हाथ मिलाते हैं, नमस्कार करते हैं और मुसकराते हुए धूमकेतु की तरह जैसे आए थे वैसे ही भीतर चले जाते हैं। जब चले जाते हैं तब हमें उनकी उपस्थिति का भान होता है।

छह वर्ष बाद आज (1963) मैं सोचता हूँ कि अनुसंधानकर्ता की लगन, वृद्‌ध की सनक और शिशु की सरलता– इनकी सीमा-रेखा कितनी

पतली है । इस चित्र में क्या वे एक साथ सरल स्वभाव, कल्पनाप्रिय, सद्‌भावी और आत्म-प्रदर्शन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी नहीं जान पड़ते ? परंतु सच यह है कि जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है।

*— विष्णु प्रभाकर*

## प्रश्न-अभ्यास

### बोध और विचार

**(क) मौखिक**

1. लेखक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन से कहाँ और कैसे मिला?
2. रमन को देखकर लेखक यह विश्वास क्यों नहीं कर पाया कि विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन वही हैं?
3. चंद्रशेखर वेंकटरमन ने ऐसा क्यों कहा कि भारत में नोबेल पुरस्कार पाने वाले एक मात्र जीवित व्यक्ति होने के कारण उनकी मुसीबत है?
4. रमन ने 'भारत रत्न' पदक तथा 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से प्राप्त पदक को किस अर्थ में असुंदर कहा है?
5. अपना चित्र खींचे जाने की बात पर पहले भड़कने और बाद में उसके लिए तैयार हो जाने से चंद्रशेखर वेंकटरमन के स्वभाव की किस विशेषता पर प्रकाश पड़ता है?

### (ख) लिखित

1. 'इसी देश की मिट्टी में ही उन्होंने अपनी महानता को खोजा' – इस वाक्य का क्या आशय है और इससे आज के भारतीय नवयुवकों को क्या प्रेरणा मिलती है?
2. 'सर चंद्रशेखर वेंकटरमन में अनुसंधानकर्ता की लगन, सौंदर्यप्रियता, वृद्ध की सनक और शिशु की सरलता थी'– पाठ में वर्णित प्रसंगों से इस कथन की पुष्टि कीजिए।
3. सर चंद्रशेखर वेंकटरमन ने लेखक तथा उसके साथियों को किन-किन बातों की जानकारी दी?
4. 'जो जितना ऊँचा उठता है, वह उतना ही सरल और सहज रहता है' – किसी महापुरुष का उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए ।
5. 'हम इस आकस्मिक अद्भुत प्रसंग से अभिभूत कई क्षण मौन चलते रहते हैं।' आकस्मिक अद्भुत प्रसंग क्या था?

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए –

   (क) रुकना, रुपया, गुरु, रूप, रूपांतरण, शुरू

   (ख) संग्रहालय, तीव्र, प्रलय, चित्र, परिश्रम, इंडस्ट्रियल, राष्ट्र, ड्रामा

   (ग) पूर्व, प्रार्थना, अर्थ, सर्वोच्च, निर्माण, विद्यार्थी, वर्जित

   ध्यान दीजिए कि इन्हें लिखने में 'र' की निम्नलिखित विशेष स्थितियाँ हैं –

   (क) 'र्' के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्रा अलग ढंग से लगती है – 'रु' और 'रू'

   (ख) 'ख' में दिए गए शब्दों में 'र' स्वर सहित है। लेकिन लगता है कि वह स्वर

रहित है और जिस व्यंजन की पाई में जुड़ा है वह स्वर सहित है । लेकिन बात उलटी है । वास्तव में इन शब्दो में 'ग', 'व', 'प', 'त', 'श', 'ट', 'ड' स्वर रहित हैं । मानक उच्चारण करने और समझने के लिए इन्हें अन्य प्रकार से भी लिखा जा सकता है; जैसे –

संग्रहालय, तीव्र, प्रलय, चित्र,परिश्रम, इंडस्ट्रियल, राष्ट्र, ड्रामा ।

–स्वर रहित 'ट्' और 'ड्' जब स्वर सहित 'र' के साथ जुड़ते हैं तब 'र' उनके नीचे (^) के रूप में लिखा जाता है ।

– स्वर रहित 'त्' जब स्वर सहित 'र' के साथ जुड़ता है तब 'त्र' रूप में लिखा जाता है।

–स्वर रहित 'श्' जब स्वर सहित 'र' के साथ जुड़ता है तब 'श्र' रूप में लिखा जाता है।

(ग) उपरोक्त अभ्यास 'ग' में दिए गए शब्दों में 'र्' स्वर रहित है, जिसे 'रेफ़' भी कहते हैं । यह जहाँ उच्चरित होता है, उसके अगले वर्ण के ऊपर लिखा जाता है। मानक उच्चारण करने और समझने के लिए इन्हें अन्य प्रकार से भी लिखा जा सकता है, जैसे – पूर्व, प्रार्थना, अर्थ, सर्वोच्च, निर्माण, विद्यार्थी, वर्जित। यदि अगला वर्ण स्वर रहित है तब 'रेफ़' इसके अगले वर्ण के ऊपर लगता है; जैसे – अर्घ्य (अर्घ्य), वर्ण्य (वर्ण्य)।

इसी प्रकार यदि अगले वर्ण के साथ मात्रा लगी हो तो रेफ़ मात्रा के ऊपर लगता है; जैसे – आशीर्वाद, विद्यार्थी, गर्माहट।

पाठ में आए ऐसे शब्दों की सूची बनाइए जिनमें (क, ख और ग) के अंतर्गत आए संयुक्त वर्णों का प्रयोग हो ।

2. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए –
   पीछे-पीछे, घूमते-घूमते, जीव-जंतु, उमड़ते-घुमड़ते, मचल-मचल।
   उपर्युक्त शब्द शब्द युग्म हैं।
   पाँच शब्द युग्मों की सूची बनाइए और वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए ।
3. निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से पढ़िए –
   आध्यात्मिक – अध्यात्म + इक
   वैज्ञानिक – विज्ञान + इक
   औद्‌योगिक – उद्‌योग + इक
   लौकिक – लोक + इक
   उपर्युक्त शब्द 'इक' प्रत्यय के योग से बने हैं । मूल शब्द के साथ 'इक' प्रत्यय लगाने से शब्द के पहले स्वर में इस प्रकार परिवर्तन होता है –
   अ, आ => आ, इ, ई => ऐ, उ, ऊ, ओ => औ
   निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए –
   दिन, इतिहास, नीति, सप्ताह, भूगोल।
4. वाक्य में पदक्रम का विशेष महत्त्व होता है । यदि इस पदक्रम में कोई गलत परिवर्तन होता है तो सही अर्थ की प्राप्ति नहीं होती और कई बार अर्थ का अनर्थ हो जाता है । किंतु आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि कभी-कभी विशेष पद पर बल देने अथवा उसमें गहनता लाने के लिए पदक्रम में परिवर्तन भी होता है। इस पाठ में – 'ये हैं रमन !' वाक्य को देखिए। व्याकरण के नियम के अनुसार सामान्य वाक्य 'ये रमन हैं' होना चाहिए। इस वाक्य के पदक्रम में 'रमन' पर बल देने की दृष्टि से परिवर्तन किया है ।
   निम्नलिखित वाक्यों के पदक्रम में हुए परिवर्तन में निहित अर्थ की विशेषता

बताइए और फिर वाक्यों को व्याकरण के नियम के अनुसार लिखिए –

(क) यह व्यक्तित्व है इनका !

(ख) उससे असुंदर एक और पदक है कलकत्ता विश्वविद्यालय का ।

(ग) बाईं ओर का दाँत टूटा हुआ ।

(घ) है न बंगलौर सुंदर !

(ङ) कितने सुंदर अक्षर हैं मोती जैसे !

5. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए –

**उदाहरण**– मैं कभी उनकी ओर देखता हूँ । => मैंने कभी उनकी ओर देखा।
उपर्युक्त उदाहरण में आपने देखा कि कर्ता के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग सकर्मक क्रिया के सामान्य भूतकाल में ही होता है । इसी प्रकार निम्नलिखित वाक्यों का रूपांतरण कीजिए –

(क) तुम मेरे लिए काम करते हो ।

(ख) वे उसी निःसंग भाव से हाथ मिलाते रहे ।

(ग) मैं उस ओर संकेत करता हूँ ।

(घ) मैं अक्षरों के सौंदर्य की प्रशंसा करता था ।

## योग्यता-विस्तार

1. पुस्तकालय से पुस्तक लेकर सर चंद्रशेखर वेंकटरमन की जीवनी पढ़िए ।
2. इस देश में अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने जन्म लिया है । उनके संबंध में जानकारी प्राप्त कीजिए और उनमें से किन्हीं दो की विशेषताओं पर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. विभिन्न क्षेत्रों में नोबेल पुरस्कार पाने वाले अन्य भारतीय महापुरुषों के योगदान के बारे में एक अलबम तैयार कीजिए ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**सांध्य** - संध्या का

**आतिथेय** - अतिथि-सत्कार करने वाले

**इंस्टीच्यूट** - संस्था

**वर्जित** - निषिद्ध, मना

**हठात** - सहसा, अचानक

**सँभलना** - सावधान होना, सतर्क होना

**नोबेल पुरस्कार** - अल्फ्रेड नोबेल द्वारा विश्वशांति की स्थापना के प्रयत्नों को बढ़ाने के लिए स्थापित संस्था द्वारा प्रतिवर्ष भौतिक विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, रसायन शास्त्र, साहित्य, अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय शांति और मानव सेवा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार

**नाद-विज्ञान** - ध्वनि-विज्ञान

**अचकचाकर** - चौंक कर, भौचक्का होकर

**क्या खाक जानते हो** - कुछ भी नहीं जानते हो

**तकियाकलाम** - बोलते समय किसी एक शब्द या वाक्य को बार-बार प्रयोग करने की आदत, सखुनतकिया

**जल-प्रलय** - पृथ्वी के थल भाग का जल में डूब जाना

**व्यर्थता** - निरर्थकता, अनुपयोगिता

**ग्रेनाइट** - एक प्रकार का कठोर पत्थर

**इंडस्ट्रियल डायमंड** - उद्योग-धंधों में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का हीरा

**पूर्वापर संबंध** - पहले-पीछे का संबंध

**आत्मीयता** - अपनापन, मैत्री

**मनोरम** - मन को लुभाने वाला, सुंदर

**तरल छाया** - हलकी छाया

**हरितवसना** - हरी-भरी

**स्निग्ध** - मृदुल, दयालु

**सर्वोच्च** - सबसे बड़ा, सर्वोपरि

**गलतफ़हमी** - कुछ का कुछ समझना, भ्रम होना

**उपकरण** - औज़ार, यंत्र

**स्रष्टा** - सृष्टि को रचने वाला, सृजन करने वाला

**निःसंगभाव** - बिना किसी लगाव के, निर्लिप्त

**धूमकेतु** - पुच्छल तारा

**अलौकिक** - लोकोत्तर, अद्भुत, असाधारण

**शिशु-सुलभ** - बच्चों जैसी सरल

**महत्त्वाकांक्षी** - बड़ा बनने की अभिलाषा रखने वाला

**आकस्मिक** - अचानक होने वाला

**अभिभूत होना** - अत्यधिक प्रभावित होना

**अनुसंधानकर्ता** - शोध करने वाला, खोज करने वाला

**सनक** - धुन, पागलपन, दीवानगी

# १९. बसंती हवा

(बसंत के आगमन पर मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि सभी में एक नई ऊष्मा, नई चेतना और नई ऊर्जा दौड़ने लगती है, फिर हवा ही उससे वंचित क्यों रहे । कवि ने प्रस्तुत कविता में बसंती हवा के मस्तमौलापन, उसकी बेफ़िक्री, निडरता, मस्ती और उसके शरारतीपन का रोचक चित्रण किया है।)

हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ !

सुनो बात मेरी –
अनोखी हवा हूँ !
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला ।
नहीं कुछ फ़िकर है,
बड़ी ही निडर हूँ ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मुसाफ़िर अजब हूँ!

न घर-बार मेरा,
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,

न आशा किसी की,
न प्रेमी, न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ !
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ !

जहाँ से चली मैं,
जहाँ को गई मैं –
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं,
झुमाती चली मैं !
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ !

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया,
गिरी धम्म से, फिर,
चढ़ी आम ऊपर
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू'
उतरकर भगी मैं,
हरे खेत पहुँची –
वहाँ गेहुँओं में,
लहर खूब मारी ।
पहर दोपहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं !
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी –
हिलाया-झुलाया,
गिरी पर न कलसी !
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों !
हवा हूँ, हवा मैं,
बसंती हवा हूँ !

मुझे देखते ही
अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया,
न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा —
पथिक आ रहा था,
उसी पर धकेला,
हँसी ज़ोर से मैं,
हँसीं सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी,
बसंती हवा में,
हँसी सृष्टि सारी !
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ !!

***— केदारनाथ अग्रवाल***

## प्रश्न-अभ्यास

## बोध और सराहना

### (क) मौखिक

1. प्रस्तुत कविता में कवि ने बसंती हवा के स्वभाव और क्रिया-कलापों का चित्रण किस रूप में किया है?
2. बसंती हवा ने अपनी मस्ती में किन-किन को झुमा दिया?
3. बसंती हवा ने सरसों को क्यों नहीं हिलाया-झुलाया?
4. अरहर के साथ शरारत करने पर बसंती हवा के साथ और कौन-कौन हँसे?

5. कविता की निम्नलिखित पंक्तियों के सौंदर्य की मुख्य विशेषता बतलाइए –
   (क) बड़ी बावली हूँ, बड़ी मस्तमौला
   (ख) चढ़ी पेड़ महुआ, थपाथप मचाया
   (ग) पथिक आ रहा था, उसी पर धकेला
6. अरहर के लजाने का क्या आशय है?

**(ख) लिखित**

1. बसंती हवा ने स्वयं को मस्तमौला क्यों बताया है?
2. महुए, आम, अलसी और अरहर के साथ बसंती हवा ने क्या-क्या अठखेलियाँ कीं?
3. बसंती हवा का चित्रण कवि ने किस शैली में किया है?
   (क) वर्णनात्मक (ग) आत्म-कथात्मक
   (ख) संवादात्मक (घ) कथात्मक

## योग्यता-विस्तार

1. 'भारत की ऋतुओं में बसंत ऋतु का महत्त्व' विषय पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए ।
2. 'बसंत ऋतु' पर लिखी कविताओं का संकलन कीजिए ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**बसंती हवा** - वसंत ऋतु में चलने वाली हवा
**बावली** - पगली, सनकी
**मस्तमौला** - आज़ाद तबीयत का, सदा मस्त रहने वाला

**मुसाफ़िर** - यात्री,

**अजब** - अनोखा, विचित्र

**पोखर** - तालाब

**महुआ** - एक प्रकार का पेड़, जिसके फूल, फल खाने के काम आते हैं

**झकोरा** - ज़ोर से हिलाया

**अलसी** - तीसी, सरसों की तरह तेल के काम आने वाली

**कलसी** - छोटा घड़ा या गगरी

**अरहरी** - अरहर का पौधा, दाल के रूप में प्रयुक्त एक अनाज

**लहलहाते** - प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित, खुशी से भरे हुए

# 26. आत्मविश्वास

(आत्मविश्वास जीवन की सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है। इस तथ्य को लेखक ने इस निबंध में अनेक उदाहरणों द्‌वारा प्रतिपादित किया है। उसके अनुसार स्वयं व्यक्ति के अतिरिक्त और कोई यह निर्णय नहीं कर सकता कि वह सफल है या असफल, अभागा है अथवा भाग्यवान।)

— बाली से कौन लड़ सकता है महाराज?

— क्यों, ऐसी उसमें क्या बात है?

— महाराज, उसे ऐसा वरदान प्राप्त है कि जो उसके सामने आता है, उसकी आधी ताकत उसमें आ जाती है और वह उसे आसानी से पछाड़ देता है।

सुग्रीव ने राम से अपने भाई बाली के संबंध में यह बात कही थी और यह बात इतनी पक्की थी कि राम भी बाली के सामने आकर नहीं लड़े और उसे पेड़ की आड़ से ही उन्होंने निशाना बनाया ।

दूसरे की, सामनेवाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति का जो वरदान बाली को प्राप्त था, वह हम सबको भी प्राप्त है, पर दुर्भाग्य यह है कि हमने कभी उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए विरोधी हमें पीटते रहे हैं और हम उस पीटने को अनिवार्य समझकर पिंटते रहे हैं।

सच बात यह है कि जब कोई विरोधी हमारे सामने आता है तो हम अपनी आत्महीनता से, कायरता से, कुसंस्कार से, आत्मविश्वास की कमी से विरोधी का और अपना बल तौले बिना ही उसे अपने से शक्तिशाली मान लेते हैं। बस, यही मानना हमारी शक्ति को आधी कर देता है और वह आधी हमारे विरोधी को प्राप्त इस अर्थ में हो जाती है कि हम उससे आधे रह जाते हैं। हममें आत्मविश्वास हो तो उससे हम विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं, उसकी आधी शक्ति अपने में ले सकते हैं।

आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुश्मन है दुविधा, क्योंकि दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती है। आदमी की शक्ति को बाँट देती है। बस वह आधा इधर और आधा उधर, इस तरह खंडित हो जाता है।

मेरे एक मित्र अपनी पत्नी के साथ जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे बात कर रहे थे। बात करते-करते पत्नी सो गई, वह उपन्यास पढ़ने लगे। अचानक उन्हें लगा कि सामने से भेड़िया चला आ रहा है—उन्हीं की तरफ़। भेड़िया,

एक खूँखार जानवर। वह इतने घबरा गए कि पत्नी को सोता छोड़कर ही भाग खड़े हुए। भाग्य से कुछ दूर ही उन्हें एक बंदूकधारी सज्जन मिल गए। वह उनके पैरों में गिर पड़े, "मेरी पत्नी को बचाइए, भेड़िया उसे खा रहा है", वह गिड़गिड़ाए।

शिकारी दौड़ा-दौड़ा उनके साथ पेड़ के पास आया, तो उनकी पत्नी यथापूर्व सो रही थी और 'भेड़िया' उसके पास रखी टोकरी में मुँह डाले पूरियाँ खा रहा था। "कहाँ है भेड़िया?" शिकारी ने बंदूक साधते हुए पूछा – तो काँपते हुए वह बोले – "वह है तो सामने।" शिकारी बहुत ज़ोर से हँस पड़ा –"भले मानस, वह बेचारा कुत्ता है" क्या बात हुई यह? वही कि भय ने उन्हें आत्मविश्वासहीन कर दिया।

कृष्ण ने महाभारत में सर्वोत्तम काम यही किया कि पांडवों को उन्होंने आत्मविश्वास से भर दिया। वह अपने कार्य के महत्त्व को समझते थे, तभी तो पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अर्जुन से कहा था – "परेशान मत हो, युद्ध कर, तू निश्चित रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाएगा।"

नेताजी सुभाषचंद्र बोस जब आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में बैठे तो अंग्रेज़ी परीक्षक ने पूरी तेज़ी से घूमते हुए बिजली के पंखे की ओर इशारा कर उनसे पूछा, "क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?" सुभाष बाबू ने झट से पंखा बंद कर दिया और बोले, "जी हाँ, सुगमता के साथ !"

परीक्षक प्रसन्न हो गया, पर उसने उन्हें एक बार और कसौटी पर कसा। उसने अपनी अँगूठी उनके सामने रखकर पूछा, "क्या इसमें से सुभाषचंद्र बोस पास हो सकता है?" सुभाष बाबू ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उसमें से पास करते हुए कहा, "जी इस तरह !" यह है अटूट आत्मविश्वास। इसके अभाव में यदि वह घबरा जाते और ऊटपटाँग जवाब देते तो फ़ेल हो जाते।

दूसरे हमारी क्षमता का विश्वास करें और हमारी सफलता को निश्चित मानें, इसके लिए आवश्यक शर्त यही है कि हमारा अपनी क्षमता और सफलता में अखंड विश्वास हो। हमारे भीतर उगा भय, शंका और अधैर्य ऐसे डायनामाइट हैं, जो हमारे प्रति दूसरों के विश्वास को खंडित कर देते हैं।

हमारे विद्यालय में, जो नगर से दूर जंगल में था, चौदह वर्ष का एक बालक अपने घर से अकेला पढ़ने आया करता था। कुछ महीने बाद दूसरा

बालक भी उसके साथ आने लगा। वह दूसरा बालक बहुत डरपोक था। वह भूतों और चोरों की कहानियाँ उसे सुनाया करता। इसका ऐसा प्रभाव पड़ा कि पहला बालक भी डरपोक हो गया और वे दोनों मेरी प्रतीक्षा करते रहते कि मैं चलूँ, तो वे भी मेरे साथ चलें।

सूत्र यह बनता है – हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों और सदा असफलता का ही मर्सिया पढ़नेवालों के संपर्क से दूर रहो। नीति का वचन है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँह तोड़ उत्तर देना संभव न हो, तो वहाँ से उठ जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि इसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास की भावना खंडित होने का भय रहता है।

अनुभव वाणी है – "मनुष्य के जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि वह सदा मानता – अनुभव करता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा ही होगा। जो भी कार्य मैं हाथ में लूँगा, उसमें मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।"

बहुत-से मनुष्य यह सोच-सोचकर कि हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी, दैव हमारे विपरीत है, अपनी सफलता को अपने ही हाथों पीछे धकेल देते हैं, उनका मानसिक भाव सफलता और विजय के अनुकूल बनता ही नहीं, तो सफलता और विजय कहाँ! यदि हमारा मन शंका और निराशा से भरा है, तो हमारे कामों का परिणाम भी निराशाजनक ही होगा, क्योंकि सफलता की, विजय की, उन्नति की कुंजी तो अविचल श्रद्धा ही है।

क्या मैं अभागा हूँ?

क्या मैं भाग्यवान हूँ?

इन प्रश्नों का सही उत्तर जानने के लिए किसी ज्योतिषी से पूछने की आवश्यकता नहीं। इसके लिए तो आप अपने से ही पूछिए कि आप अपने को अभागा अनुभव करते हैं या भाग्यवान? अभागा अनुभव करते हैं तो कोई आपको भाग्यवान नहीं बना सकता और भाग्यवान अनुभव करते हैं, तो कोई आपको अभागा नहीं बना सकता।

अपने मन को सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता के विचारों और भावनाओं से सदा भरपूर रखिए और सफलता, विजय, सौभाग्य और श्रेष्ठता की ओर आगे बढ़ते रहिए।

जीवन में उतार भी हैं और चढ़ाव भी। जो लोग हमेशा उतार की ही बात सोचते हैं वे उन लोगों की तरह हैं जो कूड़ाघरों के पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं।

जन्म से अंधी-बहरी, पर विचारक और लेखिका के रूप में विश्वविख्यात हेलेन केलर की यह सूक्ति सदा याद रखिए कि "सुख का एक द्वार बंद होने पर तुरंत दूसरा खुल जाता है लेकिन कई बार हम उस बंद द्वार की ओर इतनी तल्लीनता से ताकते रहते हैं कि हमारे लिए जो द्वार खोल दिया गया है, हम उसे देख ही नहीं पाते।"

युद्ध में वे विजयी नहीं होते, जो खंदक-खाइयों को ताकते-झाँकते हैं। विजयमाला पड़ती है उनके गले, जो अपनी संपूर्ण शक्ति को तौलकर छलाँग लगाते हैं, खतरों से खेलते हैं। जीवन के इस अनुभव को कभी मत भूलिए –

जो हड़बड़ा के रह गया वो रह गया इधर।
जिसने लगाई एड़ वो खंदक के पार था।

*— कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'*

## बोध और विचार

### (क) मौखिक

1. बाली को क्या वरदान प्राप्त था?
2. राम बाली के सामने आकर क्यों नहीं लड़े?
3. दुविधा आत्मविश्वास का सबसे बड़ा शत्रु क्यों है?
4. लेखक का मित्र कुत्ते को भेड़िया क्यों मान बैठा?
5. सुभाषचंद्र बोस ने परीक्षक द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर पंखा क्यों बंद कर दिया?
6. परीक्षक द्वारा सुभाषचंद्र बोस के आगे अँगूठी रखने का क्या उद्देश्य था?
7. लेखक अपने विद्यालय के दो छात्रों का उदाहरण देकर क्या सिद्ध करना चाह रहा है?
8. व्यक्ति को कैसे पता चल सकता है कि वह अभागा है या भाग्यवान?
9. अँगूठी के संबंध में पूछे गए प्रश्न के क्या-क्या जवाब हो सकते थे?

### (ख) लिखित

1. लेखक के मित्र के घबरा उठने का क्या कारण था? आपकी दृष्टि में उसका व्यवहार कहाँ तक ठीक था?

2. लेखक ने हमारे भीतर के भय, शंका और अधैर्य को डायनामाइट क्यों कहा है?
3. पाठ में प्रस्तुत सूत्र, नीति-वचन एवं अनुभव-वाणी के द्‌वारा कौन-कौन-सी तीन सीखें दी गई हैं? इन तीनों के मूल में कौन-सा भाव प्रमुख है?
4. 'हम अपनी सोच के कारण ही सफल-असफल, अभागा या भाग्यवान बनते हैं।' आशय स्पष्ट कीजिए।
5. लेखक हेलेन केलर का उदाहरण देकर क्या समझाना चाह रहा है?
6. लेखक ने जीवन को युद्‌ध क्यों माना है और उसमें जीत किसके हाथ लगती है?
7. 'आत्मविश्वास के बलबूते पर जीवन में सब कुछ करना संभव है।' टिप्पणी करते हुए अपने परिवेश से कुछ उदाहरण दीजिए।

## भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्‌ध उच्चारण कीजिए –

   बाली शिकारी बिजली कसौटी बीमार रुचि पीटना

   शक्ति नीति उन्नति विपत्ति वीरान नीति पिटना

   सामान्यतः विद्‌यार्थी शब्द के अंत में ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' के उच्चारण में विशेष अंतर नहीं करते हैं। हमें इस अंतर की ओर ध्यान देना चाहिए। इसी प्रकार विद्‌यार्थी शब्द के प्रारंभ में आनेवाले ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' के उच्चारण में प्रायः अशुद्‌धि कर देते हैं।
2. निम्नलिखित शब्द युग्मों को पढ़िए –

   भाग्यवान - अभागा शक्तिशाली - शक्तिहीन

   संस्कार - कुसंस्कार सफलता - असफलता

   ये शब्द युग्म परस्पर विपरीत अर्थ का बोध करा रहे हैं। इन्हें 'विलोम' या

'विपरीतार्थक' शब्द कहते हैं। ये विलोम शब्द उपसर्ग 'अ' तथा 'कु' से और 'वान', 'हीन' 'शाली' प्रत्ययों से बने हैं।

3. निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार दिए गए शब्दों से शब्द परिवार बनाइए –
   **उदाहरण** – फल = सफल, असफल, सफलता, असफलता, निष्फल, विफल।
   भाग्य, आशा, उत्साह, परीक्षा, जय
4. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –
   (क) "मेरी पत्नी को बचाइए, भेड़िया उसे खा रहा है।" वह गिड़गिड़ाया।
   (ख) सुभाष बाबू ने झट-से पंखा बंद कर दिया और बोले, "जी हाँ, सुगमता के साथ !"

   आपने देखा कि वक्ता या लेखक के कथन को जैसा का तैसा उद्धृत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न ( " " ) का प्रयोग होता है।

   निम्नलिखित वाक्यों में उद्धरण चिह्न लगाकर पुनः लिखिए –

   (ग) शिकारी बहुत ज़ोर से हँस कर बोला – भले मानस, वह बेचारा कुत्ता है।
   (घ) परीक्षक ने अपनी अँगूठी सुभाषचंद्र बोस के सामने रखकर पूछा, क्या इसमें से सुभाषचंद्र बोस पास हो सकता है?
   (ङ) अनुभव वाणी है – मनुष्य के जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि वह सदा मानता-अनुभव करता रहे कि मेरे लिए सब कुछ अच्छा ही होगा। जो भी कार्य मैं हाथ में लूँगा, उसमें मुझे सफलता अवश्य मिलेगी।
5. आदेश देने या प्रार्थना करने के लिए नीचे 'दे' धातु के विभिन्न रूप दिए गए हैं, इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए –
   दे, दें, दो, दीजिए, दीजिएगा।

## योग्यता-विस्तार

1. 'केवल आत्मविश्वास हमें परीक्षा में सफलता दिला सकता है।' इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद का आयोजन कीजिए।
2. इस पाठ में आई कविता की पंक्तियों में तथा निम्नलिखित दोहे के भाव में क्या समानता है –

   'जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ ।<br>
   मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ ।।'

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**आत्महीनता** - आत्मिक निर्बलता, मन में हीन भावना

**कुसंस्कार** - बुरे संस्कार, बुरी आदत

**एकाग्रता** - अचंचलता, तल्लीनता

**अखंड** - जिसके टुकड़े न हों, संपूर्ण

**खूँखार** - डरावना, भयंकर

**अभंग** - अखंड, अटूट, लगातार

**हतोत्साह** - निरुत्साह

**मर्सिया** - मरसिया, किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखा हुआ शोक गीत

**अविचल** - स्थिर, अटल

**खंदक** - खाई, गहरा गड्ढा

# 21. अशोक का शस्त्र-त्याग

(प्रस्तुत एकांकी में मगध-कलिंग युद्‌ध की प्रसिद्‌ध ऐतिहासिक घटना का उल्लेख है, जिसने सम्राट अशोक जैसे विजयोन्मत्त और निर्दयी व्यक्ति के मन में करुणा, दया, प्रेम आदि भावनाओं का संचार किया। इसमें भारतीय वीरांगनाओं के दृढ़ संकल्प, साहस एवं मातृभूमि के लिए सर्वस्व-त्याग की भावना का परिचय भी मिलता है। साथ ही इससे यह सत्य भी उजागर होता है कि हिंसा के द्‌वारा राज्य जीते जा सकते हैं, हृदय नहीं। प्रेम, करुणा, दया और सेवाभाव के द्‌वारा ही हृदय जीता जा सकता है।)

(प्रथम दृश्य)

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविर में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं । उनके मुख पर चिंता की छाया है । वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं ।)

**अशोक** : (*स्वत:*) आज चार साल से यह युद्‌ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका है । दोनों ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं । पर हम आज भी असफल हैं । क्या होगा इसका परिणाम?

**द्‌वारपाल** : (*सिर झुकाकर*) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है ।

**अशोक** : आने दो ।

**संवाददाता** : (*प्रवेश कर*) महाराज अशोक की जय हो ! शुभ संवाद है । गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं ।

**अशोक** : (*प्रसन्नतापूर्वक*) मारे गए हैं ! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है !

(*संवाददाता चुप रहता है।*)

**अशोक** : बोलते क्यों नहीं हो तुम? चुप क्यों हो?

**संवाददाता** : (*धीरे से*) बोलूँ क्या महाराज ! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज

भी बंद हैं । फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया।

**अशोक** : (*उत्तेजित होकर*) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

**संवाददाता** : हाँ महाराज ! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं ।

**अशोक** : (*उत्तेजित होकर खड़े होते हुए*) बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा । कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी । जाओ । (*हाथ से जाने का संकेत करते हैं।*)

(दूसरे दिन प्रातःकाल। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठै हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।)

**अशोक** : मेरे वीर सैनिको ! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम कलिंग को जीत नहीं पाए हैं । उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है । कलिंग के महाराज मारे गए हैं । उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है । आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे ।

**सब सैनिक** : (*तलवार खींचकर*) मगध की जय ! सम्राट अशोक की जय !! (सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है । सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं । उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं । शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है । सेना के आगे पुरुष वेश में एक वीरांगना है, जो सैनिक के वेश में साक्षात चंडी-सी दिखाई देती है । यह कलिंग महाराज की लड़की पद्मा है । स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है । अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं । अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

**पद्मा** : (*आगे बढ़कर अपनी सेना से*) बहनो ! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो । मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है । जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है । आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है । तुम प्रण करो कि जननी जन्मभूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

**अशोक** : (*स्वतः*) यह कौन है? क्या साक्षात दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर आई है? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं । क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना ! ना ! मैं स्त्री-वध

नहीं करूँगा । मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा । (*प्रकट*) सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (*आगे बढ़कर*) तुम कौन हो, देवी?

**पद्मा** : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ । मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ । जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता । कहाँ हैं अशोक? कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ ।

**अशोक** : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी ! दोषी मैं ही हूँ । परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है । मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा ।

**पद्‌मा** : क्यों महाराज?

**अशोक** : शास्त्र की आज्ञा है, राजकुमारी !

**पद्‌मा** : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिंदूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को जो तुम्हें यह सिखाता है । मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ । तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ । अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ । कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं ।
(*अशोक सिर झुका लेते हैं*) ।

**पद्‌मा** : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

**अशोक** : बहुत हो चुका राजकुमारी ! मैं अब युद्ध नहीं करूँगा । कभी युद्ध नहीं करूँगा । (*तलवार नीचे फेंक देते हैं।*)

**पद्‌मा** : यह क्या महाराज !

**अशोक** : (*अपने सैनिकों से*) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो । आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा । फेंक दो अपनी तलवारें।
(*सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।*)

**पद्मा** : (*आगे बढ़कर*) मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज ! मैं आपसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

**अशोक** : (*सिर झुकाकर*) तो लीजिए बदला, राजकुमारी ! मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(*अशोक सिर झुका कर खड़े हो जाते हैं*)

**पद्मा** : तो जाइए महाराज ! स्त्रियाँ भी निहत्थे पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए।

(*पद्मा अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।*)

([illegible])

(अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं । उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

**बौद्ध भिक्षु**: (*अशोक से*) कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि ............

**अशोक** : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि ..............

**बौद्ध भिक्षु**: जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे ........

**अशोक** : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे .........

**बौद्ध भिक्षु**: अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

**अशोक** : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

**बौद्ध भिक्षु**: मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदावर्त सबको मिलेगा।

**अशोक** : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदावर्त सबको मिलेगा।

**बौद्ध भिक्षु**: प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

**अशोक** : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्तिभर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

**बौद्ध भिक्षु**: बोलो –

बुद्धं शरणं गच्छामि।

धर्मं शरणं गच्छामि।

संघं शरणं गच्छामि।

**सभी** : बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

*(पटाक्षेप)*

***— बंशीधर श्रीवास्तव***

## प्रश्न-अभ्यास

## बोध और विचार

### (क) मौखिक

1. सम्राट अशोक की चिंता का मूल कारण क्या था?
2. संवाददाता ने अशोक के प्रश्न पर चुप्पी क्यों साध ली?
3. अशोक ने सेना का स्वयं संचालन करने का निश्चय क्यों किया?
4. दुर्ग के फाटक खुलने पर अशोक और उसकी सेना के चकित होने का क्या कारण था?
5. युद्धभूमि में पद्मा को सामने देखकर अशोक के मन में क्या-क्या विचार उठे?
6. पद्मा की युद्ध करने की चुनौती को स्वीकार न करना अशोक के चरित्र की किस विशेषता को प्रकट करता है?
7. 'आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए' — पद्मा ने यह कथन किस संदर्भ में कहा?

8. पद्मा और अशोक के बीच हुए संवादों के परिणामस्वरूप अशोक के विचारों में क्या परिवर्तन आया?
9. बौद्ध भिक्षु ने अशोक से क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ करवाईं?

### (ख) लिखित

1. अशोक ने अपनी सेना से क्या प्रण करने के लिए कहा?
2. पद्मा ने अपनी जन्मभूमि की रक्षा करने का संकल्प किन शब्दों में किया?
3. इस संकल्प से पद्मा के चरित्र की क्या विशेषताएँ प्रकट होती हैं?
4. आपकी दृष्टि में इस एकांकी का प्रमुख पात्र कौन है? और क्यों?

## भाषा-अध्ययन

1. एक ही संवाद को अलग-अलग प्रकार से पढ़ने पर अर्थ में अंतर आ जाता है। निम्नलिखित संवादों को अलग-अलग ढंग से पढ़िए और अर्थ में आए अंतर को समझिए –

   (क) कलिंग दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं !
   कलिंग दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं ?
   हाँ महाराज ! कलिंग दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं ।

   (ख) मगध की विजय हुई है !
   मगध की विजय हुई है ?
   मगध की विजय हुई है।

   ध्यान दीजिए कि किसी वाक्य के अंत में केवल ये ही तीन चिह्न (विस्मयादिबोधक, प्रश्नसूचक और पूर्णविराम) आ सकते हैं ।

2. आप यह पहले पढ़ चुके हैं कि संयुक्त व्यंजन के रूप में आए पंचमाक्षर (ङ्,ञ्, ण्, न्, म्) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग होता है; जैसे –
गङ्गा = गंगा, मञ्जन = मंजन दण्ड = दंड, मन्द = मंद,
दम्भ = दंभ
यहाँ यह बताना आवश्यक है कि यदि दो पंचमाक्षर एक साथ संयुक्त हों तो पंचमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार नहीं आएगा अपितु दोनों को साथ लिखा जाएगा; जैसे – वाङ्मय, मृण्मय, सम्मान, अन्न, निम्न, जन्म ।
इसी प्रकार यदि य, व, ह से पहले पंचमाक्षर आता है तो वह भी अनुस्वार के रूप में नहीं बदलेगा बल्कि पंचमाक्षर ही संयुक्त होगा; जैसे – धन्य, अन्य, पुण्य, साम्य, कण्व, समन्वय,कन्हैया, तुम्हारा ।
जिन शब्दों में 'सम्' उपसर्ग आता है वहाँ 'म्' अनुस्वार के रूप में बदल जाता है; जैसे – संकल्प, संचार, संताप, संयम, संवाद, संहार, संन्यास ।
उपर्युक्त चार प्रकारों के अंतर्गत प्रत्येक पंचमाक्षर के दो-दो शब्द बनाइए ।

3. निम्नलिखित समस्तपदों के विग्रह पर ध्यान दीजिए –
जन्मभूमि = जन्म की भूमि (तत्पुरुष समास )
सुख-शांति = सुख और शांति (द्वंद्व समास)
निम्नलिखित समस्तपदों का विग्रह करते हुए समास का नाम भी बताइए –
आत्मसमर्पण, विजयलालसा, मगध-कलिंग, सेवाभाव, दया-करुणा

4. निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलिए –
**उदाहरण**–फाटक खुल गए => फाटक खोल दिए गए ।
(क) लाखों के सिर कट गए ।
(ख) शिविरों में दीपक जल गए ।
(ग) जंगल उजड़ गए ।

(घ) माताओं की गोद सूनी कर दी ।

5. निम्नलिखित संवाद को ध्यानपूर्वक पढ़िए –

दूवारपाल : (सिर झुकाकर) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है ।

अशोक : आने दो ।

संवाददाता : (प्रवेश कर) महाराज अशोक की जय हो । शुभ संवाद है । गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं !

अशोक : (प्रसन्नतापूर्वक) मारे गए हैं ! तो मगध की विजय हुई है ! कलिंग जीत लिया गया है !

(संवाददाता चुप रहता है।)

उपर्युक्त संवाद में कोष्ठक चिह्नों का चार बार प्रयोग हुआ है । एकांकी अथवा नाटक पाठ में कोष्ठक में दिए गए शब्द पढ़ने के लिए ही नहीं होते अपितु अभिनय के लिए रंगमंचीय निर्देश, अपेक्षित क्रियाकलाप, मनोभाव आदि को स्पष्ट करने के लिए दिए जाते हैं।

6. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ समझाते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए –
लोहा लेना, आँखें बंद कर लेना, माँग का सिंदूर पोंछना, पैर न रख सकना, खून की प्यास बुझाना ।

## योग्यता-विस्तार

1. अशोक का शस्त्र-त्याग एकांकी-पाठ है । एकांकी में पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं और उनके मनोभावों की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति में संवादों का विशेष महत्त्व होता है । प्रस्तुत पाठ में उन संवादों को छाँटिए, जिनसे अशोक और पद्मा की चरित्रगत विशेषताएँ और उनके मनोभाव उजागर होते हैं ।

2. प्रस्तुत एकांकी का कक्षाभिनय कीजिए ।
3. 'युद्धभूमि में सैनिक सैनिक होता है — स्त्री या पुरुष नहीं।' इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद कीजिए ।
4. इतिहास की पुस्तकों से ज्ञात कीजिए कि अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या कार्य किए?

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**शिविर** - सैनिक पड़ाव

**स्वतः** - अपने आप, स्वयं

**संवाददाता** - समाचार देने वाला

**गुप्तचर** - जासूस

**संचालन** - नेतृत्व, निर्देशन

**आत्म समर्पण** - हथियार डाल देना

**वीरांगना** - वीर स्त्री

**मंत्रमुग्ध** - वशीभूत

**वीर-भगिनी** - वीर बहन

**लोहा लेना** - मुकाबला करना

**द्वंद्व युद्ध** - दो व्यक्तियों में युद्ध,

**निरपराधी** - बेकसूर, निर्दोष

**गोद सूनी कर देना** - किसी के बच्चे की हत्या कर देना

**माँग का सिंदूर पोंछ देना** - किसी के पति को मार डालना

**पूर्णाहुति** - किसी कार्य की समाप्ति किसी कार्य का वह अंश जिससे वह पूर्णता को प्राप्त हो

**नत** - झुका हुआ

**अटल** - स्थिर, पक्का, जो न टले

**बोद्ध भिक्षु** - गौतम बुद्ध के अनुयायी, बौद्ध धर्म मानने वाले

**सदावर्त** - प्रसाद, दान, खैरात

**बुद्धं शरणं गच्छामि** - बुद्ध की शरण में जाता हूँ

**धर्मं शरणं गच्छामि** - धर्म की शरण में जाता हूँ

**संघं शरणं गच्छामि** - संघ (बौद्ध-संघ) की शरण में जाता हूँ

**पटाक्षेप** - परदा गिरना, समाप्ति

# 22. झाँसी की रानी की समाधि पर

(झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की अमर सेनानी रही हैं। कवयित्री ने उन्हीं की समाधि पर अपने स्नेह और श्रद्धा के पुष्प चढ़ाए हैं और समाधि में छिपी उनकी राख की ढेरी में भारत की आज़ादी की चिनगारी को देखा है।)

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी ।।

यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी ।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला-सी ।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी ।।

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से ।।

रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी ।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में
क्षुद्र जंतु ही गाते ।।

पर कवियों की अमर गिरा में
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है वीरों की बानी ।।

बुंदेले हरबोलों के मुख
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी
झाँसी वाली रानी ।।

यह समाधि, यह चिर समाधि
है झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ।।

*— सुभद्रा कुमारी चौहान*

## प्रश्न-अभ्यास

## बोध और सराहना

### (क) मौखिक

1. समाधि में छिपी राख की ढेरी किसकी है?
2. किस महान लक्ष्य की प्राप्ति के लिए रानी लक्ष्मीबाई जलकर राख की ढेरी बन गईं?
3. लक्ष्मीबाई को मर्दानी क्यों कहा गया है?
4. कवयित्री को रानी से भी अधिक रानी की समाधि क्यों प्रिय है?
5. बुंदेले हरबोले कौन हैं? कवयित्री ने इनके मुख से कौन-सी कहानी सुनी थी?

### (ख) लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ समझाइए –
   (क) यहीं कहीं पर बिखर गई वह भग्न विजय-माला-सी ।
   (ख) आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर चमक उठी ज्वाला-सी ।
2. 'सोने की भस्म सोने से भी अधिक मूल्यवती होती है ।' किस बात को स्पष्ट करने के लिए कवयित्री ने ऐसा कहा है?
3. कवयित्री ने रानी की समाधि को अन्य साधारण समाधियों से किस प्रकार भिन्न बताया है?

## योग्यता-विस्तार

1. निम्नलिखित पंक्तियों को कंठस्थ कीजिए। साथ ही इन पंक्तियों में निहित भावों

की 'झाँसी की रानी की समाधि पर' कविता के भाव से तुलना कीजिए।

(क) मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक ।

*(माखनलाल चतुर्वेदी)*

(ख) अपना शासन आप करो तुम, यही शांति है, सुख है,
पराधीनता से बढ़ जग में नहीं दूसरा दुख है ।

*(रामनरेश त्रिपाठी)*

2. 'झाँसी की रानी' कविता पढ़िए और रानी के साहस, वीरता, देशभक्ति और बलिदान की भावना पर टिप्पणी कीजिए ।

## शब्दार्थ और टिप्पणी

**समाधि** - चिता पर बनाया गया स्मारक

**दिव्य** - अलौकिक

**अंतिम लीलास्थली** - जहाँ अंतिम साँस ली

**भग्न विजय-माला** - विजय की माला, जो टूट गई

**आहुति** - यज्ञ या हवन में अग्नि को समर्पित करने वाली वस्तु का अर्पण, बलिदान

**ज्वाला** - अग्नि

**मूल्यवती** - कीमती

**निशीथ** - अर्ध रात्रि

**क्षुद्रजंतु** - छोटे जीव, साधारण लोग

**गिरा** - वाणी

**हरबोले** - बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं का यश गाती थीं।

# शब्द-कोश

इस शब्द-कोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द और दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है। अनेक स्थलों पर शब्दों के आगे कोष्ठक में संयुक्त शब्दों को अलग-अलग करके दिखाया गया है ताकि आप शब्द-निर्माण की विधि भी समझ सकें।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्द-कोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा, अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दभेदों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं –

पु. – पुल्लिंग
क्रि. – क्रिया
स्त्री. – स्त्रीलिंग
क्रि.वि.– क्रिया विशेषण
सर्व. – सर्वनाम
अ. – अव्यय
वि. – विशेषण
मु. – मुहावरा

इस शब्द-कोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्द-कोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा –

(1) जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके आरंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है ।

(2) शब्द-कोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् क से ह तक के सभी वर्ण क्रम के अनुसार।

(3) 'क्ष','त्र', 'ज्ञ' को ह के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। 'क्ष' 'क्' और 'ष' का संयुक्त रूप है। अतः इससे शुरू होने वाले शब्दों को 'क' से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर ढूँढ़ना चाहिए। 'क्व' से प्रारंभ होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर 'क्ष' से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।

(4) 'त्र' 'त्' और 'र' का संयुक्त रूप है। अतः 'त्र' से शुरू होने वाले शब्द 'त' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। 'त्य' से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब 'त्र' से आरंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।

(5) 'ज्ञ' 'ज्' और 'ञ' का संयुक्त रूप है। अतः 'ज्ञ' से शुरू होने वाले शब्दों को 'ज' से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। 'ज' से संयुक्त होकर बनने वाला पहला वर्ण 'ज्ञ' ही है। अतः 'जौहरी' के बाद ही 'ज्ञ' से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। 'ज्ञ' के बाद 'ज्य' से बनने वाले शब्द आते हैं।

(6) सभी वर्ण अनुस्वार एवं चंद्रबिंदु से ही शुरू होते हैं। उसके बाद वर्णक्रम शुरू होता है। इसलिए 'अंकुश', 'अंधा', 'अंश' आदि के बाद ही 'अकड़', 'अकाल' आदि शब्द आते हैं। अनुस्वार और अनुनासिक की प्राथमिकता इसी क्रम में सभी वर्णों के साथ स्वीकृत है।

(7) हर वर्ण में मात्राओं का वही क्रम रहता है जो स्वरों का होता है। मात्राओं से युक्त वर्णों के समाप्त हो जाने पर ही संयुक्त वर्ण शुरू होगा।

सामान्य शब्द-कोशों में मुहावरों को उनके पहले शब्द के अंतर्गत दिया जाता है। छात्रों की सुविधा की दृष्टि से हमने यहाँ मुहावरों को स्वतंत्र इकाई मान कर अलग पद के रूप में दिया है ताकि शब्द-कोश देखना बच्चों के लिए जटिल न हो जाए।

अ

**अँचरा** : (पु.), आँचल

**अँधवाह** : (पु.), बवंडर, बालक कृष्ण को मारने के लिए तृणावर्त नामक राक्षस आँधी-बवंडर बन कर आया था, जिससे ब्रजवासी भयभीत हो गए थे । कृष्ण ने उसका गला घोंट कर मार डाला था

**अकस्मात** : (अ.), अचानक, एकाएक

**अक्षर बोध** : (पु.), अक्षरों का ज्ञान

**अखंड** : (वि.), जिसके टुकड़े न हों, संपूर्ण

**अजब** : (वि.), विचित्र, अनोखा

**अटल** : (वि.), स्थिर, पक्का, जो न टले

**अद्‌वितीय** : (वि.), जिसके समान दूसरा न हो, बेजोड़

**अधीर** : (वि.), बेचैन, जिसमें धैर्य न हो

**अनर्थ** : (पु.), बुरा, हानिकारक

**अनुरक्ति** : (स्त्री.), प्रेम, अनुराग, प्रसन्न

**अनुरोध** : (पु.), आग्रह, प्रार्थना

**अनुसंधानकर्ता** : (पु.), शोध करने वाला, खोज करने वाला

**अन्वेषी** : (वि.), खोज करने वाला

**अन्हवायो** : (क्रि.), नहलाया, स्नान कराया

**अपाहिज** : (वि.), विकलांग

**अप्रत्याशित** : (वि.), आकस्मिक, जिसकी पहले आशा न रही हो

**अप्रेंटिस** : (पु.), किसी कारखाने या कार्यालय में काम सीखने या करने आया व्यक्ति, ऐसे व्यक्ति से तरह-तरह के काम कराए जाते हैं, नौसिखिया

**अभंग** : (वि.), अखंड, अटूट, लगातार

**अभद्रता** : (स्त्री.), अशिष्टता, असभ्यता

**अभिभूत होना** : (क्रि.), अधिक प्रभावित होना

**अभिलाष** : (पु.), अभिलाषा (इच्छा) का पुल्लिंग प्रयोग, चाह

**अमल** : (पु.), व्यवहार, आचरण

**अम्मामा** : (पु.), एक तरह का साफ़ा जिसे प्रायः मुसलमान बाँधते हैं

**अरहरी** : (स्त्री.), अरहर (एक प्रकार की दाल) का पौधा

**अर्पण** : (पु.), भेंट करना, आदरपूर्वक कुछ देना

**अलसी** : (स्त्री.), एक तेलहन, तीसी

**अलौकिक** : (वि.), लोकोत्तर, अद्‌भुत, असाधारण

**अवर्णनीय** : (वि.), जिसका वर्णन न हो सके

**अशिष्टता** : (स्त्रीं.), बदतमीज़ी, असभ्य व्यवहार

**असबाब** : (पु.), सामान, वस्तु

**अस्तबल** : (पु.), घुड़साल, घोड़ों को रखने की जगह

**अहाता** : (पु.), परिसर, चारों ओर से घिरी जगह, कैंपस

आ

**आँखें बंद कर लेना** : (मु.), मर जाना

**आँत** : (स्त्री.),पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदा मार्ग तक जाती है और जिससे मल या रद्दी पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाता है, अँतड़ी

**आइंदा** : (वि.), भविष्य में (अ.), फिर कभी

**आकांक्षा** : (स्त्री.), इच्छा, चाह

**आक्रोश** : (पु.), रोषपूर्ण भावना

**आग बबूला होना** : (मु.), क्रोध से भड़क उठना, गुस्से से भर जाना

**आग्रहपूर्वक** : (अ.), पूरी इच्छा से, अनुरोध के साथ

**आजानु-बाहु** : (वि.), घुटनों तक लंबी बाँहों वाला (महापुरुषों का एक लक्षण )

**आजीविका** : (स्त्री.), कमाई का साधन, रोज़ी-रोटी का साधन

**आतिथेय** : (पु.), मेज़बान, अतिथि का सत्कार करने वाला

**आत्म समर्पण** : (पु.), हथियार डाल देना, हार मान लेना

**आत्मिक** : (वि.), आत्मा संबंधी

**आत्मीयता** : (स्त्री.), अपनापन, स्नेह संबंध

**आपदा** : (स्त्री.), विपत्ति

**आ बैल मुझे मार** : (मु.), जानबूझ कर मुसीबत में पड़ना

**आभा** : (स्त्री.), चमक, योगदान, भागीदारी

**आयुर्वेद** : (पु.), भारतीय चिकित्साशास्त्र

**आरसी** : (पु.), दर्पण

**आर्यावर्त** : (पु.), प्राचीन भारत का मध्य देश, उत्तरी भारत का दक्षिणी भाग

**आशंका** : (स्त्री.), भय, खतरा, अनिष्ट की आशंका

**आशय** : (पु.), अर्थ, मायने, तात्पर्य
**आहत** : (वि.), दुखी, घायल
**आहुति** : (स्त्री.), यज्ञ या हवन में अग्नि को समर्पित की जाने वाली वस्तु

## इ

**इंडस्ट्रियल डायमंड** : (वि.), उद्योग-धंधों में प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का हीरा
**इंस्टीच्यूट** : (पु.), संस्थान
**इनकलाब** : (पु.), क्रांति

## उ

**उऋण** : (वि.), ऋण मुक्त, जो किसी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन कर चुका हो
**उचटना** : (क्रि.), मन का न लगना, अलग होना
**उजियारना** : (क्रि.), रोशन करना, प्रकाश दिखाना
**उजेरौ** : (पु.), उजाला
**उजड्डपन** : (पु.), गँवारपन, अभद्रता, उद्दंडता
**उथला** : (वि.), कम गहरा
**उन्माद** : (पु.), पागलपन, विक्षिप्तता
**उपकरण** : (पु.), औज़ार, यंत्र
**उबार लेना** : (क्रि.), बचा लेना
**उबाल** : (पु.), जोश, खौलने की चरम स्थिति

## ऊ

**ऊतक** : (पु.), जीवों या वनस्पतियों का वह सूक्ष्म अंश जो एक ही ढंग की कोशिकाओं से बना हो

## ए

**एकाग्रता** : (स्त्री.), अचंचलता, तल्लीनता
**एतराज़** : (पु.), आपत्ति
**एमामे** : दे. अम्मामा
**एहसास** : (पु.), अनुभव, ख्याल, ध्यान

## ऐ

**ऐब** : (पु.), बुराई, दोष

## ओ

**ओतप्रोत** : (वि.), परिपूर्ण, भरपूर

## क

**कँगला** : (वि.), कंगाल, निर्धन, दरिद्र
**कटुता** : (स्त्री.), कड़वाहट
**कणकाँ** : (स्त्री.), गेहूँ
**कफ़न** : (पु.), शव को ढकने वाला नया कपड़ा
**कर्कशता** : (पु.), वाणी की कठोरता
**कलरव** : (पु.), पक्षियों की सम्मिलित ध्वनि
**कलसी** : (स्त्री.), छोटा कलश, छोटा घड़ा, गगरी
**कहैहौं** : (क्रि.), कहूँगा

**काँच** : (पु.), शीशा

**काक** : (पु.), कौआ, काग

**काठ** : (पु.), लकड़ी, काष्ठ

**कान पकना** : (मु.), ऊब जाना, परेशान होना

**काया** : (स्त्री.), शरीर

**कारगर** : (वि.), असर करने वाला, सफल

**कीनो** : (क्रि.), किया

**कीर्ति** : (वि.), ख्याति, बड़ाई, यश

**कुटिल** : (वि.), व्यंग्य करने वाला, हँसी-मज़ाक करने वाला, दुष्ट

**कुरबानी** : (स्त्री.), बलिदान

**कुष्ठ** : (पु.), कोढ़

**कुसंस्कार** : (पु.), बुरे संस्कार, बुरी आदत

**कूप** : (पु.), कुआँ

**कृतज्ञता** : (स्त्री.), आभार, किए हुए उपकार को मानना

**क्या खाक जानते हो** : (मु.), कुछ नहीं जानते

**क्षय रोग** : (पु.), यक्ष्मा नामक रोग, तपेदिक, टी.बी.

**क्षुद्र** : (वि.), नीच, सामान्य

**खंदक** : (स्त्री.), खाई, गहरा गड्ढा

**खनैगौ** : (क्रि.), खोदेगा

**खरहरा** : (पु.), घोड़े के शरीर को साफ़ करने वाली लोहे की कंघी

**खलिहान** : (पु.), कटी फ़सल को इकट्ठा रखने का स्थान

**खाड़** : (पु.), खड्ढा

**खामखाह** : (वि.), खाहमखाह, अनावश्यक, व्यर्थ

**खुराफ़ात** : (स्त्री.), शरारत

**खूँखार** : (वि.), डरावना, भयंकर

**खून उतर आना** : (मु.), क्रोध आ जाना, जोश में आ जाना

**खून खौल उठना** : (मु.), अधिक क्रोधित होना

**खेमा** : (पु.), डेरा, तंबू

**ख्याति** : (स्त्री), यश, प्रसिद्धि

## ग

**गटकना** : (क्रि.), पीना, निगलना

**गद्गद** : (वि.), आनंदित, पुलकित, अत्यंत प्रसन्न

**गभरू** : (वि.), गबरू, हृष्ट-पुष्ट नौजवान

**गलतफ़हमी** : (स्त्री.), कुछ का कुछ समझना, गलत समझना

**गश खाना** : (मु.), बेहोश हो जाना

**गाढ़े** : (वि.), कठिन

**गिद्दा** : (स्त्री.), पंजाबी लोकनृत्य, जिसमें केवल लड़कियाँ ही भाग लेती हैं

**गिरा** : (स्त्री.), वाणी

**गिरिजन** : (पु.), पर्वतवासी, पहाड़ पर रहने वाले

**गुप्तचर** : (पु.), जासूस, छिपकर टोह लेने वाला

**गुहैहों** : (क्रि.), गुहाऊँगा

**गोद सूनी कर देना** : (मु.), किसी के बच्चे की मृत्यु हो जाना अथवा हत्या कर देना

**ग्रेजुएट** : (पु.), स्नातक, बी.ए. पास व्यक्ति

**ग्रेनाइट** : (पु.), एक प्रकार का कठोर पत्थर

### घ

**घुटुरुवनि** : (पु.), घुटनों के बल

### च

**चाप** : (स्त्री.), दबाव, पैरों की आहट

**चुग्गा** : (पु.), दाना, पक्षियों का भोजन, लुभाने वाली खाद्य सामग्री

### ज

**जनश्रुति** : (स्त्री.), लोक प्रचलित (बात)

**जनैहौं** : (क्रि.), बताऊँगा

**जन्मदात्री** : (स्त्री.), जन्म देने वाली, माता, माँ

**ज़ब्त खाना** : (मु.), सहन करना, बरदाश्त करना

**जागीर** : (स्त्री.), पुरस्कार स्वरूप दी गई संपत्ति

**जिस्म** : (पु.), शरीर, बदन

**जीवंत** : (वि.), जीता-जागता, प्राणवान

**जीवनदात्री** : (स्त्री.), जीवन देने वाली, माँ

**जीवाश्म** : (पु.),फॉसिल, प्रागैतिहासिक युग के पौधों तथा प्राणियों के अवशेष जो प्रायः चट्टानों में दबी हुई अवस्था में सुरक्षित रह गए

**जुगाड़** : (पु.), युक्ति, तरीका
**ज्वाला** : (स्त्री.), अग्नि

### झ

**झकोरा** : (क्रि.), झकझोर कर रख दिया, ज़ोर से हिलाया
**झेलना** : (क्रि.), सहन करना, बर्दाश्त करना

### ट

**टिकना** : (क्रि.), ठहरना, किसी चीज़ पर आधारित होना
**टीका-टिप्पणी** : (स्त्री.), आलोचना, नुक्ताचीनी
**टोटा** : (पु.), कमी, अभाव

### ढ

**ढकेला** : (क्रि), धक्का दिया, गिराया
**ढूह** : (पु.), मिट्टी का ढेर

### त

**तंत्र-मंत्र** : (पु.), जादू-टोना, उपाय, युक्ति
**तकनीक** : (स्त्री.), विधि, तरीका
**तकियाकलाम** : (पु.), बोलते समय किसी शब्द या वाक्यांश को बार-बार बोलने की आदत, सखुनतकिया

**तटवर्ती** : (पु.), किनारे बसे हुए

**तमगा** : (पु.), पदक, मेडल

**तर्जनी** : (स्त्री.), अँगूठे के पास की अंगुली

**तलहटी** : (स्त्री.), पानी के नीचे की ज़मीन

**ताड़ना** : (स्त्री.), दंड

**तिलावत** : (पु.), कुरान का पाठ, धर्मग्रंथ को पढ़ना

**तृण** : (पु.), तिनका

**तोतर** : (वि.), तोतली

**त्यागा** : (क्रि.), छोड़ा, त्याग दिया

**त्रुटि** : (स्त्री.), भूल-चूक, कमी, गलती

**त्वचा** : (स्त्री.), चमड़ी, खाल

## थ

**थिरकना** : (क्रि.), चंचलता के साथ पैरों को उठाते, गिराते एवं हिलाते हुए नाचना

## द

**दंपती** : (पु.), पति-पत्नी का जोड़ा, विवाहित युगल

**दम** : (पु.), साँस

**दमक** : (स्त्री.), चमक, द्युति

**दमदार** : (वि.), मज़बूत, ताकतवर

**दल** : (पु.), पत्ता, तुलसीदल

**दाग लगना** : (मु.), बदनामी होना, कलंक लगना

**दादुर** : (पु.), मेढक

**दिव्य** : (वि.), अलौकिक, दैवी, बहुत ही बढ़िया

**दीनबंधु** : (पु.), गरीबों के मित्र

**दीन-हीन** : (वि.), गया-गुज़रा, आत्मसम्मान रहित

**दीमक** : (स्त्री.), चींटी की तरह का एक कीड़ा जो लकड़ी, कागज़ आदि को चाट कर खोखला और नष्ट कर देता है

**दीवान** : (पु.), मंत्री, व्यवस्थापक

**दुर्भावना** : (स्त्री.), बुरे विचार, बुरी भावना

**दृष्टिकोण** : (पु.), सोचने का ढंग, विचार

**दृष्टि डालना** : (क्रि.), एक नज़र देखना

**देवनागरी** : (स्त्री.), हिंदी भाषा लिखने में प्रयुक्त लिपि

**द्वंद्व युद्ध** : (पु.), दो व्यक्तियों में युद्ध

**द्वै** : (वि.), दो

**द्वैक** : (वि.), दो-एक

## ध

**धर्मनिष्ठ** : (वि.), जो धर्म में आस्था रखता हो, जो धर्मानुकूल आचरण करता हो, धर्मपरायण

**धावा** : (पु.), हमला, आक्रमण

**धीवर** : (पु.), मल्लाह, केवट

**धूड** : (स्त्री.), धूल, सूखी मिट्टी के सूक्ष्म कण

**धूमकेतु** : (पु.), पुच्छल तारा

**धृष्टता** : (स्त्री.), उद्‌दंडता, ढिठाई, दुस्साहस

**नंगे सर झेलना** : (मु.), बिना किसी सुरक्षा के बलिदान के लिए तैयार रहना

**नत** : (वि.), झुका हुआ

**नसीब** : (पु.), भाग्य, प्रारब्ध

**नाइंसाफ़ी** : (स्त्री.), अन्याय, बेईमानी

**नाईं** : (अ.), की तरह, के सदृश

**नाद-विज्ञान** : (पु.), ध्वनि विज्ञान

**नाना प्रकार** : (वि.), तरह-तरह के

**नास्तिक** : (पु.), जिसको ईश्वर में विश्वास न हो, आस्तिक का उलटा

**निःसंगभाव** : (पु.), बिना लगाव के, तटस्थ भाव

**निकुंज** : (पु.), सघन वृक्षों और लताओं से आवृत स्थान

**नितांत** : (वि.), बिलकुल, पूरी तरह

**नियमित** : (वि.), नियमबद्‌ध, नियम के अनुसार, निश्चित

**निरधार** : (वि.), निर्धारित

**निरपराधी** : (वि.), बेकसूर, निर्दोष

**निर्जन** : (वि.), सुनसान, जहाँ कोई न हो

**निर्द्वंद्व** : (वि.), स्वच्छंद

**निर्मम** : (वि.), हृदयहीन, कठोर, ज़ालिम

**निशीथ** : (स्त्री.), अर्ध रात्रि

**निस्संतान** : (वि.), (निः + संतान), जिसके संतान न हो, संतान रहित

**निहित** : (वि.), छिपा हुआ

**नुक्ताचीनी** : (स्त्री.), आलोचना, दोष निकालना

**नेकनामी** : (स्त्री.), अच्छाई, यश

**नोबेल पुरस्कार** : (पु.), अल्फ्रेड नोबेल द्वारा विश्वशांति की स्थापना के प्रयत्नों को बढ़ाने के लिए स्थापित संस्था द्वारा प्रतिवर्ष भौतिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, रसायन शास्त्र, साहित्य, अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय शांति और मानव सेवा– क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार

प

**पंथ** : (पु.), रास्ता

**पग** : (पु.), पैर

**पठवति** : (क्रि.), भेजती हूँ

**पताका** : (स्त्री.), झंडा, ध्वज

**पदच्युत होना** : (क्रि.), अपने पद या स्थान से हटना

**पदधूलि** : (स्त्री.), चरणों की धूल

**पय-पान** : (पु.), दुग्ध-पान

**परवश** : (वि.), पराधीन, पराश्रित

**परवाना** : (पु.), फ़रमान, आज्ञा-पत्र

**परिपक्व** : (वि.), प्रौढ़, पूर्णतया कुशल

**परिव्राजक** : (पु.), संन्यासी

**परोपकार** : (पु.), दूसरों की भलाई, दूसरों का हित

**पहरुए** : (पु.), पहरेदार, प्रहरी

**पाँवों का मन-मन भर का होना** : (मु.), मन दुखी होने के कारण चलने में कठिनाई का अनुभव होना

**पाँवों की चाप** : (स्त्री.), पैरों की आवाज़, पैरों की आहट

**पाइ** : (पु.), पाँव, पैर

**पारदर्शी** : (वि.), जिसके आर-पार देखा जा सके

**पावस** : (पु.), वर्षा ऋतु

**पिक** : (पु.), कोयल

**पिराई** : (क्रि.), दर्द करने लगना

**पुरज़ोर** : (वि.), पूरी तरह, ज़ोरदार

पूर्णाहुति : (स्त्री.), समापन, यज्ञ या किसी अन्य कार्य की समाप्ति के समय किया जाने वाला अंतिम कार्य, बलिदान

**पूर्वापर** : (वि.), पहले और बाद का

**पैंतरा फेंकना** : (मु.), कुश्ती आदि में प्रतिद्वंद्वियों का भिड़ने या वार करने के पहले एक दूसरे से बचने का प्रयास, नई चाल चलना

**पैठना** : (क्रि.), घुसना, प्रवेश करना

**पोहिए** : (क्रि.), पिरोइए

**प्रतिकूल** : (वि.), विरोधी

**प्रतिध्वनि** : (स्त्री.), टकराकर लौटी हुई ध्वनि, गूँज

**प्रतिरूप** : (पु.), नमूना

**प्रपात बाहुल्या** : (स्त्री.), झरनों की अधिकता वाली

**प्रमाणपत्र** : (पु.), सनद, सर्टिफ़िकेट

**प्रयोजन** : (पु.), उद्देश्य

**प्रवर्तक** : (पु.), आरंभ करने वाला, आविष्कार करने वाला

**प्रशिक्षण** : (पु.), ट्रेनिंग, किसी विशेष कार्य, व्यवसाय के लिए व्यावहारिक ज्ञान एवं आवश्यक कौशल प्राप्त करना

**प्रागैतिहासिक** : (वि.), लिखित इतिहास से पहले का, बहुत प्राचीन

**प्रेरणा** : (स्त्री.), किसी को किसी कार्य में लगाने की क्रिया या भाव

**प्रोत्साहन** : (पु.), उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना

**फ़रेब** : (पु.), छल, कपट

**फाल** : (पु.), खेत जोतने के लिए हल में लगा लोहे का तीक्ष्ण उपकरण

**फूल** : (पु.), जलाए गए शव की राख, चिता की राख

**बंग-भंग** : (पु.), 1905 ई. में अंग्रेज़ों ने बंगाल का विभाजन कर दिया, जिसके विरोध में बंगाल की जनता ने आंदोलन शुरू कर दिया। यह आंदोलन बंगाल तक सीमित न रहकर पूरे भारत में फैल गया। अंततः अंग्रेज़ी शासन को इस निर्णय को वापस लेना पड़ा

**बग्घी** : (स्त्री.), चार पहियों की घोड़ागाड़ी

**बर्ताव** : (पु.), व्यवहार

**बलदाउहिं** : (पु.), बलराम से

**बवासीर** : (स्त्री.), एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं

**बाँका** : (वि.), अनोखा एवं सुंदर, छैल-छबीला

**बाग** : (स्त्री.), लगाम, रास

**बावली** : (स्त्री.), पगली, विक्षिप्त

**बुंदेले** : (पु.), बुंदेलखंड में रहने वाले राजपूत विशेष

**बुहारना** : (क्रि.), साफ़ करना, झाड़ू लगाना

**बेदम हो जाना** : (मु.), बहुत थक जाना

**बेनी** : (स्त्री.), चोटी, वेणी

**बोध** : (पु.), ज्ञान, जानकारी

भ

**भँगड़ा** : (पु.), बड़े ढोल की ताल पर होने वाला एक पंजाबी लोक नृत्य

**भगंदर** : (पु.), एक प्रकार का फोड़ा जो गुदा (मलद्वार) के किनारे होता है

**भगिनी** : (स्त्री.), बहन

**भगीरथ** : (पु.), अयोध्या के एक सूर्यवंशी राजा, जो अपने घोर तप के बल पर गंगा को धरती पर लाए थे और जिन्होंने कपिल मुनि के शाप से भस्म हुए अपने पुरखों का उद्धार किया था

**भग्न** : (वि.), टूटी हुई

**भयावह** : (वि.), भयानक

**भौचक्का** : (वि.), हैरान, हक्का-बक्का

**भ्रांति** : (स्त्री.), भ्रम, संदेह

म

**मंगलमयी** : (वि.), कल्याण करने वाली

**मंत्रमुग्ध** : (वि.), वशीभूत, वश में किया हुआ

**मंथर** : (वि.), धीमी

**मंदाग्नि** : (स्त्री.), पेट का एक रोग, हाज़मे का बिगड़ जाना

**मद** : (पु.), नशा

**मद्धिम** : (वि.), हलका, मंद

**मधुमेह** : (पु.), एक रोग जिसमें रक्त में शक्कर की मात्रा अधिक हो जाती है, प्रमेह

**मन में फूले नहीं समाना** : (मु.), अधिक प्रसन्न होना

**मनोरम** : (वि.), मन को लुभानेवाला, सुंदर

**मरसिया** : (पु.), किसी मृत व्यक्ति की याद में लिखा हुआ शोक गीत

**मर्मस्पर्शी** : (वि.), हृदय को छूने वाली (बात)

**मर्सिया** : (पु.), दे. मरसिया

**मशक** : (स्त्री.),मश्क, भेड़ या बकरी की खाल को सीकर बनाया हुआ थैला, जिसे पानी लाने और ढोने के लिए प्रयोग किया जाता है

**मशरूम** : (पु.), कुकुरमुत्ता

**मस्तमौला** : (वि.), सदा प्रसन्न रहने वाला, आज़ाद तबियत का

**महर्षि** : (पु.), श्रेष्ठ ऋषि, बहुत बड़ा ऋषि

**महानतम** : (वि.), सबसे बड़ा, श्रेष्ठ

**महुआ** : (पु.), बड़े आकार का एक पेड़ जिसके फल, फूल, बीज काम आते हैं

**माँग का सिंदूर पोंछना** : (मु.), विधवा बना देना

**माई का लाल** : (मु.), बहादुर बेटा

**मातृत्व** : (पु.), माँ का प्रेम, माँ होने का भाव

**मात्र** : (वि.), केवल

**मान** : (पु.), सम्मान, इज़्ज़त

**मिट्टी में मिलना** : (मु.), खतम हो जाना

**मिसाल** : (स्त्री), उदाहरण

**मीठी चुटकियाँ लेना** : (मु.), हँसी-हँसी में व्यंग्य करना

**मुँह काला होना** : (मु.), बदनामी होना

**मुँह पर कालिख पोतना** : (मु.), अपमानित करना

**मुक्ताहार** : (पु.), मोतियों की माला

**मुक्ति** : (स्त्री), आज़ादी, स्वतंत्रता

**मुसाफ़िर** : (पु.), सफ़र करने वाला, घूमने वाला, यात्री

**मुहाना** : (पु.), नदी के समुद्र में जा मिलने का स्थान

**मूलहिं** : (पु.), जड़ को ही

**मूल्यवती** : (वि.), कीमती

**मृदुल** : (वि.), कोमल, मधुर

**मेडल** : (पु.), तमगा

**मोक्ष** : (पु.), जीव की जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति

**मोटा** : (वि.), पर्याप्त, अधिक

**मौलवी** : (पु.), इस्लामी धर्मशास्त्र का पंडित, अरबी-भाषा का पंडित

य

**यंत्र** : (पु.), मशीन

**यथा** : (अ.), जैसे

**यथोचित** : (वि.), (यथा + उचित) जितना उचित हो

**रक्त** : (पु.), लाल
**रक्तिम** : (वि.), लालिमा युक्त, लाल
**रण** : (पु.), युद्ध
**रणवीर** : (पु.), युद्धवीर, योद्धा
**ररै** : (क्रि.), पुकारेगा
**रवानी** : (स्त्री.), प्रवाह, बहाव
**रिसाइ** : (क्रि.), गुस्सा होकर
**रुग्ण** : (वि.), बीमार, अस्वस्थ
**रूपांतरण** : (पु.), एक रूप से दूसरे रूप में बदलना
**रोज़ेदार** : (वि.), रोज़ा रखने वाला

**लखनऊ कांग्रेस** : (स्त्री.), लखनऊ में हुआ अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन
**लट्टू होना** : (मु.), बहुत मुग्ध होना
**लट्ठ मारना** : (मु.), अभद्र, कटु वाणी में बोलना, कर्कश शब्द बोलना
**लपेटना** : (क्रि.), फँसाने की कोशिश करना
**लरिका** : (पु.), लड़का
**लहलहाना** : (क्रि.), हरा-भरा होना
**लीला स्थली** : (स्त्री.), कर्मभूमि
**लैहों** : (क्रि.), लूँगा

**लोहा लेना** : (मु.), लड़ना, मुकाबला करना

व

**वकालतनामा** : (पु.), अदालत में पैरवी करने का अधिकार पत्र

**वक्ता** : (वि.), बोलने वाला, भाषण देने वाला

**वरदहस्त** : (पु.), वर देने वाला हाथ, संरक्षक, वरिष्ठ अधिकारी

**वर्जित** : (वि.), निषिद्ध, मना

**वर्ण** : (पु.), रंग

**वार** : (पु.), आघात, आक्रमण

**विकृत** : (वि.), विकार युक्त, बिगड़ा हुआ, कुरूप

**विक्षिप्त** : (वि.), पागल, जिसका दिमाग ठीक न हो

**विचलित** : (वि.), अस्थिर, डिगा हुआ, चंचल

**विदुषी** : (वि.), विद्वान स्त्री

**विरक्ति** : (स्त्री.), अनासक्ति, उदासीनता

**विलक्षण** : (वि.), अद्भुत

**विशद** : ( वि.), साफ़, स्वच्छ, स्पष्ट

**विस्फारित** : (वि.), आश्चर्यपूर्ण, विस्मयपूर्ण

**वीरांगना** : (स्त्री.), वीर स्त्री

**वैचारिक** : (वि.), विचारों की, विचार संबंधी

**वैदिक काल** : (वि.), वह युग जब वेदों की रचना हुई

**वैराग्य** : (पु.), सांसारिक कामों और सुख भोगों से होने वाली विरक्ति

**वैष्णव** : (वि.), विष्णु को पूजने वाला, विष्णु की उपासना करने वाला

**व्यर्थता** : (स्त्री.), निरर्थकता, अनुपयोगिता

### श

**शल्य-चिकित्सा** : (स्त्री.), शरीर की चीर-फाड़ द्वारा इलाज
**शहतीर** : (पु.), लकड़ी का लम्बा लट्ठा
**शिविर** : (पु.), छावनी, सैनिक पड़ाव
**शिशु-सुलभ** : (अ.), बच्चों जैसा सरल
**शिष्टाचार** : (पु.), सभ्य व्यवहार, अच्छा आचरण
**शैव** : (वि.), शिव की आराधना करने वाला
**शोणित** : (पु.), रक्त
**श्यामल** : (वि.), काला, साँवला
**श्रेय** : (पु.), यश, पुण्य, कल्याणकारी
**श्रेष्ठी** : (पु.), सेठ, व्यापारियों का प्रधान, बहुत धनी व्यक्ति

### ष

**षड्यंत्र** : (पु.), साजिश

### स

**संकल्प** : (पु.), दृढ़ निश्चय
**संग्रहालय** : (पु.), अजायबघर, वह स्थान जहाँ विशेष प्रकार की वस्तुओं का संग्रह किया गया हो, म्यूज़ियम
**संग्राम** : (पु.), युद्ध
**संचालन** : (पु.), नेतृत्व, निर्देशन

**संचित** : (वि.), जमा किया हुआ

**संवाददाता** : (पु.), समाचार लाने वाला

**सँवारना** : (क्रि.), वर्तमान स्थिति से बेहतर बनाना, सजाना

**संस्कृति** : (स्त्री.), धर्म, आचार-विचार, रहन-सहन

**सकल** : (वि.), समस्त

**सक्षम** : (वि.), समर्थ, प्रभावी, क्षमता वाला

**सदावर्त** : (पु.), दीन-दुखियों को मुफ़्त भोजन देना, प्रसाद, दान

**सनक** : (स्त्री.), धुन, पागलपन, दीवानगी

**सनद** : (स्त्री.), प्रमाण पत्र, उपाधि, डिग्री

**सन्नद्ध** : (वि.), हर समय तत्पर

**समर्पण करना** : (पु.), भेंट चढ़ाना, भेंट करना

**समाधि** : (स्त्री.), चिता पर बना स्मारक, साधु-संन्यासियों के शवों को गाड़ने का स्थान, तपस्या

**सरना** : (क्रि.), पूरा होना, हल होना

**सरासर** : (अ.), पूर्णतः

**सर्वमान्य** : (वि.), सभी के मानने योग्य

**सर्वोच्च** : (वि.), सबसे बड़ा, सर्वोपरि

**सवा सोलह आने सही** : (मु.), शत प्रतिशत ठीक, पूरी तरह ठीक

**सहस्त्र** : (वि.), एक हज़ार

**सांत्वना** : (स्त्री.), तसल्ली, दुखी व्यक्ति के दुख को कम करने के लिए समझाना-बुझाना

**सांध्य** : (वि.), शाम का

**साक्षात** : (अ.), सामने, प्रत्यक्ष

**साग** : (पु.), सब्ज़ी के रूप में खाई जाने वाली पत्तियाँ

**सात्विक** : (वि.), सत्वगुण वाला, नेक, सादा

**साम्य** : (पु.), समानता, समान होने का भाव

**सिगरे** : (वि.), सब, समस्त

**सिद्धि** : (स्त्री.),योग साधना के अलौकिक फल, योग की आठ सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व)

**सिरफिरा** : (वि.), जिसका दिमाग बिगड़ गया हो, पागल

**सीने में दिल न समाना** : (मु.), अति उत्साहित होना

**सीमेंट का काम** : (मु.), जोड़ने का काम, मिलाने का काम

**सुजन** : (वि.), सज्जन, मित्र

**सुजला-सुफला** : (स्त्री.), अधिक जल और फल वाली, धनधान्यपूर्ण

**सुरभी** : (स्त्री.), गाय

**सुवासित** : (वि.), सुगंधित

**सृजन** : (पु.), रचना, निर्माण

**सेवाग्राम** : (पु.), वर्धा में बना गांधी जी का आश्रम

**स्निग्ध** : (वि.), प्यार भरी, स्नेहिल

**स्त्रष्टा** : (पु.), सृष्टि को रचनेवाला, सृजन करने वाला

**स्वतः** : (अ.), स्वयं, अपने आप

**स्वर्णिम** : (वि.), (स्वर्ण + इम), सुनहला, सोने का

**हठात** : (अ.), सहसा, अचानक

**हतोत्साह** : (वि.), निरुत्साह

**हरकत** : (स्त्री.), गति, चाल, चेष्टा

**हरबोले** : (पु.), घूम-घूम कर राजाओं की कीर्ति का बखान करने वाले मध्य प्रदेश के चारण

**हरसूँ** : (क्रि.वि.), भरसक, हर तरह से, पूरी ताकत से

**हरित वसना** : (वि.), हरी-भरी

**हिंस्त्र** : (वि.), खूँखार, खतरनाक

**हुंकार** : (पु.), ललकार, गर्जना

**हृदय पर साँप लोटना** : (मु.), ईर्ष्या होना, बेचैन होना

**ह्वैहौं** : (क्रि.), हूँगा